PAGE(S)MISSING

NOT AVAILBLE

1 !

कहीइ । मा हरउ नमस्कार हउ । अरिहंत चंद्रमंडलनी परिइं श्वेतवर्ण ध्याइइं । एतलइं एप
द तथा एक पद संपद हुइं । जेतलइ अर्थ समाप्ति नउ अधिकार हुइ तेतलइ संपद जाणि
वी । उच्छ्वास पवीजउ अनामा । तिहां वीसामउ लीजइ । इम सर्व ठाम जाणिवउं । इत्र नमो सिद्धाणं न
मः सिद्धेभ्यः सिद्ध हो आठ कर्म निर्मुक्त हुआ इं अनंत सौख्यमय मोक्षि पुहता । सिद्ध सिला
ऊपरि जे प्रधान इं उगवी समइं तागिच चैइ । तिहं श्री सिद्ध हुइं । नमो नमस्कार ह
उ । २ । श्री सिद्ध उगता सूर्यनी परिइं रक्तवर्ण ध्याइइं । एतलइं बि पद बि संपद हु
इ । नमो आयरियाणं । नमो आचार्येभ्यः । आचार्य जे ज्ञानाचारादिक पंचविध आचार आ
पणपि पालइं । अनेरा नइं पलावइं । शिष्य नइं हि दशांगी नउ अर्थ कहइ । ते श्री आचार्य हुइं
नमो नमस्कार हउ । ३ । आचार्य सुवर्णवर्ण ध्याइइं । एतलइं त्रि पद त्रि संपद हुइं । नमो उवज्झायाणं । न
मो उपाध्यायेभ्यः । उपाध्याय जे द्वादशांगी नउ सूत्र मुखपाठ गुणइं । शिष्य हुइं पढावइं । ते श्री उपा
ध्याय हुइं नमो नमस्कार हुउ । ४ । उपाध्याय मरकत मणिनी परिइं नीलवर्ण ध्याइइं । एतलइं ४ पद संप

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

दकहइ। नमो लोए सव्वसाहूणं। नमो लोके सर्वसाधुभ्यः। लोके मनुष्यलोकमाहि। जे सर्वसाधु
मोक्षमार्गसाधक। जिनकल्पी प्रमुख घणा ते दे कर्षी स्थविर छइ। ते सविहुं हुइं नमो नमस्कार हु
उ। महात्मा आसाढ नामे घनी परिइं रूपा मचक्षो ध्याई इ। एतलइं ५ पद ५ पांच संपद कहइं। एत
इं पांत्रीसे अक्षरे। श्री नवकार मूलमंत्र कहइ १इं। हिवइं आगलि चिहुं पद नी चूलि
कामाहि। एह मूलमंत्र नउ प्रतावक ह इ छइ। एसो पंच नमुक्कारो सव्वपावप्प
णासणो। एष पंचनमस्कारः सर्वपापप्र णाशनः। ए पांचइं परमेष्ठिनउ नमस्का
र तेकि सउ छइ। सव्वपावप्प। सर्वपापतणउ नफे डणहार प्रणास। एतलइं छइ। अनइ
सातमउ। चिहुं पद हूआ। छट्ठी अनइ सातमी त वा मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं
मंगलानां च सर्वेषां प्रथमं भवति मंगलं सर्व मंगलीक जे लौकीक दधि दूर्वा अनइ चंदनादिक
लोकोत्तर तप नियम संयमादिक। ते सविहुं मंगलीक माहि पढम प्रथम मंगल कहीइ। पहिलउ उत्कृ
ष्टउं मंगलीक। ए श्री नवकार कहीइ। एतलइं आठमउ अनइ नवमउ बिपद हूआ। बिहुं पदे 2

करी संपद एक हुइ जि आठमी कहइ। एह चूलिका माहि हवइं नवमइ स्थानकि होइ। इसिउं कहतां केतला
इं बत्रीस जि अक्षर मानइं। पणि मूलि तेत्रीस अक्षर छइं॥ यत उक्तं॥ श्री महानिशीथ सिद्धांते॥ तदे
व इक्कार पयपरिछिन्न ति आलावग। तित्तीस अक्खर परमाणं। एसो पंच नमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं। इति चूल नेवणवक मेत्तं छ अत्तमइ द्दिण सु आयंबि
लेहिं अहिज्जिज्जा। एवं च नमो अरिहंताणं [illegible] पंच। परमिट्ठि मंते पय [illegible] संपया कमसो। पञ्च
नमस्कार। परिमाणा अट्ठमी तणिया। गाथा ८ अट्ठ पिहवइ अनइ होइ कहतां अर्थ
नउ बिलेद कोई उ एनही। तथापि हवइं इसि। उ जिका हिवइं। जे हसणी नमस्कारावे
लिका ग्रथमा हि कहि उ छइ। जि चारइं कार्य चिंते। सिझ पनइ चूलिका तणउ ध्यान करीइ। तिथा
रइं बत्रीस जि अक्षर पढइ। बत्रीसे अक्षरे बत्रीस पांखुडी इ जि पूराइ। मध्य कर्णिका [illegible] जिर
हइ। इत्यादि श्री सिद्धान्त युक्ति छइं। मध्यस्थ पणइं विचारिवउ। एवं श्री नवकार महामंत्र ए पद ९ सं
पद ८ अक्षर ते हमाहि ७ सारे ह लघु अक्षर जे बि अक्षर एकठा मिल्या हुइं ते सारी कहीइ। जे एके कल
उ अक्षर ते लघु ह ल्हुचा इ म सर्वे जाणिवउ। एह श्री नवकार महामाहि काहिं नुं छइ। नवकार स्त्र

अक्खर। पावं फेडइं सत्त अयराणं। पन्नासं च पएणं। सागर पणसय समग्गे। २ जो गुणइ लक्खमेगं पू
एइ विहीइ जिण नमुक्कारं तित्थयर नामगोत्रं सो बंधइ नत्थि संदेहो। १ अट्ठेव अट्ठसया अट्ठस
हस्स अट्ठ लक्ख अट्ठ कोडीओ। सो गुणइ भत्तिजुत्तो सो पावइ सासयं ठाणं ३ १ श्री नवकारना व
महिमा विधिइं जपतां श्रीगुरु दत्त आम्नाय अनइ आस्थान इ चित्त थिर करी इहलोकि अनइ
परलोकि सकल वांछित फल सीझइं इहलोकि। तां देवता सान्निध्य करइं जिम श्रावकनी पु
त्रिका कुंडकोधनं। अत्र कथा॥ श्री॥ ॥ भरतक्षेत्रि पोतनपुर नगर तिहां सुगुप्त नामइं
व्यवहारीउ श्रावक तेहनइं श्रीमती नामिइं। बेटी धर्मवंति छइ। एकवार को एक
मिथ्यात्वी श्रेष्ठिनउ बेटउ श्रीमतीनउं रूप देषी। व्यामोहिउ परिणवा वांछइ। पिताकन्हि
मगावइ पिता मिथ्यात्वीनइ न दिइ नही। पछइ कपट श्रावक थई श्रीमतीनउ पाणिग्रहण
कीधउं। आपणइ घरि लेई गयउ। तेहनउ कुटुंब सहु मिथ्यात्वी छइ। श्रीमती घरना सवि काज
काम करइ। गुणपक मिथ्यात्व क्रिमइं न करइं जिनधर्म करइ नान्हणी सासू नणंद ते ऊपरि पग
पगि रीस करइ। पेली आपणा कर्मनि जि कहइं दोस दिइ। किमइ धर्मथकी चूकइ नही। नरतार श्रीमती २
ऊपरि द्वेषवइ। तउ तेहनइ कहइं विणासीनइ बीजी स्त्री परिणवा वांछइ। एकवार तीणइं
कालिउ वरुण सर्प घडा माहि घाती ढांकी घरमाहि मूंकिउ। अवसरि वासभवनमाहि श्री
याइं चइढत श्रीमतीनइ कहइ। आ घडा माहि अमुक स्थान किउ घडा माहि फूल मूंक्या
छइं ते आणि। पेली स्त्री महाविनीत नवकार ल तिहां गई नवकार जपती जि ढांकणूं ऊघा
डी घडा माहि हाथ घातिउ। नवकारनइं प्र भाविइं तत्र शासनदेवताइं सर्प फेडी सुगंध
फूलनी माल कीधी। श्रीमतीइं ते फूल आ णी भरतारनइं आप्या। पेलउ विस्मय किउ। प
छि मिउ तउ जि तिहां जई ते घडउ जोई इ छइ षइ त माहि सा पन थी अनइ घडउ परिम
लि महमहइ छइ। पछइ जाणिउं पदइ कहइ दे वता साहाय्य करइ। इस अतागी जे जोपइ र
हइ पाऊसउं वी न चउ पछइ स्वजन वर्ग मेली तेह आगलि आपणउ वृत्तांत कही श्रीमतीइ
स्वभाव खे तेहना गुण ऊपरि अनुराग धरइ। एकवार अवसर देषी श्रीमती भरतारनइं जिनधर्मना
मर्म कहइ कर्म विवरनइ योगिइं प्रतिबोध लागउ महामज्ञा जैन श्रावक हूउ। यावज्जीव धर्म पा

लीसुगतिइं पहुंतउं कथा॥२॥ वली नउकारनइं प्रसादिइं अनेक संकट टलइं। लक्ष्मीनी
प्राप्ति हुइ। जिम श्रावकना बेटा हुई हूई। अथ कथा॥ श्री ॥रत्नपुर नगर यशोभद्र श्रेष्ठि श्रा
वक। तेहनउ बेटउ शिवकुमार महाव्यसनीउ। पिताइं घणउं ईं सीषवी जोउं धर्म किमइं न
करइ। पिताइं श्रावकालि मानमागी कहिउं। वछ पत्तलउं करिजे जिवारइं तुम्हइं गाढउं
संकट आवइ तिवारइं एनउकार स्मरिजे पे लइं दारिद्रपण गइ मानिउं। पिता दिवंगत
हूउ शिवकुमारिइं सात इव्यसन पोषतइं हूंतइं लक्ष्मी सघली नीगमी निर्द्धनपणी
किहांई मान महत्त्व न लहइ। एकवार तेहू इं त्रिदंडीउ मिलिउ तेह आगलि प्रीतिलग
इ निर्द्धनपणानउ विषाद प्रकाशिउ। त्रिदंडीउं कहइ उत्तमा हरउं कहिउं करइ तउ तूं हुंइ
धनदसमान करउं। पछइ शिवकुमार पाहिइं एक मृतक अणावी कालीचउदसनी रात्रिइं
मसाणनी भूमिकाइं गिउ मंडल मांडिउ मृतकहाथि कुं घाडउं खडग आली शिवकुमारहइं
कहिउं। तूं एहना पग मांजलां उह लां सि आपणपइं मंत्र जाप हामकरइ छइ तिसिइं शिवकु ४

मार संकटि पडिउ चीतवइ अरेसहीई एणइं मायावीइं त्रिदंडीइं एसघलउं मरुमारिवानउं उ
पाय मांडिउ मृतकहूं वानइ सहीमरुं नइं खड्गिकरी आहणिसिइं तउ हिव किसउं करउ
इहां घकउ हवडां नासाइं नहीं इम करतां पितानउं वचन सांभरिउं एकाग्र हुई नउकार उपि
वा लागउ त्रिदंडीआ नामंत्रनइं बलिइं करी तेमृतकलगार्ड कसलसलीनइं ऊचिवा लागउ
वली पाछउं पडिउं। त्रिदंडीउ चिंतवइ। सहीकांई माहरा जापमाहि दोदलउं हूउं। व
ली विशेषिइं एकाग्रपणइं करवा लागउ। मृतक ऊची बीजी इवार वली तिमजि पा
छउ पडिउं। तिवारइं त्रिदंडीउ चकिउ। शिवकुं पूछइं। कांई मंत्र तूं जाणइं आवडइ शि
वकहइ इना घणि दिआमाहि नउकार तउं महिमा जाणिउं। पछइ त्रिदंडीउ मंत्र जनइ शिवकुमार
वेहू जणा वली आपणउ मंत्रस्मरवा लागा। वेतालनउ अधिष्ठितुं मृतक ऊठिउ। शिवकुंइ नउका
रनइं प्रसादिइं कारी पछी सकइं नहीं। पछइ रीसाचिइं मृतक कि ऊपाडी त्रिदंडीआनउं मस्तक खड्गि
करी छेदिउं। मंत्रनइं महिमाइं करी तत्काल त्रिदंडीउ फीटी सोनानउ पुरिसउ शिवकुमारि आ
पण पुरुषरि आणिउं। लक्ष्मी अखूट हुई। दीहइं पुरसानउं मस्तक नइ कोंगटाली बीजउ सघलाः

आंगोपांग नउ सोनउं कांपा। वावरिउ रात्रिइं वली दिवा नता विइंति स्पा जिणइ घोडेइ जि
हि हाडे। प्रौढ श्रीवंत व्यवहारीउ थिउ। अनुक्रमिइं गुरुनइं योगिइं धर्मनां मर्म जाणी। श्राव
कव्रत उ सुवर्णमय प्रासाद कराविउ मांहि मणिमय प्रतिमा मंडावी। धर्म पाली सुगति पहुतउ
उ॥ कथा॥१॥ श्री॥२॥ वली श्रीनवकारनइं स्मरण थिइं मरणांत संकटइं श्रावक ऊगरीउ। जि
नदास श्रावक वृत्तउ॥ अथ कथा॥ क्षि। ति प्रतिष्ठित नगर बलराजा एकवार नव इ मे
घ वूठइ नदी पूरि आवी लोक जोवा गया। पा णी मांहि तरतउ एक मोटउ पाकउं बीजपूर
कदी हउ। तलारिइं मांहि पइसी लीधउं रा जा नइं आपिउ सुगंध मधुर सरस ते बीज
पूर आस्वादिउं। हर्षित राजा पूछइ ए किहां लाधउं। तलार कहइ स्वामी नदी पूरमाहि
तरतउ आविउ। राजा कहइ नदीनइं तडि इं ज उ एहनउं मूल जोवउ। कहि किम वाडी थि कउ
आवीउं। पेलां जोता २ तिहां घणी कदलगइ गिया दीठी वाडी। पइसवा लागा। तिम इहू कडे लो
क कहिउं। अहो इहं म पइसउ जि कोई इहनउ फल फूल लिइ ते तिहां गमइ जिमरइ। पेला पाग ज
ई राजा नइं कहइ। राजा रस लंपट थिकउ कहइ जाउ तउ नगरमाहि सर्वमनुष्यना वारा करउ रा ५

यना आदेस तणी तलारि सर्वनगर लोकनां नाम चीरी लिखी एक घडामांहि घाली प्रतिदिन मारि
कापा हिइं चीरी कढावीइं जेहनी चीरी नीकलइ ते जीवतव्य निरास थई धूजतउ कांपतउ
तीणइं वाडीइं जाइ बीजउरउं त्रोडी। नदीमाहि वहतउं मूंकइ। तलार नगरेद्वारि रही का
ढी ते लिइ। पेलउ आपणपइं तिहां जिमरइ न गर सघलउं विषाद प्राप्त हूउं। राजा नमानइं
नहीं। इम करतां एकवार जिनदास श्रावक नी चीरी नीकली। पेलउ महानिर्णय पणइं घारि
तघा देस्वइ देवपूजा करी सर्व कुटुंब खमावी सागार अणसण उच्चरी वन तणी
प्रकृत उ क्षेत्र इं सादिइं नवकार कहितउ। जिवन माहि पइसवइ वननइं अधिष्ठायक इ
व्यंतरइं नवकार सांभलिउ चीतवइ ए अक्षर किहांइं आगइ सांभल्या छइ। ज्ञाननउ उपयो
ग देइ पाछिलउ भव जोइ देखइ तउ सिउं पाछिलइ भवि दीक्षा लेई विराधी ते हतणी मरी व्यंतर
थिउ। आहा जीणइं दीक्षा इं एकइं दिहाडउ सूधी पाली हुंति तु वैमानिक देवतानी पदवी ला
तउ। ते दीक्षा प्रमाद लगइ मइं जोम हिं आहारी इम पश्चात्ताप धरतउ आवी। जिनदास श्रावक कइं
पत्यक्ष हूउ बेहाथ जोडी आगलि कलतउ रहिउ। पगि लागी कहइ। तइं स्तबू जिवउ तं माहरइ उ

रु । कांई वर मागि ॥ श्रावक कहइ । वर देसि तउ सर्व जीव मारिवा नियम लिइ । अनइ स्थानकि
जिन बइठां दिन प्रति इं । एक बीजोरउ मूकइं आणी आपिवउ । व्यंतरइं मानिउं । श्रावक अखंड
पाळउं आविउ । राजाहूं इंहां तां तं कहिउं । एकेकउं बीजोरउं श्रावकहूं इं व्यंतर सादिवउं आपी
आपइ । श्रावक उई राजाहूं इं आल इ दाखिउ सहू कोइ जिनदास श्रावकनी प्रशंसा करइ । घणउ
काल धर्म पाली सुगति इं पहुतउ ॥ कथा ॥ ॥ एह लोकि नउकारनां फल ऊपरि त्रिणि दृष्टां
त कह्या । हवइं परलोकि ऊपरि दृष्टांत कहइ छइ । परलोकि नउकारनइं प्रसावि इं राज्य
पदवी पामिइं । जिम चंडपिंगल चोरिइं पामी । चंडपिंगल नामिइं चोर हउ । तेणइं चोरी
करी नगर लोक कदर्थिउं हुइ । एकवार रायनउ भंडार फाडी राणीनउ अमूल्य कहार चोरि
उ । एक कलावती नामिइं गणिका तिहां छइ । यांइं आवि कांइ मिथ्या तिणि तेहनइ विषइ ते चो
र लुब्ध थइ । लिइ ते हार गणिकाहूं इं आपिउं । इम करतां मयण तेरसिनउ पर्व आविउं हुइ । सघली ग
णिका आपणा श्रृंगार पहिरी उद्यान माहि क्रीडा करिवा गई । कलावतीइं ते हार पहिरि तिहां आव
ति सिइं राणीनी दासीइं ते हार । तेहनइ ओलिखिउ । उलखिउ ई राणीनइं कहिउं राणी राजाहूं इं । ६

कहिउं । राजाइं पती हार पाहिइं । जो आवी चंडपिंगल कलावतीना घर माहि थिकउ सादी मा
हा बिडंबना पूर्वक सूली इं दिवराविउ । कलावती ते वात जाणी तिहां गई । चीतवइ । आहा मा
हरइ कीधइं । एहनइं इसी अवस्था आवी । तउ आउ मूचिइं । एहचाली बीजा सर्व स्वरूपनउ
नियम । हवइ एहहूं इं नउकार दिउ पेलीन उकार देइ चोर पाहि इं निआणउं कराविउं ।
कहि हवइं मरी एहराजानउ बेटउ हुउ जिउं नियाणउं करी एवडउ पापीउ चोर पहि
राणीनउ बेटउ हूउ । राजाइं महा मोह लागउ । महोत्सव करी पुरंदर नाम दीधउं
कलावती इं दीहाडा नीतकता कडो इडा णिउ । सहीपते हजि माहरउ सरता रराजा नइ
आचा सि आवइं । पुरंदरकुमार बालकहूं इं । फूलावइ जि वार इं रूदन करइ । ति वारइं पा
लिला तव नइं नामिइं बोलावइ हे चंडपिंगल म रोइ । बालकहूं इं ते नाम सांभली जातिस्मरण ऊ
पनउं । नउकार नउं माहि माजाणिउं । पितादेवांगत हूआ । पूठिइं पुरंदरकुमार राजा हूउ । कलाव
ती नउकार जाणी ते ऊपरि अत्यंत स्नेह थिकउ निरंतर नउकारनउं स्मरण करइ । राजा धर्म पा
ली सुगति इं पहुतउ ॥ कथा ॥ ॥ वली परलोकि नउकारनइं प्रसावि इं महापापनउ कारण हारम

डाक्टर भाउ दाजी इतिहास संग्रहालय
MEMORIAL

री देवदत्ता नी पदवी लहइ। जिम कुंडिकचोरिइं लाधी॥ अत्र कथा॥ मथुरा नगरी। शत्रुमर्दन राजा।
तिहां कुंडिक चोर सदैव चोरी करइ। एकवार कोइ एक व्यवहारीया नइ घरि खात्र पाडी घ
णउं सुवर्ण चोरिउं। कुटुंब नइ माणुसे कलकल कीधउ। तलार आया। सो नाम सहित चोर साहिउ
बांधी नइ प्रभाति राजा आगलि आणिउ। राजाइं नगर माहि चउहटइ फेरवी अनेक प्रका
रि विडंबना करावी। बापडउं सूली इं दिवर ।विउ नगर माहि सघलइ उद्घोषणा करावी
अहो लोको इसिउं फल देषो। बीजउ को। चोरी म करिसिउ। एह नी चिंता इ कोणइं न
करवी। पछइ सूली कन्हलि राउला चर मूंक्या। जिको एह नी चिंता करइ ते आवी
कहिज्यो। जिम तेहनइं एहवि दंडउं कीज इ। तिसिइं बापडा ते चोर रहिता वडइ अनइ
रुधिर नइ नीकलवइ करी अपार गाढी त्रषा लागी। जिको कोइ ऊकठउ जाइ तेह कन्हइं पाणी
मागइ। राजा ना भय भणी कोइ पाणी पाइ नहीं। तिसिइ जिनदत्त श्रावक आविउ। पलइं पाणी मा
गिउं। श्रावकि कहिउं पाणी लेइ आविउं। तत्र लगइ तूं नमस्कार गुणि। नमो अरिहंताणं। मुखि
कहइ। श्रावक घरि गिउ। जिनदत्त श्रेष्ठि नउ वृत्तांत राजा आगलि कहिउ। राजा तेह नइं सूलि ७

घालवा नउ आदेस दीधउ। रासभि चडावी नीणा नमिका इं लेइ गया। तिसिइं तीणइं कुंडिक यक्षि हुइं
न वइं क्रूप नउ। अवधिज्ञान पउंजिउं। आपणा गुरु जिनदत्त श्रावक कन्हइं तिसी अवस्था दीठी
साचिउ। आवी नगर ऊपरि महाकाय शिला विकुर्वी। आकाशि वाणी बोलिवा लागउ। अरे राजा
अमात्य प्रमुख सर्व नगर लोको पापी अउहव डां जि ईणइं शिलाइं करी तुम्ह सविहु नइं
चूर्ण करउं। एह दया नउ समुद्र सुश्रावक मा। हरउ स्वामी जिनदत्त श्रेष्ठि तेह कन्हइं अम्हे एव
डी विडंबना करउ छउ। एकवार देषउ माहरउं कीधउं। तिसिइं राजा प्रमुख सहू
कोई भयभ्रांत हूंतउ पुष्पादिक नी पूजा करी वीनवइ। अजाणपणा लगइ कीधउं। पञ्च
स्तार उ अपराध खमि। अहो देवता आज अ। म्हकइं जीवितव्य दिइ। देवता कहइ। तउ जी
वतां मूकउं। जउ एह जिनदत्त श्रेष्ठि नइ चरणे पडउ। अनइ पूर्विइ सिइं माहरउ प्रासाद करा
वउ माहि सूली इं घालिउ चोर। अनइ नवकार देतउ श्रेष्ठि ए बिहुं नी मूर्त्ति करावी पूजउ तउ मूकउं
राजाइं सहू मानिउं। पछइ श्रेष्ठि नइं अन्याय षमावी पहिरावी वइसारी। मोटउ संचि नगर माहि
पइसारउ कीधउ। ते यक्ष ना प्रासाद माहि तिसी बि मूर्त्ति सहू करावी। यक्ष उपशांत हूउ। ते स्थानकि

पढंतउ ॥ श्री ॥ कथा ॥ ५ ठा ॥ तथा श्री नवकार नइं प्रभावइं । मोक्षनी पदवी लाधी राजसिंह कु
मारनी परिइं ॥ अथ कथा ॥ त्रीजउ पुष्करवरद्वीप तिहां भरतक्षेत्र माहि । सिद्धावट ग्राम । तिहां
दूकडा पर्वतनी गुफाइं । एक दमसार ऋषीश्वर चउमासी उपवास तप करतउ चउमास रहिउं
छइ । तिहां एक पुलिंदउ । पुलिंदी आव्यां ऋषि वांदउ । भद्रक परिणाम देषी ऋषिइं नवका
र सीषवी नइं कहिउं । ए त्रिकाल समरेव । सावधान थईं जपिवउ । पली बिहुं सदेवं जपइं ऋ
षि चउमासा पूगि इं गुरु कन्हइं लि पहुतउ नष्का लिइं बेहू परी क्षठु आ पुलिंदा मउजी वम
री । जंबूद्वीप माहि भरतक्षेत्र मणि मंदि रिराज मृगांक राजा विजया राणी । तेहनइ
उगार्ति अवतरिउ । राणीइं सीहनउ स्वप्न ला धउ । क्रमिइं पुत्र जनम हूउ । महोच्छव करी
राजसिंह कुमार नाम दीधउं । मउडउ थइं कलू इ कला पारीण । रूप लावण्य सौभाग्यनउ निध
न । यौवन वय प्राप्त हूउ । मतिसार मुहतानउ बेटउ सुमतिकुमार । तेह मित्र राजसिंहनइ मि
त्र छइ । एकवार राजसिंह कुमार मित्र सहित वन माहि उरंगमनी क्रीडा करिवा गिउ घणी वेला
उरंगम खेलावी थाकउ । एक आंबानी छायाइं वीसमइं छइ । तिसिइं एक कटकार थाकउ तिहां मिलिउं ८

कुमरिइं पूछिउं कहउ किहांथका आव्या । किहां जासिउ । किहांइं कांई आश्चर्य दीठउं जउ तेक
हइ अंपिलउ कहइ पद्मपुर नगर थकउ हूं आविउ सकल तीर्थ नइ मस्तक श्री शत्रुंजय तीर्थनी
यात्रा करिवा जाउं छउं । एक आश्चर्यनी वात सांभलि । तेणइं पद्मपुर नगरि पद्मराजा हंसी राणी ।
तेह तणइ रत्नवती नामिइं बेटी । चउसठी कला कुशल महा रूपपात्र यौवनवय प्राप्त हूई । पि
तानइं मनि वरचिंता ऊपनी । अमात्य कुइं कहइ इ एकेक न्याइं गुण करी अनुरूप योग्य व
र किहां थिकउ मिलि सिइं मुक्ता उ कहइ इस्या मी मध्यस्थ चिंता एहनी सा पछइं ते स्वय
मेव समान योग मेलि सिइं । एक वार राजा आगलि । एक नाटक उ पुलिंदानइ वेषिइं नाच
इ । तउ देषी कन्या कुइं मूर्छा आवी । जातिस्मरण कुपनउं राजाइं पूछिउं । वलि एकिसिउं कन्या क
हइ । तात तपा छिल इं विक्षुं पुलिंदी कुं नीमाद्द रमतर तार पुलिंदउ । हवइ जउ आपणइं ते वितल
रत्तार लहइ तउं । तउ पाणिग्रहण करउं अन्यथा नहीं । इसी प्रतिज्ञा लीधी । ए वचन सांभलतां राजसिंह कु
इं मूर्छा आवी जातिस्मरण ऊपनउं । आपणउ पाछिलउ भव पुलिंदानउ दीठउ । पूर्व भव नाम सांभली रत्नव
ती प्रतिइं अतिसानुराग थिकउ चाली सुमइ कहइ उ आघउ कि सिउं हूउं । वेटवा हूं कहइ । एम इ ते कहइ

न्यात्तणी प्रतिज्ञानी वात देसिविदेसि विस्तरी। अनेक राजानाकुमर ते कन्या परिणवा नइं लोलिइं आ
वी २ रूडइं जि कहइ। अम्हे पाछिलइ रत्ति विप्रु लिंद्या हूंता। पछइ कन्या कहइ। अहो उत्तम्हे प्रलिं
दा कुंता तउ कहउ। अम्हे मिइं पाप कीधउं हूंतउं। जिणइं करी। ए वडी राज्यऋद्धि लाधी। मलो ते न
जाणइ रूडा पडिआ। तही अलगइ ते कन्या पुरुषद्वेषिणी थई। पुरुष सघला इं रूडा बोलाजिं
कुइं। तेहत्तणी यहइं पुरुषहंतणउ मुख नवि देखि। जे इसिउं वात वइ। स्त्री इजि इंद माहि धिकी
रहइ। तउ अहो राजकुमर पुरुषमाहि रत्न छइ। अनइ स्त्रीमाहि रत्न ते कन्यारत्न। अम्हे विक
कुंडूं उचयोग मिलइ तउ अपार उवत उंकडइ। इसिउं सांभली कुमर हर्षिउ। आनंदिउ।
सर्व अंग लगू आनंदणकता रीते हक्कइं आपाधि(?) मऊरी। आपणइ घरि आविउ। रत्नवतीइ
इं मिलवानउ उपाय चींतवइ। तिसिइं नगरलोक मिली राजाकन्हइं एकांति वीनविउं। स्वामी अम्हे
किम करउं। परउजसिंह कुमार नगरमाहि जाणइं सेरीइं सांचरइ। तिहां आपणा बालक रोय तांमू(?)
की २ सौ ... माहि आ। स्त्री नाहंद ... आवाधाइं। अम्हारा घरनां काज कांम सघलाइं सी
दाइ छइ। तेह तणी स्वामी कुमार नगरमाहि फिरत उवारउ। राजाइं प्रतीहार पाहिं। कुमार कन्हइं कहिव ५

राविउ। वछ तुं सदैव आवास माहि जि थिकउ रहि। जे कलाअभ्यासि जे बाहिरि रहीइ तां पुरुषनी
कला फीटी विकला थाइं। तिसां तली कुमर हूइ वाणउं ... दीन वइ। नातिइं इ मत उ का ... विउजउ
कांई माहरउ अपराध न। तिनइ मनि प्रतिज्ञा सिउ। पछइ सुमति मित्रिइं वात नउ परमार्थ कहि।
उतउ हूइ वणफाटी पछइ कुमर कहइ। मित्र एना ... तनी आज्ञा तउ गाढी छइ कर। सदैव घर
माहि जि पइसी रहिवउं। अनइ ते पद्मरायनी बेटी जो इ थान उ तउ घणउं कौतिग छइ। तउ वा
लउ। तेह देशांतर तणी जइई। यतः। दीसइ विवि हछरियं। जाणिज्जइ सुजण दुज्जण
विसेसो। अप्पाणं च कलिज्जइ हिंडिज्जइ तेण पुहवि ॥१५॥ इसिउ विमासी बेहू जण खड्ग
हाथि लेई तिहां तणी नीकल्या। गामि २ अनेक आश्चर्य जोअता २ जाइ छइ। एकवार अरण्य मा
हि सूनइ देवकुलि सूतां काहि एक पुरुषनउ करुण स्वर सांतलिउ। कुमर कउतुक हाथि लेई ते ह
णी चालिउ। आगलि थिउ देषइ तउ अति विकराल राक्षसि इं पुरुष एक कच्छ माहि चांपिउ छइ। ते आ
क्रंद करइ छइ। कुमारिइं राक्षस कन्हइं कहिउं। पराया पुरुष मूकि। ईणइं ताहरइ हूंसिउ विणासिउं पेल
उ कहइ। पसू कांइं चाखि करइ तउ हूं तउ। मइं कहिउं। तउ वसिधा तउ जउ आपणउं पउ महामांसका

पीसूं करउं हिव। एतलइ देई मंकडइं नही फांतलउ लीखिउं। तउ हवइ चउमासइ तउ सफांकिसूं कउ तउ
कुमार कहइ। ए हवडां इं मूंकिउं सीमाहरउ मांस तूं फाडि पेट आपउ इसउं कहीखडु काढी तो
तलउं मांस काढवा लागउ। तेतलइं राक्षस हर्षितउ कहइ। अहो साहसीक परोपकारी सत पुरुष
ताहरइं साहसिइं तूठउ हूं। कांइ वरमागि। कुमर कहइ। उत्तम वत्तं उत्तम तउ। इहवा पडान उम
नचां बिछं हूं रि। राक्षस कहइ। ताहरा कहिया तणोते करिसु। पुण देवता न उ दर्शन निष्फल
न थाइ। ते हतणी अ चिंतामणि रत्न लिइ। इम चिंतामणि आपी राक्षस अदृश्य थिउ। कुमा
रनि उपाय उ गिउ। मित्र नइं तेह वृत्तांत कहिउ। मित्र हरसीक हइ अहो मित्र तूं रत्न
वती परणि वा जाइं छइ। अनइं ते तउ पुरुष द्वेषिणी छइ। ड उ पुरुष नइं देषि इं तेह नउ
दर्शन इ करवा नही ला तइ। संभाषण नी वात किहां छइ। कुमार कहइ मित्र चिंता सी कीजइ हवला
गपड़ लिलल इ यतः। अघटघटितानि घटयति सुघटितघटितानि जर्जरी कुरुते। विधिरेव तानि
घटयति यानि पुमान्नैव चिंतयति ॥१॥ कुमार नइं मन निपूर्वेलब नइं हवृत्तांत जाणिआ लगा रउ। एक नइ १५
कार डि नीप कांत आसणा अनइ ध्यान कइ। एकवार अरण्यमाहि एक सरोवर नी पालिइं आंबानी।

छायाइं कुमार सूतउ छइ। हूकडा वनमाहि सुमति फूल चूंट इ छइ। ति सिइं देषइ तउ आकासि
एक विद्याधर जाइ छइ। तीणइं जातइं सूतां राजसिंह कुमर तउ रूप देषी चीतव्यं। मरु चे डिमा
हरी सार्यो आवइ छइ। तेजउ एह पुरुष नउ रूप देषि सिइं तउ मोहिस्यइ। एह जि कपटि अनुरागध
रिसिइ। इसिउं विमासी तेह इ जि वनगहन माहि ध्र का किसी इ कूषधी लेई पाणी इसि नं घसी
ललाटि सूत्रा तिलक कीधउ। तत्काल कुमर स्त्री रूपि इं हूतउ। विद्याधर आघउ चालिउ लगा
रेक इं तेहनी सार्यो विद्याधरी आवी। तीणइं ते स्त्री कुइं देषि सइ। तउ एह नइ विषइ
रातउ मरु साम्हउ जइ नहीं जोवइ। इसिउं विमासी ते हजि वनगहन माहि थी अनेरी एक ऊ
षधी लेई घसी तिमइ जि तिलक कीधउं। तत्काल स्त्री रूप गिउं पुरुष रूप थिउं। विद्याधरी आघी चा
ली। तिसघल उ वृत्तांत सुमति इं देखनइ आतरइ रहि इं दीठउं। ति बिन्हइ ऊषधी वन माहि थी लेई गां
ठि इं बांधी। कुमार कृइं जागडी सघलउ वृत्तांत कहिउ। कुमिइं पण पुरि कुअंता। तिहां सुवर्णमय जि
न प्रासाद ढूकडा रहइ छइ। चिंतामणि नइं प्रसादि इं सकल मनो वांछित सुख पाचइ छइ। ति सिइं
स्त्री नइ जि सूमूहि वीधी सुखासनि बइठी रत्नवती कन्या प्रासादि आवी। आगलि थि आकां बडी आप

रूषस घणा इक्क इं पर स्हाकर इं छइ। तिसिइं ते विन्हइ कारिमी स्त्री घई ढूकडे री प्रासाद मांहि आ
वी कहती रही रत्नवती इं आगइ पगा री पूजा कीधी। पाछी वलती इं कुमरि स्त्री दीठी। देवांगना समान
रूप देषी हरषिं इं पूछिउं महानुभाव … अपूर्व स्यां दीसउ छउ। किहां थी आयां। तिसइ मि
त्र स्त्री कहइ। एमा हरी सखी भूणि मंदिर नगर थकी आवी। रत्न कहइ। एह म्हारी सखी मरुदइ इं दि
षतां मनि अपार उल्लास थाई छइ। तुम्हे माहरइ डिप। ऊरुणी थाइ। आपणइ घरि लेई गई। अ
नेक सत्कार करइ। बहु घणउ काल तिहां रहिआं। ए। कवार रत्नवती प्रति कुमार स्त्री कहइ
देषउ अहो तात हरइ पूर्व संबंध उत्तर ताइ लिद उ किहां इं जाणी इ नहीं। …
ग्यवर पाषइ रूडा इ कन्या कांई भोलइ नहीं। पछइ पाछि सिउं मेल स्वयंवर मंडप मंडावी आ
णा मनगमता कांहि एक वरनउ पाणिग्रहण करउं कांन। हो पछइ रत्नवती कहइ। जो इनतरता
रतां मननी रति नइं कांडिइं कीजइ। तेतउ … जीयतां … नउ बालइ क
णिइं माहरइ कांइ नहीं। तिवारइं कुमार स्त्री पूछइ। तेसबां तरनउ पलिद … वर कि मतउलखाइ र
त्नवती कहइ जिको तेह सबां तरनउ कीधउं माहरउ … जाणि सिइ। तिसहीं माहरउ पूर्व संबंधउ २२

पति तिवारइं कुमार स्त्री कहइ। ए तलवं जाणउं। पाछिलइ लविद मसार रूषी स्वरिइं न उकारउ तुं
इं सीषवि उहूं तउ। ते स्मरवा नइं प्रस्ताविइं तूं भरीराय नी बेटी हुई। तिसा तलीनइ चमत्कारो रत्नव
ती आपणी सखी चंद्रलेखा प्रति इं कहइ। ए किम एवात जाणइ। चंद्रलेखा कहइ स्वामिनी जोइ तो
एहनी गति वचन चेष्टा सहू पुरुषनां सरिषउं दीसइं। अनइ एह देषी उमरुद्र इं रति ऊपजइ। नी
णइं इ सिउं जाणी इ सही। एतो माहरउ पूर्व सच। नउसरतार कि सिइं कारणि इं पुरुषनां रू
प आछादी स्त्रीनइं रूपिइं आपणपउं देषाडइ छइ। तिसिइं चंद्रलेखा कुमार स्त्री प्रति
इं कहइ। स्वामी हवइं प्रसाद करी आपणउ। स्वभावनउं रूप देखाडउ। तिसिइं उषधी म
इं योगिइं बेहू पुरुषनइं रूपि इं थिआ रूपदेषी सहू को हरषिउ। पछइ चंद्रलेखा कहइ। स्वा
मी जिम रूप प्रकासिउं। तिम कुल गोत्रादिक किइं प्रकासउं। तिवारइं मित्रि इं कुमारतणउं देस कुल
गोत्र चरित्र बोल्या … वृत्तांत संपूर्ण कहिउं। राजा इं वात जाणी हरषिं इं थिक … मोटे म
होत्सवइं रत्नवतीनउ पाणिग्रहण करउ। … राज्य दीधउं। ए।
उ सिइं कुमार रत्नवती सहित नाना प्रकार भोग सुख भोगवइ छइ। घणउ काल हूउ। एक वार पिताइं

राजमृगांकराजाइं प्रतीहार हाथि लेख मोकलीनइं कहाविउं। वछ अम्हि वृद्ध हूआ राज्य
मांडी दीक्षा लेवानी उकंठा करउं छउं। घणा काल लगइ। ताहरा दर्सननउ उकंठा छइं। तउं वहिला
उआवजे। आविजे। पछइ राजसिंहकुमार सुसुरानइं मोकलावी रत्नवती सहित चतुरंगकटक
परिवरिउ मणिमंदिर नगर भणी चालिउ। क्रमिइं पुहतउ। जई पिताहूइं राजदेईइं हूं आपणउं धर्म
मकार्य करउं। इसिइ आवी उद्यानपालकि इंच रनविउ स्वामी उद्यान माहि श्री गुणसागर
सूरिगुरु पाउधारिया। राजा अतिहर्षित राजा। सिंहकुमार प्रतिइं राज्यस्थापी मातेखें त्रिवि
नविची सपरिवार गुरु कन्हलि गिउ दीक्षा ले ईइ घणा तप करी देवलोकि पहुता उरा
जसिंह राजाइं रत्नवती राणी सहित सम्यक्त्वमूलबार व्रति पडिवज्यां निष्कंटक राज्य अ
नइ। श्रावक धर्म पालइ छइं। नउकारनइं प्रसाबिइं मोटा वयरी राजा आज्ञा मनाव्या गामि गामि जि
न प्रासाद कराव्या पृथ्वी जिनमंडित करावी। चिरकाल राज्य पाल्यां। एकवार रोगातंकपीडिकइं हूं
तइं। आपणा पुत्र राजसिंहकुमारहुइं राज्य स्थापना कीधी। आपणपइं रत्नवती राणी सहित श्री
गुरु नइं मुखिइं सविस्तार आराधना करी सर्वजीवरासि खमावी। शुद्धध्याने श्री नउकार स्मरतउ जिप १२

रो चूकउ। मरीयांतम इं देवलोकिं दससागरोपम नउ आऊखउ पइ श्रुवु अच्युत इसिइं नामिइं इंद्र हूउ
रत्नवती मरी तीणइं जि देवलोकिं इंद्रसामानिक देवता हूआ। तिहां थकउ एक भव संसार माहि अ
वतरी दीक्षा लेई सकल कर्म क्षय करी केवलज्ञान ऊपाजी बिहुं जणा मोक्ष हिसिइं कथा॥७
॥६॥ ॥ ॥ ९॥ श्री नवकार बालावबोध इसी परि नउकारना प्रसादइं परि त्रिणि इहलोकना
तथा त्रिणि परलोकना दृष्टांत कहिआ। हवं चैत्यवंदनाधिकारः महात्मानइं सातवार
चैत्यवंदना करवी किम। राइअपडिकमणा मइ वेहुडइ देववांदी इ पचखाण
पारतां वार कीधा पूछिइं देवसी पडिकमणा नइ धुरि संथारतां पोरिसि भणी इ सूतां ऊठि
आपूछिइं एवं महात्मानइं सादिवसा तहूइं। श्रावकनइं सात हूइं। पांच हूइं। जघन्यतउ
त्रिणि हूइं किम उत्कृष्टकालि पडिकमणानी चितेइ सूआवानी वेइ ऊठिली अनइं वेहिली एवं त्रिकाल
देवपूजा करवानी त्रिणि एवं एक उभय पडिकमणा नुं करइं तेहनइं सात हूइं पडिकमणा करइ एकवार न कर
इ तउ पांच हूइं। त्रिकाल देवपूजा करइ तउ त्रिणि हूइं। किवारइं जउ त्रिकाल पूजा न करावइ
तउ त्रिकाल चैत्यवंदना करवी इ जि। एवं त्रिणि हवं छइ श्रावकी पडिकम्या विणु चैत्यवंदना संभा

थसामायिका। पोसहपडिक्कमणाउ कांई कीधउं सूझइ नही॥ यतउक्तं॥ अ आगमे॥ इरिआवहि
आए। पडिक्कंताए न कप्पइ। किंपि चेइअवंदणसझायाइ कांउं इरिआवही सूत्रवखाणी इ
छइ। तिहां नइ खुरि खमासमणा दीजइ। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए। निसीहिआए।
मत्थएण वंदामि॥१ व्याख्या॥ इच्छामि इच्छामि श्रमण वंदितुं यापनीयया नैषेधिक्या हे क्षमासहित श्र
मण तपस्वी ऋषीश्वर इणि इं आमंत्रिणि इं करी गु रु बोलावी इच्छइ। यापनीयक ही इच्छा किस
हित जे नैषेधिकी कहीइ। आपणउं सइं रती ण इं करी वांदिउं इच्छामि इम कहूइ वांदिवा
वांछउं। यतः लउं कउं तां जि कहइ। पछइ बिसंडा साबिजा खुललाट डा च व हाथ अनइ ल
मिका प्रमार्जी। पंचांगे करी नइ मिफर सतउ कहइ। इ मत्थएण वंदामि। मस्तकिइं नमस्कारइ
वांदउं छउं। इणइं खमासमणा नइ सूत्रि २८ अक्षर तेह माहि ३ सारी अक्षर बाकता २५ लघु
अक्षर। करतउ वइ। बेहाथ जोडी कहइ। इच्छाकारेण संदिसह भगवन इरिआवहिअं पडिक्कमा
मि इच्छाकारेण संदिशत भगवंतः ऐर्यापथिकीं प्रतिक्रमामि। इच्छाकारि ज उ तुम्हारी इच्छा हुइ तउ
भगवन संदिसह आदेस दिउ जिम हूं इरिआवही पडिक्कमउं। गुरु कहइ पडिक्कमह शिष्य कहइ इ १३

च्छं इम जि करउं। पछइ बिइं पग आंगलि बिहुं अंगुलनउ आंतरउ पाछलि त्रिणि अंगुल मा
ऊरडां च्यारि माचि रडां आंतरउ। इसी जिनमुद्रा पगे साचवतउ हतउ। तथा आंगुली बिहुं हाथ
नी एकेक माहि इघातीइ बेहाथ पद्मकोश नइ मुख आगलि दीजइ अनइ बिहुं हाथ नाकूंप
र पेट ऊपरि आणीइं। इसी योगमुद्रा साचव तउ इरिआवही सूत्र उच्चरइ। इच्छामि पडिक्कमिउं
इरिआवहिआए। विराहणाए। गमणागम णे पाणक्कमणे बीअक्कमणे हरिअक्कमणे उसा
उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा सं कमणे जे मे जीवा विराहिआ। एगिंदिया बेइं
दिआ तेइंदिआ चउरिंदिआ पंचिंदिआ। अ भिहया वत्तिया लेसिआ संघाइआ संघट्टिआ
परिआविआ किलामिआ उद्दविआ ठाणा। उ ठाणं संकामिआ जीवी आउ ववरोविआ तस्स।
मिच्छामि दुक्कडं॥ तस्स उत्तरी करणेणं पायच्छित्त करणेणं विसोही करणेणं विसल्ली करणेणं पाव
णं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं॥ व्याख्या॥ इच्छामि पडिक्कमिउं १ पद बिहुं पहिली
संपदा इच्छामि प्रतिक्रमितुं प्रतिक्रमिवा निवर्त्तिवा वांछउं किसिआथकउं इरिआवहिआए १ वि
राहणाए २ पद बिहुं पदे बीजी संपदा ऐर्यापथिक्यां विराधनायां ईर्यापथ कहीइ हीनुं आनुक्रमा

म॥ तिहां जे कांइ विराधना हुइ। अथवा ईर्यापथ कहीइ साधुनउं। श्रावकनउ आचार। तेहनइ
विषइ जे कांइ विराधना हुई तेह थिकउ निवर्त्तिवा वांछउं॥ किसिउं करतां विराधना हुइ। गम
णागमणे। इणइं एकइं पदिइं बीजी संपदा। गमनागमने आपणा स्थानक थकउ अनेथि जईइ
ते गमन वली पाछा आवीइ ते आगमन गमन आगमन जाचउं। आवचउं करतां जे विराधना
हुई। किसिइं प्रकारिइं विराधना हुई। पाण। क्कमणे। प्राणीया कहीइं बेइंद्रिय त्रेइंद्रिय च
उरिंद्रिय जीव। तेहनउं आक्रमण कहीइ प | गिइं करी चांपिवउं। तीणइं बतइं तथा बीअक्क
मणे बीजाक्कमणे बीज कहीइं शालि मु | ग्ग जव। गोधूमादिक सर्व धान्य प्रमुख जे कांई
वाविउं ऊगइ ते सहू जीव कहीइ तेहनइ। | आक्रमणि हरिअक्कमणे। हरिताक्कमणे हरि
त कहतां सर्व नीलवणि वणस्पती जाणिवी। त | हनइ आक्रमणि बतइं पहिडिं पदे करी सर्व
बीज अनइ सर्व वनस्पती रहिइ जीव पणउं कहिउं जेह तणी जीवनी लक्षणा संपूर्ण देषीइं बइं त
था हि॥ मनुष्यना सहु रतीपरिइं वनस्पतीइ नउ देह। कोमल बालक तरुणउं गरढउं कहिवीइ तथा॥ २४
हाथ पगादिकिइं करी मनुष्यनउ देह बाधइ। तिम शाषादिक करी वृक्ष इधाइं तथा मूंक्या उ आम

ली वृक्ष चंद्र विकासिआ। सूर्य विकासिआ। कमल। अंबाडी पुष्पादिक मादि। निद्रा जागरणादि।
क देषीइ। तथा बील पलाशादिक वृक्ष भूमिगत निधान आपणा मूलनइ जडे करी वीटइ तीणइ लो
भनउ सताच नउ जाणीइ। वर्षाकालि मेघनउ गर्जित वात लवाइनइं फारि सिइं करी अंकूरा ऊपज
इं। एह हर्षनउ सताव सजालू वेलि मनुष्यना हाथ न | इं स्पर्शिइं करी संकुचइं। एह लज्जा। अनइ स्नयन
उसाव ऊक बकबक लहइ अशोक वृक्ष तिल | वृक्षादिक नच यौवन सुरूप सालंकार का
मिनी तणा पगना पान्ही नइं प्रहारिइं करी ते | हना मुखना तांबूलरसनइं छांटणइं करी त
था तेहनइं कीध वृक्ष स्नेह आलिंगनिइ करी ते। | था तेहनइं कटाक्ष विक्षेपिइं करी ते कालफः
ली तादेषीइं। एम मुनि संज्ञा नउ साव कोकनद वृ | क्ष नउ कंद मनुष्यनइं पगिला गइं ऊतइं ऊंका
रा मूकइ। एक्रोधनउ साव रुदंती वेली अहो मइं बतइं पलोकइः किआकाइं इसिउं अहंकारिइं क
री निरंतर अश्रुपात करइ। जेह तणी तेहनइं योगिइं सुवर्णसिद्धि हुइ। तेह तणी मानन उसाव था।
हिइं सघली वेलि आपणां फल पान डे करी आगादइ। एमायानउ साव। तथा भूमिकाइ बिलादिक
आहारनइं योगिइं वृक्षइ वृद्धि पामइं। तेह पाषइ दिसि शुष्क माइ। तथा मनुष्यनी परिनाग च

इत्यादिक नइं। तिलवटि खल गोमय छाणां आदिक नी उकरडा लाकडइं छइं। तेह ऊपरि आवी मूकइं।
फल फूल रस नी वृद्धि थाइ। ए आहार संज्ञा नउ भाव॥ तथा वृक्ष कूंइरइ इं पोताना द्रव्य ढांकिसो जो-
इ रूंधापणइं इत्यादि करी एक करी फूल फल पानवा वाकइं विकार दीसइं। तथा सर्व वनस्पती
नां आकर्षा आपणा २ नियत जिवइं। तथा इष्ट अनिष्ट आहार नी प्राप्ति इं करी ऊष्टि कइ छइं।
तथा वेलडी मार्ग मूंकी नइ वृक्षि चडइ ए उघसं- ज्ञा नउ भाव इत्यादिक युक्ति करी। श्री आचा-
रांगि पहिलइ श्रुतस्कंधि पहिला अध्ययन माहि- सचित्त रजीव पणउं थापिउं छइ। को कहिसि-
इ जउ ए जीव छइं तउ छेदना तेहन करता कां। इ रा अइरउ इनासइ नहीं कांइ। तिहां इसि-
उं कहिउं वस्त्र मुखवास पगा दिक अवयव नहीं ते- हनणी रोअवउं नासवउं साउं इन नहीं भणे वेद-
ना मइं झिमका एक आंधलउ बहिरउ बोबडउ टूंटउ उपांगुलउ अनइ विषमवायु नइं विकारि इं स्तनसा-
णी सर्व अंगोपांग थ्यापारहित छइ तेहनइ कोइ कोएक कूट इतउ ताणइं नसाइ नहीं राआइनइं-
णा वेदना ऊपजइ जिम मउण चउ पहन तणी गाढा काउ कांम पाखइ चिवेको आकंदइं एहनी छिद्धना करवाना
वइं। तथा अनुवृत्ति ... पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे अवश्यायकी ... कापनकदकम्रत्तिकामर्क-
ट संतान संक्रमणे अवश्याय कहीइ तेह आकाश थकी नडे मूढ कत्र अपकाय पडइ ए ते लइं मूढ़ कत्र अपका-

यइनी विरा धना गाढी प पदः उजराणा वइ छइ २१

२५

यतनउक्तं॥ श्री आचारांगे। एगंमि उदगबिंदुंमि जे जीवा जिणवरेहिं पन्नत्ता ते जइ सरिसव मित्ता
जंबूद्वीवे न माएज्जा॥२॥ पुराण माहि कहिउं छइ। लूतास्य तंतुगलिते ये बिंदौ संति जंतवः सूक्ष्-
क्ष्मास्त्रमरमानास्ते नैव मांति त्रिविष्टपे। उत्तिंग जे गर्दभा करजीव तुइं छत्रा कार विवर कर इंद्रि-
इ कहइं ते आइ मि उंना मत उत्तिंग कहीइ। अथवा उत्तिंग ग्रांहि इं कीडीनां नगरा कहीइं। प-
नक कहीइं पंचवर्ण फूल दग मट्टी कहीइ जे सचित्त मिकाइं सचित्त पाणी नइं योगि इं
करी ची कल कहीइ। अथवा दग कहीइ पा- णी मट्टी कर्दम कहीइ ... विन्हइं जू आंप-
द मक्कट संतान कहीइ कोलानी जाल- ए ह नउं संक्रमण कहीइ पीडिवउं तीण
इ बत इ किं बहुना हचय कइ बोलिइं सहू कहइ- इं छइ जे मे जीवा विराहिया। इ णइ पदइ क-
री पांचमी संपदा। ये मया जीवा विराधिताः। के ते जीवा मइं विराधिया इति आकांक्षी जीव इ जिना
ते दस कहइ छइ। एगिंदिआ बेइंदिआ २ तेइंदिआ ३ चउरिंदिआ ४ पंचिंदिआ ५ ए छट्ठी संपदा करी व-
ढी संपदा। एकेंद्रिया। जेहनइं सहइ रूप एक इंद्रिय छइ ते कृमि शंख सीपनी जलो आगंडोला अल-
सीआ प्रमुख जेहनइ पग नइ छइं ते बेइंद्रिय कहीइं। तेइंदिआ तेरिंद्रिया जेहनइ स इ मुख नासिका।

पत्रिणिइं त्रिइंद्रिय कहीइं। ते गादहिआ कुंथूआ जूं लीष। ह्नुयामां कणा कीडी मंकोडा खड्ह
रा। चूडेलि प्रमुख। जेहनइं आवइं अधिका पामइ। अथवा जेहनइं मुख चात्रिसीं गडइं। ति
सर्वे त्रींद्रिय जाणवा। चउरिंद्रिया: जेहनइं सयर मुख नासिका आंखि कर्ण। पंचइंद्रि
य कहीइं। ते जलचर मत्स्यादिक। स्थलचर सीह व्याघ्रादिक। खचर पंखीया हंस मयूरादिक। तथा
मनुष्य देव नारकी सर्व पंचेंद्रिय कहीइं ५ पर्याय। इं बोलइं माहि सर्व संसारी जीव आव्या। हि
व किम जीव विराध्या ते प्रकार कहइ छइ। अ भिहया १ वत्तिआ २ लेसिआ ३ संघाइआ ४
संघट्टिआ ५ परिआविआ ६ किलामिआ ७ उद्दविआ ८ ठाणाओ ठाणं संकामिय
९ जीविआओ ववरोविआ १० तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ११ ॥ एह इग्यारे पदसा ८मी संपदा
अभिहया। अभिहता: अभिकहीइं सामुहा आवता पगिइं करी हण्या कहीइं आहण्या अ
थवा ऊपाडी नांखिआ। ते अभिहया कहीइं। वत्तिआ वर्तिता: पूंजीनइं एकइं ढिगलइ कीधा
अथवा धूलिइं ढांकिइं करी ढांक्या ते वत्तिआ कहीइं। लेसिआ श्लेषिता: भुंइं सीतिइं लगाडिया
अथवा लगारेक मसलिआ ते लेसिआ कहीइं। संघाइआ संघातिता: माहोमाहि तेहनां सयर

नइं मेलिवइं करी पीडा कीधा। संघट्टिआ संघट्टिता: थोडउ सिउं स्परिसवइं करी हण्या। परि
आविआ परितापिता: सर्वतः पासे पीड्या। किलामिआ क्लामिता गाढा गिलाण कीधा। निटोल मा
रिया नहीं प्राण मात्र प्राय कीधा। उद्दविआ अवद्राविता त्रासविआ। ठाणाओ ठाणं संकामिआ
स्थानं संक्रामिता: एक स्थानक थकउ बीजइ स्थानकि संक्रमाया। जीविआओ ववरोविआ जी
विताद् व्यपरोपिता: जीवितव्य थिकउ चूकव्या मारिआ। तस्स मिच्छामि दुक्कडं। तस्य मिथ्या मे दु
ष्कृतं। इत्यादिक प्रकारि करी जे अतीचार हूउ तेहनउ दुष्कृत कहीइं पाप माहरउ मिथ्या कहीइं
निष्फल थाउ। इवडइ दीहसिउं पाप न करउं इसिउ भाव हवइ चली विशेषशुद्धिनइं का
जिइं काउसग्ग करिवा वांछतउ हूंतउ इसिं उंपइ। तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तक
रणेणं। विसोहीकरणेणं २ विसल्लीकरणेणं पा याणं कम्माणं ५ निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं
६। एह छ पदे करी आठमी संपदा। तस्स उत्तरीकरणेणं तस्य उत्तरीकरणेन जे पाप पाछलि आलो
इउ पडिकमउं तेहनइं उत्तरीकरण विशेषशुद्धि कहीइं तेहनइं कारणि काउसग्ग करउं छउं।
ते शुद्धि किम थइ करी? पायच्छित्तकरणेणं प्रायश्चित्तकरणेन पाप छेदइ ते प्रायच्छित्त क
हीइ काउस्सग्ग रूप ते प्रायश्चित्त करवानइं कारणिइं। हवइ प्रायश्चित्तइं आत्मानी शुद्धि इं करी

१६

MEMORIAL

छइ तउ विसोहीकरणेणं । विसोहिकरणेणं । विशोधिकहीइ पापमल नइं फीटवइं करी आत्मान
उं निर्मलपणउं तेह नइं कारणिइं करी विशुद्धिइं तउ कहइ छइ । अंतरंग शल्य काढउ छइं तेउ वि
सल्लीकरणेणं । विसल्लकरणेणं । माया नियाणउं मिथ्यात्व एह त्रिहुं प्रकारे शल्य तेह रहित तउ वि
शल्य कहीइ । तिकरिवा नइं निमित्तइं करीए तलइ निमित्ते करी किसिउं करिवउं छइ । पावाणं क
म्माणं । निग्घायणट्ठाए । पापानां कर्मणां । निर्घात नाघाय पाप कहीइं जे संसार हेतु कर्म ज्ञानाव
रणीयादिक तेह नउ निर्घातन विणास करवउं ते हनइं काजिइं । ठामि काउस्सग्गं । एतला लग
इ इरिआवहीनउं सूत्र ईणिइं सूत्रि ३२ पद ८ संपदा ८ अक्षर तेह माहि २४ गुरु अ
क्षर तां १७५ लघु अक्षर हवइ जे पाछलि कहिउं ठामि काउस्सग्गं । तेह तणी काया स्थिर्यं दंड
क कहइ छइ । अन्नत्थ ऊससिएणं । नीससिएणं खासिएणं । छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वाय
निसग्गेणं । भमलीए । पित्तमुच्छाए ॥१ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं । सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं २ सुहुमे
हिं दिट्ठिसंचालेहिं ३ एवमाइएहिं आगारेहिं । अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अ
रिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ४ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ व्या २७
+ झाणेणं ख्या ॥ पाछलिउं प्रतिज्ञा कीधी काय नउ व्यापार न करउं छोडउं व्यापार कीधइं ते प्रतिज्ञा भाजइ ते

ह तणी केतला आगार मोकला कीजइ छइ । अन्नत्थ ऊससिएणं १ नीससिएणं २ खासिएणं ३ छीएणं
४ जंभाइएणं ५ उड्डुएणं ६ वायनिसग्गेणं भमलीए ८ पित्तमुच्छाए ९ एह नवे पहिली संपदा । अन्नत्था
ऊससिएणं । अन्यत्र उच्छ्वसितात् । अन्यत्र कहीइ टाली किसिउं उच्छ्वसितात् ऊंचउ मुखिइं नासिकाइं
करी ऊंचउ उश्वास लीजइ ते उच्छ्वास कहीइ ते टाली अनेरु व्यापार करिवानउं नियम । ऊसास लेतां
माहरउ काउस्सग्ग मा न भाजइ छइ सिउं भाजइ मत्रा गलिइं आणि वली नीससिएणं । निःश्वसिताद् उ
मुखिइं नासिकाइं करी नीचउ उश्वास मूंकीइ ते श्वास निःश्वास कहीइ तेनीसास मूंकतां काउ
स्सग्ग न भाजइ । अशक्य परिहार तणी पर्मो कला कीधा खासिएणं कासितात् छीएणं
क्षुतात् जंभाइएणं जृंभायत कहीइ बगाई जि वारइं खास छींक बगाई आवइ तिवारइं जी
वरक्षा तणी मुखि हाथ दे तां काउस्सग्ग न भाजइ उ डुएणं उद्गारितात् उद्गार कहीइ डेकार आ
वइ वायनिसग्गेणं वातनिसर्गात् अधोद्वारिइं जे वातप्रवृत्ति हुइं ति वात निसर्ग कहीइ जिवारइं ड
कार अथवा वातप्रवृत्ति करइ तिवारइं जीवरक्षा तणी मुखि द्वारि हाथ दे तां मुख्य पती देवानी जयणा क
रतां काउस्सग्ग न भाजइ । भमलीए भ्रमेः अकस्मात् जे फेर आवइ ते भमलि कहीइ पित्तमूर्छायाः पित्त न
इं प्रकोपिइं करी मूर्छा आवइ ते पित्तमूर्छा कहीइ । भमलि मूर्छा आवती इं बइसी रहिवउं न वइसइ तउ

तउ पिक उपडइ। आत्मविराधना संयमविराधना हुइ। तेहलणी तिहां बइसतां काउस्सग्ग न ला जइ
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं। सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं २ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ३। एहे त्रिहुं पदे बीजी
संपदा सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं। सूक्ष्मेभ्यो अंगसंचारेभ्यः सूक्ष्म जे अंगना संचार रोमालिका ३। तादिक
वेदनाइं करी रोमकंपादिक उपडइ १। सुहुमेहिं सूक्ष्मेभ्यः श्लेष्मसंचारेभ्यः शरीर माहि जे सूक्ष्म श्ले
ष्माना संचार थूंक गिलनादिक हुइं २। सुहुमेहिं दि ट्ठिसंचालेहिं। सूक्ष्मेभ्यो दृष्टिसंचारेभ्यः सू
क्ष्म जे दृष्टिना संचार मेषोन्मेषादिक हुइं ३। एव। माइएहिं १ अभग्गो २ अविराहिउ हुज्ज मे ४
काउस्सग्गो ५। एहे पांचे पदे त्रीजी संपदा ३। एव माइएहिं आगारेहिं: एवमादिकैः आगारैः
एवमादिक जे पाछलि आगार कहिया। ते आ दिक देई बीजा इ आदि शब्द लगइ लेवा ते
केहा बीजा प्रदीपादिकना हुइं जे ईकुती इत्यादिक वस्त्रादिक लेतां न लाजइं। अंदिर मार्जारादि
क आगल करतउ देषी आघेरउ जाइ जिम आगल न हुइं। तथा चोर अथवा धाडि अकस्मात आ
वी अथवा राजान उ कोई फगडउ उपजइ अथवा आपणा पा हुइं अथवा मांत्मादिक हुइं सर्प
वाहिउ। अथवा पलेवणा लागउ अथवा घरनी तीतिषडइ हुती जाणी इत्यादिक आनेरइ जिहां
विलंब करतां घणी धर्मनी हाणि पडइ तिहां अणपूगइ काउस्सग्ग पारतां भाजइ नहीं इत्यादिक जे १८

आगार कहीइं। अपवाद तेहे करी अभग्गो अविराहिउ अभग्नो अविराधित: एहवा व्यापार करतां
अनय्ग्र सर्वथा भागउं नहीं। अविराहिउ थोडु नइ विराधिउ नहीं हुज्ज मे काउस्सग्गो। इसिउ कायोत्स
र्ग मुझ हुइं हुयो। इव काउस्सग्ग नी वेला आंकइ ठइ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारे
णं न पारेमि ४। एहे बिहुं पदे चउथी संपद ॥४॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पा
यावदर्हतां भगवतां नमस्कारेण ना लगइ। भ गवंत जे मूलरूप अरिहंत तेहनइ नमस्कारि इ
नमो अरिहंताणं इसिउं अक्षर वइं करी। न पा रेमि काउस्सग्ग जां लगइ पारउं नहीं ताव
कायं १ ठाणेणं २ मोणेणं ३ झाणेणं ४ अप्पाणं वे ।५ वोसिरामि ५। एहे छए पदे करी पांचमी संप
दा। ताव कायं ताव कायं ताव कहीइ इतालगइ ग णेणं स्थानेन कलइं रहि वइं करी मोणेणं मौने
न मौन निइं कहीइ। वचन रूंधवइ करी झाणेणं ध्यानेन ध्यानम कहीइ धर्मनइ विषइ मनन उ स्थिर
पणउ तेणइ करी अप्पाणं वोसिरामि आत्मानं व्युत्सृजामि अप्पाणं कहीइ आपणउ काय क
हीइ देह तेह वोसिरामि कहीइ वोसिरावउं इणइं काउस्सग्ग नइ सूत्रि अनइ अक्षर सिएणे ध कनुक्र
रेंती अप्पाणं वोसिरामि ॥ लगइ २ पद ५ संपद ८ उढ सउ २५० अक्षर ते माहि १३ तारा अक्षर घा

कतां रइं लघु अक्षर धरि आवइ तां काउसग्ग माहिं इ लोगस्स उज्जोयगरे नो पंचवीस पद चींतवइ
चंदेसु निम्मलयरा लगइ इं एवं काउसग्ग ना उगणीस दोष १९ लिषीइं छइं घोडानी परिइं एक इं
पगि सयर न भला रदेइ बीजउ पग वांकउ करी रहइ १ वायइं आहणी वेलडीनी परिइं कूणि
कूणि । नरह न पर हइं डोलइ २ थांभानइं अथवा भीतिनइं आधारिं अडी काउसग्गि रहइ ३ उ
पिलिइं मालि मस्तक आडाची रहइ ४ जिम सील डी पहिरण रहित कुंती आगि लिइं विलागि
हाथ इं जि आडि अ देइ । तिम काउसग्ग करता । ५ बे हाथ आगलि आणइं ५ नव परिणीत
वधूनी परिइं नीचउ माथउं करइ ६ अ वालि । घाघरानी परिइं पग आति बिरला अथवा
अति मिलिया करइ । जिनमुद्रा माहिइं से आंतरउं कहिउं छइ ते तलउं न करइ नातिघि कउं चि
कं अंगुले हेठवउं अनइ आनुघकउ चिउं अंगुले ऊप हिरउ चोलपट पहिरवउ कहिउ छइ । तिम न
करइ । किंउ नातिक्रपरि [illegible] पहिरण उंपहिरी काउसग्ग करइ ९ डांसमसादिकि इं करी हद
य हांकी काउस्सग्ग करइ १० [illegible] नी परिइं पान्ही बिन्हइ मेलीनइ आगलि बे पग विस्तारइ अ
थवा अंगूठा बिन्हइ मेलीनइ पाछिलिइं बे पग विस्तारइ ११ संयती महासतीनी परिइं बे हू स्कंध ऊपरि १९

वस्त्र ओढइ । जेहलणी दक्षिण स्कंध ऊघाडउ कीधउ होइ इ जिनेहलणी एदोष १२ घोडाना चउकडा
नी परिइं रजोहरण आगलि आडउं मांहीनइं काउस्सग्ग करइ १३ काउस्सग्ग माहि वायसानी परिइं आं
षिना डोला उरइ परइ फेरवइ १४ कउठनी परिइं पहिरणउं एकठउं पीडउ करी चिउं पगि चि चालि
इं चांपइ १५ ॥ भूताविष्टनी परि मस्तक चलीश कंपावइ १६ [illegible] आगलि करतउ हुंकारइ मूकनी
परिइं हूं हूं करइ १७ काउस्सग्ग माहि सझाय गु णतउ हूं तउं मदिरानां भांडानी परिइं बुडबुड
ाट करइ १८ वानरनी परिइं होठ हलावइ १९ । सझायनी संख्या करिवानइं कांजि इं आंगु
ली उपमाली अथवा भमुह हलावइ १९ ॥ ए हगुणीस दोषमांहि आवम उ दोष श्रावक
कूइं लागइ । तथा आवम उ [illegible] पारम उ [illegible] । महासती रहिं न लागइ । आ विचारं त्रि
णि एहि जिअ नइ वली बहु उ वधूनउ दोष पच्यारि । दोष न लागइ काउस्सग्ग पारीनइ प्रकट लोगस्स उ
ज्जोयगरे पूरी कहइ ॥ इ ॥ लोगस्स उज्जोयगरे सूत्र आगलि वखाणी सिइं पछइ खमासमणो देइ गमणा
गमण आलोइइ । एतलइं इरियावही पडिक्कमिवउं संपूर्ण हुउं । अनेक घोर पाप इरियावही पडिक्क
मतां क्षय न इ विशेषिइं करी विलयि आइं । जिम गइ मुत्तिमल रायनइ छे दणाहार । श्री कालकाचार्य श्री

संघ नइ श्री संगाबक न्हालिप्रायश्चित्तमागवा आव्या छंता। हरि आवही पडिक्कमता मिछामि दुक्क
डदेतां छंडि सूधा। इसिउं सांभली दु तेहनी कथा प्रसिद्ध केतला रहइं एह अक्षर नइं ध्यानि इं क
री केवलज्ञान कपजइ। अइमुत्ता चेलानी परिइं॥ अथ कथा॥ ॥पोलासपुर नगर विजयराजा श्रीदे
वी राणी। अतिमुक्त कुमार बेटउ। तिहां एकवार स्वामी श्री महावीर नगरि बाहिरि समोसरि
आ। छट्ठनइ पारणइ श्री गौतम स्वामि मध्यानक ॥तिनगरमाहि विहरवा पाउधारिआ। उच्च
रसनइं आलकिइं अइमुत्तउ सेरीमाहि रम। तइं दीठा पूछि उ तुम्हे कुण। किसिइं काजि
जिइं। अत्र आव्या छउ। श्री गौतम कहइ वच्छ श्रमण महात्मा तिह्वां छत्तीस गणी नगर माहि हिं
डउं छउं अम्ह नइ कहइ। तउ माहरइ घरि आविउ निरवद्य मोदकादिक विहरावीया। पाग पा
ऊ चतां पूछइ। तुम्हे किहांडा। सिउं श्री गौतम कहइ श्री महावीरवन माहि छइ। तिहां जासिउं पेल
नउ मक्करि उ कहइ। य किसिउं तुम्हारइ वली गुरु छइं। ते किस्या छइ। एकवार हुं तिहां ले चालि आविसु
इसिउं कही। श्री गौतम चिसक्या। आपणापइं निवरइ श्री महावीर वांदिवा गिउ स्वामीइं योग्य जाणी नइ ध
र्मदेशना कीधी। वच्छ अतिमुक्तिक कर्मनी गति महा विषम तीणइं करी जीव रहइं धर्म मार्ग छउ दुर्लभ तत्र इयत

सुलहो विमाणवासो एगच्छत्ताइ मेइणी सुलहा। दुलहो पुण जीवाणं जिणिंदवरसासणे बोही॥ रे तेह
तणी वस्त प्रमाद न करिवउ इमनउ जाणीवा नं छं। अजी बालक छउं धर्म करवाना दिहाडा घणा आ
वि सिइं वडपणि धर्म करिसु कां छि ले हतणी जेही हाडर्मजाति वलतउ पाछउं आवि सिइ नहीं लइ
उ लगइ जीवधर्मक रिसु अइं नवीत नउ कांइ इसिउं उपदेस सांभली अइमुत्तउ संसार विरक्त हो
उ। कालेवा चांछतउ स्वामी रहइं कहइं। तितलइं पिता माता रहि मनावी आविउं इसिउं कही पाछउ
घरि गिउं। माता पितारहइं वीनवइ हुं दीक्षा लेसु पेलां कहइं वच्छ दीक्षा अम्हरइ दोहेली
घटइ। तूं रहइं किसी दीक्षा अजी बालक छउ इ थांई जाणइ दीक्षा किसी कहीइं चालक
कहइं। जेह जिउ जाणउं तेह जिन जाणउं। अ। नइ जेह जिन जाणउं तेह जिउ जाणउं पेलाते
अर्थ परीछ इ नहीं वली इ पूछइ। अइमुत्तउ एतल उं जि कहइ। बीज उं कांइ कहइ नहीं पेला जा
णइ हरहइं किसिउं स्ताहिक नउ दोष छइ उं असमाधिधरइ तिवारइं पछइं अर्थ कहि उं सांभलउ
छउं जाणउं जे सही जन्म छउं तउ निश्चइ मरण छइ। पण पतलउं न जाणउं जे कहां अबइ तत्र इसि
उं नजाणउं जीव किस्प कर्म करी सुगति दुर्गति इं प्राम इ पणपतलउं जे निश्चइं आपणइं जिकर्मि इंक
री जीव मुक्ति उडः। खिमप्राइ। बीजा कहिनइं कोधइं कांइ छउ नहीं इसिउं कहि उं पछइ पिता माता

मोहलगइ छत्र रहिराज्या लिषे कचरी आपणा मनना हर्ष धरइं। एकदा हाउ इनं राजपाली बीजइ हदी
हाडइ। अतिमुक्तककुमार मोटइ संवेगइं श्रीमहावीरनइं हाथिइं दीक्षा लीधी। स्थविरकल्पी महा
त्मा रहइं सीषववा आपिउ। क्रियाकलाप सीषइ छइ। एकवार महात्मा साथिइं नगर बाहिरि बाहि
र्भूमिइं आविउ छइ। पहिलइ वर्षाकालि तलावलां पाणी भरियां माहिं लकडीयां बालक पलास
पत्रनां नाव करीनइं तरतां मूंकइ छइ। म्हारी बेड लीतरइ छइ इसिउं वलीइ कहता खेलइं छइं। थे
लाकइं ते देषी बाल्यवयनइ विशेषिइं करी। कहउ तिम करूं पनउं काचली तलावलामाहिं मे
ल्ही षेलइ। मोरी बेडली तरइ छइ इसिउं वलीइ कहइ छइ। तिसिइं थविर महात्मा एह चेष्
टा किउं। वरस किसिउं कांधउं वेला सहित अ...। घा श्रीमहावीरनइं दिवा समवसरणि
गिया इरियावही पडिकमी यांवंदइं दूहवाणा हूं। तास्वामी रहइं वीनवइं भगवन् इस्यां अव्यक्त
बइं वरसना बालक रहिं दीक्षा दीधी। ए मूहंडा जीवनी रक्षा किम करिसिइ हवडां तउ विराधना करइ
छइ। स्वामी कहइं अहो रूषीश्वरो एह चेला रहइं अवज्ञा म करउ। भणावउ सीषवउ। अम्ह पाहिइं
पहरहिं पहिलउं केवलज्ञान रूप जासिइ। पछइ मिच्छामि दुक्कडं देइ महात्मा तिमइ जि चेलानइं वे
यावच्च तणा विधउं करिवा लागा। थोडे जि दीहडे थिविलउ एकादशांगधारी हुउ। महाज्ञाणा गइ छइ च्य डाक्टर भाऊ दाजी ... स्मारक ... MEMORIAL २२

कुसोल मास प्रमाण गुणरत्नसंवत्सर तप कीधउं नवम इ वरसि जातइ तेहं जि महात्मा साथिइं एकवार
वली श्रीमहावीरयां दिवा जाइ छइ। मार्गि तिमइ जि बालक रमतां देषी आपणी बलक्रीडा संभरी मनि
अंदोह धरतउ समोसरणि पहुतउ। अहुरिइ अर्थना भावना करतइ इरियावही पडिकमइ छइ। जिसि
इं दगमट्टी इहं आविउ। तिसिइं सचित्तमाटी अनइ सचित्तपाणीनी विराधना संभारी अनिंदतउ गर्ह
तउ। शुक्लध्याननइं बलिइं क्षपकश्रेणिइं चडी क र्मक्षय रीत काल केवलज्ञान पाम्या। जिनेन्द्र देवता म
होत्सव करिवा आव्या। स्वामीइं महात्मा रहइं दे षाडिउं। अइमुत्तउ नववरस वयनउ धणी केव
लज्ञानी हुयउ नी परिइं अनेक भव्य जीव रूपि आंकमल प्रतिबोधी मोक्षि पहुंतउ। एइरि
आवही मांधसा ननउ फल। इति ईर्यापथिकी कथा। लाबोधसमाप्त ॥७॥ इम इरियावही पडिकमी
खमासमण देइ। इच्छाकारेण संदिसह भगवनुचित्य वंदना करउं। इच्छं। इसिउं कहीनइं दारस्फार महा
र्ष सहित जघन्य तउ। एक बि त्रि गाउ तु रूष्ट अहोत्तरसउ नमस्कार कही। [illegible] सर्वसंग्रह के
तणी जं किंचि नामतित्थं कहइ। जं किंचि नामतित्थं सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं ताइं स
व्वाइं वंदामि। यां किंचिनाम तीर्थ डेरकाइं तीर्थनइं नाम इं छइ। किहां सग्गे पायालि माणुसे लोए। स्वर्गे पा
ताले मानुषे लोके स्वर्गि कहतां ऊर्ध्वलोकि पाताल कहतां अधोलोकि मनुष्यलोकि कहतां तिर्यग्लो

लोकिजाइं जिणबिंबाइं । यानि जिनबिंबानि जे कोइ जिनना बिंब छइ । ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ ता निस
र्वाणि वांदितेस सर्वइं हूं वांदउं । इसिउं कही पंचांगप्रणाम करी । बइठउ थइ । वे ढीचणा नु भुइं लगाडि
हाथ योगमुद्रा साचवतउ ॥ ५ ॥ श्री ॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं इत्यादि शक्रस्तवदंडक पढइ इंद्र
जिवारइं परमेश्वरनउं स्तवइ । तिवारइं एनमुत्थुणं जि कहइ तउ स्तवइ । इसी रीतिं छइ । ते हतणी
एह नाम शक्रस्तव कन्हीइ । तथा नमुत्थुणं कहइ । तां केतला इसिउं कहइ । जेडा वउ जानु कंच
त्रे कीजइ । जिम एणइ जानु भुइं लगाडइ । भूणाउ करइ मही ॥ यतउक्तं ॥ श्री महानिशीथ छट्ठी
याध्ययने ॥ जिणपडिमाविणिवेसियनयणेण विरइयवरकमलजलिणा भूमिनिहि
तयजाणुणा सक्कत्थवपाढिअव्वो । इति । जे श्री कल्प माहिं इहां कहिउं । श्री महावीर नइ वांदवान
इ अधिकारि वामजाणुं अंचेइ दाहिणंजाणुं धरणि तलं सि कट्टु इसिउं कहिउं छइ । तिहां इंद्र
वाउ राईलतणी उत्तरंगप्रणाम करइ । इसिउं कारणइ कहिउं छइ । तथा छट्ठा श्री ज्ञाताधर्मकथांगमा
हि धर्मरुचिमहात्मा नइं । नागश्री नउं दीधउं विषमय कडूउं तुंबडउं परिठवतां घणी विराधना देखी आ
पणपइं जि आहार लीधउं तेहनइ विषइं परिणमतइं छतइं देहनी शक्तिं जि पर्यंकासनि वइसी
जि नमुत्थुणं कहिउं । इसिउं कारणि जाणिवउं । हवइ नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं । आइगराणं २२

तित्थयराणं । सयंसंबुद्धाणं । ३ । पुरिसुत्तमाणं । पुरिससीहाणं । पुरिसवरपुंडरीआणं । पुरिसवरगं
धहत्थीणं । ४ । लोगुत्तमाणं । लोगनाहाणं । लोगहियाणं । लोगपईवाणं । लोगपज्जोअगराणं । ५ । अभय
दयाणं । चक्खुदयाणं । मग्गदयाणं । सरणदयाणं । बोहिदयाणं । ६ । धम्मदयाणं । धम्मदेसयाणं । धम्मना
यगाणं । धम्मसारहीणं । धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं । ७ । अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं । वियट्ट
छउमाणं । ८ । जिणाणं जावयाणं । तिन्नाणं तारयाणं । बुद्धाणं बोहयाणं । मुत्ताणं मोयगाणं । सव्वन्नूणं ।
सव्वदरिसीणं । सिवमयलमरुअमणंतम । क्खयमव्वाबाह । मपुणरावित्ति । सिद्धिगइना
मधेयं । ठाणंसंपत्ताणं । नमो जिणाणं । जिअ भयाणं । ९ । व्याख्या । नमुत्थुणं अरिहंताणं ।
भगवंताणं । एह बिहुं पदे पहिली संपदा । नमो त्थुणं । नमोऽस्तु णं । णं इसिउं वाक्यालंकार न
इ अर्थि नमस्कार हउ । कहिनइं । अरहंताणं । इहं त्रिणि पाठ छइ पहिलइ पाठि । अर्हन्ति चउ
सठि इंद्रादिकनी कीधी पूजा नइं । अर्हइं योग्य थाइं तउ अरहंत कहीइ । बीजइ पाठि । अरिहंता
णं । अरिहंतेभ्यः । अरि कहीइ रागद्वेषादिक अंतरंग वयरी ते हइं हणइ जी पछइ तउ अरिहं
त कहीइ । त्रीजइ पाठि अरुहंताणं । अरोहद्भ्यः । नरोहइं कर्मबीज दग्ध थया तेणि संसारक्षेत्र माहिं नऊप
जइ । तउ अरुहंत कहीइ । उक्तं च ॥ दग्धे बीजे यथात्यंतं प्रादुर्भवति नांकुरः कर्मबीजे तथा दग्धे न रो

हतित्तवांकुरः। अरिहंत किस्याछइं। भगवंताणं। भगवद्भ्यः। वाकरुई। रूपकीर्त्ति २ लक्ष्मीधर्म्मैश्व
अनइबलद्द। एछद्वंकृइं। भगइ सिवंनाम। एछइवानां अरिहंतमाहि। उत्कृष्टाछइं। तिहंतणीभगवं
तकहीइं। वलीअरिहंतकिस्याछइं। आइगराणं१ तित्थयराणं२ सयंसंबुद्धाणं३ एहेत्रिणपदेबी
जीसंपद। आइगराणं। आदिकरेभ्यः सघलाइ तीर्थंकर आपणाइ तीर्थि सकलसिद्धांतनीआ
दिकरइं। तेहंतणी आदिकर कहीइं। तित्थया राणं तीर्थंकरेभ्यः। तीर्थकहीइ चउविधश्रा
संघ तेहतणी तीर्थंकर कहीइं। सयंसंबुद्धा णं स्वयसंबुद्धेभ्यः। स्वयं कहीइ परोपदेस
पाखइ जिसंबुद्धकहीइं। धर्मनाजाणछइं। ते हतणी स्वयंसंबुद्ध कहीइं। वलीश्रीअ
रिहंतकिस्याछइं। पुरिसुत्तमाणं। पुरिससीहा णं२ पुरिसवरपुंडरीयाणं३ पुरिसवरगं
धहत्थीणं४ एहेत्रिणपादकरीत्रीजीसंपद। पुरि सुत्तमाणं। पुरुषोत्तमेभ्यः। पुरुषकहीइ सर्व
जीवतेहमाहि गुणेकरीउत्तमछइं। अनंताइंसचांतरपरइं। तीर्थंकरनाजीवसघलाइधीरगंभी
रउदारपरोपकारी इत्यादिकगुणसहितजिकइं उपसर्गपरीषहसहइवानइ विषइसीहनीप
रिंसूराछइं तेउपुरुषसिंहकहीइं। पुरिसवरपुंडरीआणं पुरुषवरपुंडरीकेभ्यः। पुरुषमा २२
हिवरप्रधानपुंडरीककहीइ कमल तेहसमानछइं जिमकमलकद्दममाहिं ऊपजइ भोगरू

पियइलेचरीवाधइ पछइ राड्यअनइसोभबेहूवांनां मूंकीदीकालेई अलगारहइं। तेहतणीपु
रुषवरपुंडरीककहीइ। पुरिसवरगंधहत्थीणं। पुरुषवरगंधहस्तिभ्यः। पुरुषमाहिवरप्रधानगंध
हस्तीसमानछइं। जिमगंधहस्तीनइ गंधमात्रइं करीबीजाइसविहुंगजेंद्रनामदगलीजाइं ति
मजिहांस्वामीविहारकरइं तिहांथिकउ चिहुं दिसेपंचवीस २ जोयणामाहि दुर्भिक्षडमरम
रगाई। तिउपद्रवलाजइ। तेहतणी पुरुषवरगंधहस्ती कहीइं। वलीअरिहंत किस्याछइं।
लोगुत्तमाणं१ लोगनाहाणं२ लोगहिआणं३ लोगपईमाणं४ एह पांचेपदेचउथीसंपदा
लोगुत्तमाणं लोकोत्तमेभ्यः। लोककहीइं। भव्यजीवतेहमाहिस्वसत्ताविहुं उत्तमछ
इ। लोगनाहाणं। लोकनाथेभ्यः। इहांलोकक हइतां आसन्नसिद्धिकभव्यजीवहणीचा
तेहनाथकहीइं। योगक्षेमनाकरणहारछइं। ज इआगइधर्मप्राप्तिअनथी। तेहकहइं पमाडइं
छइ। तेयोगकहीइ। अनइजेहधर्मआगइलाधउछइ। तेहरहइं लाधाधर्मनूं कमुरखवइवान
दिइं। मननउं स्थिरपणउंरूपडावइ। तेहक्षेमकहीइ। तेबेहूवांनांस्वामीकरइ। तेहतणीलोकनाथ
कहीइ। लोगहिआणं। लोकहितेभ्यः। इहांलोककहीइ। षट्विधजीवनिकाय। तेहरहइं रक्षादि

कनकरिवइं करी हिव आवइं। लोगपईवाणं। लोकप्रदीपेभ्यः। ईहां लोककहीइं संज्ञियापंचें
द्रियजीव जेहरइं धर्मनी आस्था छइं तेहरइं प्रदीपसमान छइं। जिम प्रदीपनइं तेजिइं करी अं
धकारनासइं तिम स्वामी मोहरूपिआं अंधकारनसाडइं छइं। लोगपज्जोयगराणं लोकप्रद्योत
करेभ्यः ईहां लोक कहतां गणधरजाणिवा ते हप्रतिप्रद्योतकर कहीइं सूर्यसमान छइं
जिम सूर्यनी प्रोडीइं कांतिकरी जगमाहि सघ लेउद्योत हुइ तिम स्वामीनइं उपन्नि इवा
विगमेइ वा धुवेइ वा ए तत्ला त्रिपदी नइं च वनकरी गणधर रहइं एचउडी बुद्धिक
पजइ इं जीणइं नवांइगपार आंगचऊदपूर्व ति वारइं हिरचइं तेहतणी लोकप्रद्योत।
कहीइ वली श्री अरिहंत किस्या छइं अभयद। याणं चक्कुदयाणं २ मग्गदयाणं ३ सरणद
याणं ३ बोहदयाणं ४ एहे पांचे करी पांचमी संपद। अभयदयाणं अभयदयेभ्यः स्वामीनइं दर्शनिइं
करीनवाजीव नांतयताजइं मनह इं समाधिक पजइ तेअभय कहीइं ते दिइं तेहतणी तेअभ
यदय कहीइं चक्कुदयाणं चक्षुर्दायेभ्यः जिम आंधलाभ्रमषहुइं कोआंषिदिइ तिम स्वामी कुमा
र्गमूंकावी जीवरहइं ज्ञानदर्शनचारित्र रत्नत्रयरूप मोक्षनइ मार्गि प्रवर्त्तावइं तेहतणी मार्गद २४
यकहीइ। सरणदयेभ्यः जिम वइरीनइं तइंधूजतेक हिएक छइं

कोएक सरणदिइ तिम दुर्गतिनेल पडताहु इं स्वामी शरण छइं तेहतणी शरणदयाणं कहीइ
बोहिदयाणं बोहिदयेभ्यः बोधि कहीइ श्रीसम्यक्त दिइं आपणा दर्शनमात्र जिणकउ सच्या
जीवहुइं श्रीसम्यक्तनउ परिमाणाम ऊपजावइं तउ बोहिदय कहीइ वली स्वामी किस्या छइ
धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं एहे
पांचे पदे छठी संपदा धम्मदयाणं धर्मदयेभ्यः धर्म बिहुंप्रकारि एक देशविरति बीजी सर्व
विरति तेबि विधधर्म दिइ तेहतणी धर्मदय कहीइ धर्मदेसयाणं धर्मदेशकेभ्यः जि
क्षिस्या योग पजइ इं जीणइं उत्तलउ निर्वह तउ जाणइ तेह हुइ तितलउ जिम महा
त्मानउ अथवा श्रावकनउ धर्म ऊपदिसइं ते हतणी धर्मदेसक कहीइं धम्मनायगा
णं धर्मनायकेभ्यः धर्म स्वामीइं जिआणपइं पा लिउ अनेराहुइं प्रकासिउ धर्मनाफलतीर्थ
करपदवी सिद्धपदवी रूपउ ऊपालहइ तेहतणी धर्मनानायक वाकुर कहीइं धम्मसारही
णं धर्मसारथिभ्यः जिम सारथि आपणा रथ छइ अनइ चषतउ हुइ ऊवटइ जावा न दिइ तिम स्वा
मी आपणा पाइं मार्गि हिंडइ अनइं जेहनां मनघकउ चूकतां हुइ तेहनाम न मार्गि आणइं तेह
…र्थिक कहीइ धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्तिभ्यः धर्मरूपि ब्रह्मवरप्रधा

ता चिह्नं गतिनां। अंतनउ करणहार जे चक्रवर्तीणइं चक्रीवर्त्तइं तेहनणी धर्मवरचउरंत
चक्रवर्ती कहीइं प्राकृतनणी वकारढूकइं आकारढूकइं वली स्वामी किस्या छइं अप्पडिहयव
रनाण दंसणधराणं वियट्टछउमाणं एहे त्रिहुं पदे सातमी संपदा अप्पडिहयवरनाणदंसण
धराणं। अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधरेभ्यः अप्रतिहतक्षायकनणी अपडिहणातो जे ज्ञान
विशेषोपयोगः अनइ दर्शन सामान्योपयोगः ते बेहू धरइ तेहनणी अप्रतिहतवरज्ञानदर्श
नधर कहीइं वियट्टछउमाणं व्यावृत्तछद्मेभ्यः छद्म कहीइ ज्ञानावरणीय१ दर्शनाव
रणीय२ मोहनीय३ अंतराय४ रूप च्यारि घातीयाकर्म ते व्यावृत्तछद्मेभ्यः छद्म क
हीइं ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय२ मोह। नीय४ अंतराय४ रूप च्यारि घातीयाकर्म ते
व्यावृत्त क्षयि गया छइं जेहनइं ते व्यावृत्तछद्म कहीइं वली किस्या छइं जिणाणं जावयाणं
जिनेभ्यो जापकेभ्यः जिन आपणपइं सर्व अंतरंग वयरी जीता छइं अनइ भव्यजीव पाहइं तेहन
णी जापक कहीइं तिन्नाणं तारयाणं तीर्णेभ्यस्तारकेभ्यः तीर्ण आपणपइं स्वामी संसारसमुद्र
तरिआ अनेराह्रइं तारइं तेहनणी तारक कहीइं बुद्धाणं बोहयाणं बुद्धेभ्यः बोधकेभ्यः बु २५
द्ध आपणपइं तत्त्वना जाण हूआ अनेराहइं तत्त्व बूझवइं तउ बोधक कहीइं मुत्ताणं मोअगाणं मु

क्तेभ्यो मोचकेभ्यः मुक्त आपणपइं कर्मपाशथिकउ मूंकाणा अनेराह्रइं मूंकावइं तउ मोचक कही
इं वली किस्या छइं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरूअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति
सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं एहे त्रिहुं पदे नउमी संपदा सव्व
न्नूणं सर्वज्ञेभ्यः सर्व त्रिभुवनमाहि लासूक्ष्म बादर वस्तु जाणइं तउ सर्वज्ञ कहीइं सव्वदरिसीणं
सर्वदर्शिभ्यः सर्ववस्तु प्रत्यक्षनी परिइं देखइं तउ सर्वदर्शी कहीइं शिवमचलमरुजमनंतमक्ष
यमव्याबाधमपुनरावृत्ति सिद्धिगति नाम धेयं स्थानं संप्राप्तेभ्यो नमो जिनेभ्यो जितभयेभ्यः
सिद्धिगतिइं पहुता छइं थोडा कालमाहि। अचवपमिव पहुचि सिद्ध तेहनणी पहुता
जिलेखवाइं ते सिद्धिगतिस्थानक किसिउं छइ। शिव कहीइ सर्वोपद्रवरहित छइ अचल नि
श्चल छइ अरुज सर्वरोगरहित छइं अनंत जिहां। अनंतज्ञान१ अनंतदर्शन२ अनंतवीर्य३ अनं
तसुख४ रूप च्यारि अनंतां छइं तेहनणी अनंत कहीइं अक्षय जेहनउ अनंतइ कालि इं क्षय नथी
अव्याबाधं नहीं इकेकइ आकाशप्रदेशि अनंता सिद्ध छइं पुण लगार व्याबाधा नहीं अमूर्त्तलणी ते
हनणी अव्याबाध कहीइ अपुनरावृत्ति जिहां पाम्यां पछी इं वली संसारमाहि पुनरावृत्ति पाछउं आविवउं न
थी तेहनणी अपुनरावृत्ति कही। एतलइं जे इम कहइं नारायणइं मुक्ति इं जइ ने तस्कनी अनुकंपा लगइ

वलीसंसारमांहि इस अवतारलीधां तेसवी हूउ तेह ऊ आणि चउं । सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेभ्यः
सिद्धिगति इसिउं नामधेय कहीइ नाम छइ जेहनुं एहवुं जे स्थानक लोकाग्ररूप तिहां संप्राप्त पहुतां
छइं नमो जिनेभ्यः इस्यां जिनतीर्थंकरदेव हुइं नमो नमस्कार हुउ । जितभयेभ्यः जीतां सप्त भयना
नय छइं । जेहे जितनय कहीइं तेह जिन हुइं नमो नमस्कार हुउ । एह श्री शक्रस्तव माहि अधिकवि
द्या मंत्र गोपव्यां छइं गुरुनइ आम्नाइं जाणीइं । एह श्री शक्रस्तव माहि ३३ पद संपद २४ अक्षर ते
हमांहि ३५ तारी अक्षर थाकता २३ लघु अक्षर यतलइं समोसरणि बइठा विहरमाण तीर्थं
करस्तवि या रूप पहिलउ अधिकार हूउ । १ तलइं शक्रस्तव सूत्र गणधरदेवनउं की
धउं । हवइ हुआ छइ ते जे तीर्थंकर नांदलघाडां तेह इं वंदनीय जिम श्री तरते इ रिइं श्री महावी
र नउ जीव मरीचिमइ त वि वांद्या उ ते हलवणी हूया हंति । अनइ वर्त्तमान तीर्थंकर वांदिवा नइं कां
जिइं पूर्वाचार्यनी कीधी ए गाथा शक्रस्तवनइं छेहडइ पढीइ जे अ अईआ सिद्धा जे अ भविस्संति णा
गए कालि ये वलविष्यंत्यनागते काले अनागत आवतइ कालि जे तीर्थंकर थासिइं । संपइ अ वट्टमाणा
संप्रति वर्त्तमानाः सांप्रत कालि वर्त्तमान चउवीसी श्री ऋषभ प्रमुख तीर्थंकर हूआ । अथवा महाविदेह
क्षेत्रि वीस विहरमाण तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामि प्रमुख जयवंता छइं ते वर्त्तमान कहीइ सव्वे ति विहेण २६

MEMORIAL

वंदामि सव्वे त्रिविधेन वंदे । ते सघलाइ त्रिहुं कालना तीर्थंकर त्रिविध मन वचन कायि करी वांदउं ईण
इं गाथाइं ३५ अक्षर पाछिला सहित सघलइ २९७ अक्षर प्रमाण । यतलइं हुया हंति वांदिवानउ बीज
उ अधिकार । २ इति शक्रस्तव बालावबोधः समाप्तः ॥छ॥ श्री ॥ पछइ पंचांगप्रणाम करी कलाघइ पंगे
जिनमुद्रा हाथे योगमुद्रा साचवतउं चैत्यस्तव दंडक पढइ ॥छ॥ श्री ॥ अरिहंत चेईआणं करेमि का
उस्सग्गं । वंदणवत्तिआए पूअणवत्तीआए स क्कारवत्तिआए समाणवत्तिआए बोहिलाभव
त्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धि इए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि का
उस्सग्गं ॥३ व्याख्या । अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं । ए बिहुं पदे पहिली संपद ।
अर्हच्चैत्यानां करेमि कायोत्सर्गं अरिहंत तीर्थं करदेवना जे चैत्य प्रतिमा छइं तेह हुइं काउस्स
ग्ग करउं छउं । किस्या काणी ते कारण कहइ छइ वंद णवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए
समाणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ६ ए छ पदे बीजी संपद वंदणवत्ति
आए वंदनप्रत्ययं वंदन कहीइ त्रिधा अभिहिं प्रणाम नमस्कार करवउं तेह प्रत्यय तेह निमित्त जे पुण्य
ए मेश्वर वांदतां फल हुइं ते पुण्य काउस्सग्ग करतां मुझ हउ इसिउ भाव प्राकृत तणी वत्तिआए थिन
पागलि पंच पदे जाणिवउं । पूअणवत्तिआए पूजनप्रत्ययं पूजन फूल चंदनादिके करी सजा

…उं। तेह प्रत्ययसाधार्थ सघलेयहिलापदनी परिइं। सक्कारवत्तिआए। सत्कारप्रत्ययं सत्कारकहीइ वं
…त्र आलरणादिकनी पूजा तेह निमित्त इंई। शिष्य पूछइ। भगवन् जिम पूअणवत्तिआए सक्कारवत्ति
आए कहतां पूजा सत्कारनां फल प्रार्थइं छइ तिम पूजा सत्कार इ जि कांइ नीपजइ। गुरु कहइ। पुष्पा
दिकनी पूजा संयमविराधना हेतु भणी कृषिरहइं करिवा अयोग्य सावद्यना करणहार ग्रहस्थइं जि
कुइं करिवा आचइ। तेहभणी एह द्रव्यपूजा अप्रधान द्रव्यपूजा नउ फल इस्युं कह्युं छइ बारमा देवलो
कइ जि लागइ कुण तावपूजा पुण निःफल कथं मिहेउ जिणभणी रूषइ जुक्कइं। अनइ ग्रहस्थ
इ कुइं करिवायोग्य तेह भणी प्रधान तेहनउं फल अंतर्मुहूर्त्त मात्र माहि मोक्ष लगइं दु
इं यइ कां॥ उक्कोसं दव्वथुयं आराहियजाइ अचुयं जाव ताव भवइ पुण पावइ अंतमुहुत्ति
णमिव्वाणं ॥२॥ शिष्य॥ जइ पुष्पादिकपूजा सावद्य। छइ तउ ग्रहस्थइ कांइं वली कीजीइ छइ। गुरु कहइ
इहां कूआनउ दृष्टांत॥ जिम कूआ खणतां प्रयास कुइं तृषा लागइ मल लिइं खरडाइं जीइं पुण पा
णीनी कल्पी पूर्ण्विइं खरडाणहार कुइं तथा अनेराइ लोकना ग्रातसहरं … प्रयास हूआ सफल कीटइं
तिम पूजा करतां कांई सावद्य लागइं छइ पुण पूजा कीधी सुचिइ ते दूषतां धणी कुइं अनेराई स २७
व्य जीव कुइं कल्याण ऊपजइ छइ तीणइं करी सर्व पाप धोईआई जाइं। तेह भणी जीणइं सर्वसावद्य

मूक्यां न कुइं तेह कुइं एसावद्य करतां दोष नहीं १ शिष्य। भगवन् जउ सावद्य भणी कृषि कुइं द्रव्य
पूजा करिवा नावइं तउ तेहनां फल कांई प्रार्थइ छइ। गुरु। माहात्मा कुइं द्रव्यपूजा स्वयं करिवानउ।
निषेध छइ। पुण उपदेश देतां करावि वउं तथा विशिष्ट पूजा देषी हर्ष ऊपजइ वइं करी अनुमति
पण छइ महात्मा कुइं कुइ छइ। तेह भणी पूजा फल प्रार्थना करतां कांई दोष नहीं। सम्माणवत्तिआ
ए। सन्मानप्रत्ययं सन्मान कहीइ स्तवन स्तोत्रक रीगुणनउं रूचिवउं। तेह निमित्त काउस्सग्ग क
रउं छउं। को कहिसिइ पूजा सत्कार सन्माननां फल कांइं प्रार्थइं छइ तेह भणी कहइ। बोहि
लाभवत्तिआए। बोहिलाभ कहीइ। श्री जिनधर्मनी प्राप्ति। आवितइ भवि हुं श्री जिनधर्म
लहिजिउं। तेह भणी को कहिसिइ जिनधर्मनी प्रार्थना कांइं करउ छउ। तेह भणी कहइ छइ।
निरुवसग्गवत्तिआए। निरुपसर्गप्रत्ययं। जिहां जन्मजरामरणादिक सर्व उपसर्ग टाल्या। तेह नि
रुपसर्ग ग्राष्ठिइं मोक्ष कहीइ। तेह निमित्त स्तवप काउस्सग्ग कीधउं कां तउ उ जे हेकरा सफल थाइ
ते कहइ छइं। सद्धाए १ मेहाए २ धिईए ३ धारणाए ४ अणुप्पेहाए ५ वड्ढमाणीए ६ ठामि काउस्सग्गं
…हेसा ते पदे श्राद्धी संपदा। सद्धाए। श्रद्धाया श्रद्धा इं वासना इं करउं छउं कहिनइं वलात्कारिइं करत
…त्री। मेहाए। मेधया। मेधा इं रूडा वेरू आनउ फलाफल जाणी करउं छउं लोलिइं अथवा रागद्वे

करीनघीकरतउ। धारणाए धारणाया। अरहंतनागुणहीआमाहिधरतउ करउं छउं। मनपणइ
॥घीकरतउं। अणुप्पेहाए अनुप्रेक्षाया। अरिहंतनागुण जिननं वली २ चीतवतउ तेअनुप्रेक्षाक
हीइं। तीणइं करउं छउं। अनेरुं कांइं चींतवतउनघीकरतउ श्रद्धा मेधा धृति धारणा अनुप्रेक्षाए पां
चइ किस्या छइं। वड्ढमाणीए वर्द्धमानया। भावनइं विशेषिइं करी। श्रद्धा मेधादिक पांचइ बोल चडि
वंता छइ। एहवे कारणे करी गामि काउस्सग्गं। तिष्ठामि कायोत्सर्गं काउस्सग्ग करउं छउं। एणइं चैत्य
स्तवदंडकि २७ पद ३ संपदा ८ अक्षर तेह माहि २६ सारी घाकता ७२ लघुअक्षर एहन
इ छेहडइ अन्नत्थुससिएणं इत्यादिका उस्सग्गदंडक पढीइ। पछइ तेह जिणक
प्रासादना स्थापनाईत वांदिवानउ त्रीजउ अधिकार॥ ॥काउस्सग्गमाहि नवकार कहीइ
नमो अरिहंताणं कहतां पारइ। एकला देववांदतां कहइं पछि थुइ घणा साथि हुइं देववांदतां
इं तउ बीजउ काउस्सग्ग जि रहइ। एकका उस्सग्ग पारी कहइ। नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसा
धुभ्यः। अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु एह पांचइं परमेष्ठिकहइं नमो नमस्कार हउ। पछइ
उत्कृष्ट पूर्वमाहि लउं। इसिउं प्रघोष छइ। तिहलगी स्त्रीनइं बोलवउं नहीं। पछइ तेह जिप्रासादमूलनाय
कनी स्तुति कहीइ। केतलाइ काउस्सग्ग पारयाप्नविइं थुइ कहिवी नमानइं। ते सिद्धांत विरुद्ध जाणिवउ २८

जे हसणी श्रीउपदेशमालामाहि कहिन छइं। १ वंदइ न सनउ कालं पिचेइ आइंघ यथुई परमो इ
हमाहि। थुई कहतां डे काउस्सग्ग ऊपरि थुई कहीइ तेहारणे चीइ सिउकल्पि कावृत्तिमाहि व
खाणिउं छइ। अनेघिकू श्रीहरिभद्रसूरिकृत ललितविस्तरावृत्त्यादिक आगम माहि थुइ कहि
वी नामि शकही छइ॥ एवसुखो बारअ नइप्रसिद्ध तणी समसंतताषाम यसंसारदावा थुई वखा
णी छइ। ॥श्री॥ संसारदावानलदाहनीरं संमोहधूलीहरणे समीरं मायारसादारणसार
सीरं नमामि वीरं गिरिसारधीरं॥१ नमामि वीरं। श्रीमहावीर हउं नमस्कार करउं स्वामी किसि
उ छइ। संसाररूपिया दावानल तेहना दाह नइ टालवानइ विषइ नीर कहीइ पा
णी तेह समान छइ॥ संमोह॥ संमोह कहीइ। अज्ञानरूपिणी रसा तेहना दारण
विदारिवा नइ विषइ सार तीक्ष्ण सीर हलसमान छइ। गिरिसारया। गिरि माहि सार प्रधान पर्व
त इं मेरुपर्वत तेहनी परि धीर निश्चल छइ। इस्या श्रीमहावीर प्रति हउं नमस्कार करउं॥१॥ इति वीर
स्तव बालावबोधः॥ १ ॥ पहिली थुइ कही बीजी थुई वली वेहा यथायोगमुद्रा इं लोगस्सउज्जोअ
गर कहीइ। एहमाहि वर्त्तमान चउवीस जिननाम लेइ स्तव्या छइं। तेहभणी चउवीशतिस्तवक

हीइ॥७॥श्री॥लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे अरिहंते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली
१ लोगस्स उज्जोयगरे लोकस्य उद्योतकरान् लोक पंचास्तिकायरूप ते प्रइं केवलज्ञानि
इं करी उद्योतना करणहार छइं धम्मतित्थयरे धर्मतीर्थंकरान् धर्ममय जे तीर्थ करइ चतुर्विध
श्री संघ तेहना करणहार प्रवर्त्तावणहार छइं जि। णे जिना नूरागादिक वइरी जेहे जीता छ
इं अरिहंते कित्तइस्सं अर्हंतः कीर्तयिष्ये॥ का अरिहंत तेहनूं कीर्त्तिसु नाम लेइसु वि
सु चउवीसंपि केवली चतुर्विंशतिमपि केव लिनः चउवीसइ परमेश्वर जे केव
लीज्ञानी छइ। अपिशब्द कहतां ऐरवत क्षेत्रि म हाविदेह क्षेत्रि छइ। तेहनूं स्तवन करुं
॥७॥श्री॥ एव अनुक्रमिइं नाम त्रिहुं गाथा एक कहइ छइ॥७॥उसभमजियं च वंदे संभवमभि
नंदणं च सुमइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे॥२॥ ऋषभमजितं च वंदे संभवमभिनंद
नं च सुमतिं च पद्मप्रभं सुपार्श्वं जिनं च चंद्रप्रभं वंदे ऋषभ अनइ अजित हूं वांदउं। इत्यादिक अ
र्थ सुगम छइं। हवइं तीर्थंकरनां नाम जिना अर्थ कहीइं छइ। बीजा तीर्थंकरनी माता चउद स्वप्न प्रथमु
रिगा जे देखइ मरुदेवा स्वामिनीइं पहिलउं वृषभ दीठउं तथा बिहुं उरु ऊपरि वृषभनउं आका २५

रहुं तउं। तिहं तणी श्री आदिनाथ ऋषभ इसउं नाम॥१॥ सारिपासि रमतां जितसत्रु राजाइं। विजयाराणी जी
पी नसकी गर्भ तेनइं प्रभाविइं तउ श्री अजित नाम॥२॥ परमेश्वर गर्भि हूंतइं दुर्भिक्ष मात्रि अधिकउं धान्य नीपन
उं संभव निष्पत्ति हुई तउ श्री संभवनाम॥३॥ गर्भि एक ताल गइ स्वामी इंद्रियवली२ अभिनंदउ प्रसंसि
उं तउ श्री अभिनंदननाम॥४॥ गर्भि हूंतइ स्वामीनी माताराणी शोभनमति बुधि करइ। बिहुं सउकि नउ झग
डउ कि मइं नकुं नउ ताजउ तनिं तां जिहां तिहां तणी सुमतिनाथ अत्र कथा॥श्री॥ एक वणिक छइ
तेहनइ बि कलत्र एक नइ बेटउ छइ एक नइ वांझि बेटा प्रति बेहूं संभालइं ताणइं करी बेटउ
कांई विशेष न लहइ आ माहरी माता हु छइ आनही एकवार ते वणिक सकुटुंब श्री सुम
तिनाथनी जन्मभूमिइं कोसलाउरि नगरि आ। विउं अकस्मात्परलोक हूउं बिहुं सउकि झग
डउ लागउ एक कहइ बेटउ माहरउं हूं घ। खातनी धणी आणी बीजी कहइ माहरउ बेटउ हूं
घरवातनी धणी आणी बेटउ थभिं कांई जाणइ नहीं। झगडउ राउलगइ आविउ तउ निवेलइ नहीं
पछइ श्री सुमतिनाथनी माता इ सुमंगलादेवी राणीइं बिहूं बोलावी कहिउं कता वली मधा न हवडां हूं
सगर्भि छउं माहरउ बेटउ योवनवय प्राप्त हूउ आपविइं आ अशोक वृक्ष हेठि बइसी उम्हार झगडउ
चुकविसिइ उम्हे तेतलइं आपणइ खाउ पीउ। तिसिइं कूडी माइं चींतवीउं नलउं तां एतला दिवस लाधा।

लीकांइ घाइ लागउं। तेजाणउं लागी। इसिउं वीतची पेलीइ मानिउं। तिसिइं राणीइं जाणिउं सही
पडूडी। तिनिढ्ढोटीमूंकी बीडी कइ घरचा मसर्व आपी॥६॥ ॥पउमप्पहं समरतं पणइं माताक्क
इं पद्मशयनी यसूअवानउडोहलउकपनउ तेदेवताइं पूरिउं अनइ परमेश्वरनासइरनीकां॥
तिपद्मनी परिइं राती छइं। तउपद्मनाम६ गर्भिं ब्रतइ माताना बेहू पासां सुवर्ण वर्ण सुकुमाहूआ।
तउ सुपार्श्वनाम॥७ जिणं च चंदप्पहं चंदे गर्भि ब्रतइ माताक्क इ आसोइ पूर्णिमानउ चंद्रमंडल
पीवानउ डोहलउ कपनउ अनइ स्वामीना देहनी कांति चंद्रमानी परिइं उज्वल तेहलणी चं
द्रप्रभनाम ८ सुविहिं च पुष्फदंतं सीयल सिज्जंस वासुपूज्जं च विमलमणंतं च जिणं धम्मं
संतिं च वंदामि॥३ सुविधिं च पुष्फदंतं शीतल श्रेयांसं च वासुपूज्यं च विमलमनंतं च जिनं धर्मं
शांतिं च वंदामि॥३ गर्भि ब्रतइ मातासर्वविधिनइ विषइ कुशल हूई तेहलणी सुविधिनाम पुष्प
दंत बीजउं नाम॥९ दृढरथराजा पिताक्क इं पित्तनउ दाहज्वररोग हंतउ सविहुं औषध मूंकिउ तिसि
इं गर्भि ब्रतइ राणीना हाथनइ स्पर्शिइं तेहदाघज्वर ग्यामिउ राजानउ देह शीतलहूउ तउ शीतल
नाम॥१०॥ विष्णुराजानइ पिउहक्रमागत एकदेवताधिष्ठितशय्या देहसमाधिहू जाती जिकोतेहक्क २०
इ घोडा इ अवज्ञा करतउ तिमरतउ तिसिइं गर्भि ब्रतइ राणीक्क इं शय्याइं सूअवानउ डोहलउ क

पनउ राणी इं तिहां जइ डोते तलइं क्रम परिपगची धउ तेऊ ष्टदेवता आरडि मूंकती नाची। अनइ श्रे
यकल्याणहूउ। तेहलणी सिज्जंसनाम संस्कृति इं श्रेयांस कचकहीइं ११ गर्भि ब्रतइ इंद्रिइं व
ली२ वसुरत्ननी वृष्टि इं करी पूजा कीधी तथा वसुपूज्यनारायनउ चेटउं तेहलणी वासुपूज्य
नाम१२ गर्भि ब्रतइं माता तणउं देह अनइ बुद्धि बेहूवानां विमल निर्मल हूआं तेहलणी विम
लनाम १३ गर्भि ब्रतइ माता पिताइ रत्न खचित। मातदीठी तेहनउ अंत छेहडउ नदीठउ
तेहलणी अनंतनाम१४ गर्भि ब्रतइं माता दानादिक धर्म परहूई तउ श्रीधर्मनाम१५ देस्त
नगपुरि आगमरगी नउ उपद्रव कूं तउ स्वामी गर्भि अवतरिइं तेशांतिहूइ तउ श्री
शांतिनाम१६ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं पासं त
ह वद्धमाणं च॥७ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुनिसुव्रतं नमिं च वंदामि रिष्टनेमिं पार्श्वं तथा वर्द्धमा
नं च१८ गर्भि ब्रतइं माताइं स्वप्न रत्नमय कुंथु कदीठ स्तूपस्वप्नमाहि दीठउ तउ श्रीकुंथुनाम१७॥
गर्भि ब्रतइं माताइं सर्व रत्नमय चक्रनउ आरउ दीठउ स्वप्नमाहि तेहलणी श्री अरनाम१८ गर्भि ब्रतइं
माताक्क इं बइ ऋतुना मालपुष्पनी शय्यानउ डोहलउ देवताइं पूरिउं तउ श्रीमल्लिनाम१९ गर्भि

तइं मातामुनिमहात्मानी परिइं सुव्रतव्रतनी पालणहारि हूई । तेहतणी श्रीमुनिसुव्रत नाम २०।
परमेश्वर गर्भि छतइं मिथिलानगरी सबलसीमालराजाए आवी वीटी विजयराजा आकुलव्याकु
लचित्त निमित्तिनइं पूछिउं । कहिउं वप्रादेवी राणी सगर्भि छतइं । तेऊपरि चढइ अट्टालइ चडी वीनइ
तेहनउ दर्शन सविहूं वयरीरायनइं करावउ । रा । आहेतिमइं तिकीधउ । पेला आवी नम्या तिणि
श्रीनमिनाम २१ । गर्भि छतइं माताइं रिष्टरत्नमय नेमि कहीइ चक्रनी धारा आकासि ऊछ
लती स्वप्नमाहि दीठी । तउ श्रीअरिष्टनेमिनाम । अरिष्टनेमि आकारि कहीइ तेमांगली
कतणी २२ । गर्भि छतइं माताइं रात्रिइं अंधकारि सर्प पासइ कहीइ दीठउ । तेतणी श्रीपासनाम
संस्कृतिइं श्रीपार्श्व कहीइ २३ । गर्भि छतइं परमेश्वर हूई श्रीसिद्धार्थराजानइं राज्यधनधान्यादि
क सर्वप्रकारि करी वृद्धिवंत नइं हूउं । तउ श्रीवर्द्धमाननाम श्रीमहावीरनाम देवतानउ दीधउं मं
लगाइंनहीं २४ । एवंमए अभिथुआ विहुयरयमला पहीणजरमरणा चउवीसंपि जिणवरा तित्थ
यरामेपसीयंतु । एवंमया अभिष्टुताः इसी परिमइं अभिथुआ नामपूर्वक स्तव्या परमेश्वर कि
स्या छइं । विहुयरयमला । विधुतरजोमला । रज कहीइ जे हालतां बांधिइं कर्ममल कहिइ

इसी परिमइं अभिथुआ नामपूर्वक स्तव्या परमेश्वर किस्या छइं विहुअरयमला विधुतरजोमला र
ज कहीइं जे हालतां बांधिइं कर्ममल कहीइं निकाचित माठा बांध्या कर्म ते बिहु प्रकारनां कर्म जे
हे विधुत फेडिआ छइं वली किस्या छइं पहीणजरमरणा प्रक्षीणजरामरणाः जेहना क्षय हूआ जरामर
ण प्रक्षीण क्षय गयां छइं चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरामे पसीअंतु चउवीस तीर्थंकर जिनवरा श्री
तीर्थंकरा मे प्रसीदंतु एहवा चउवीस जिनवर तीर्थंकर मझनइं प्रसन्न थाउ यद्यपि स्वा
मी वीतराग छइं ते कहिइं अप्रसन्न अथवा प्रसन्न थाइं नहीं तउ सेवक त्रिधा शुद्धि
इं इम कहतउ हूंतउ वांछित फल लहइ ते हतणी इम कहइ छइ कित्तिअ वंदिअ
महिआ जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरोग बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु छ की
र्तितवंदितमहिताः य एते लोकस्य उत्तमा सिद्धाः । कीर्तित आपणे नामि करी कह्या वंदित म
नवचनकायनी शुद्धिइं स्तव्या महित पुष्पादिके करी पूज्या जे लोक त्रिभुवन माहि उत्तम
सिद्ध कृतकृत्य हूआ ते मझ कुं आरोग बोहिलाभ समाहिवरमुत्तमं दिंतु आरोग बोहिला
भं समाहिवरमुत्तमं ददतु आरोग्य कहीइं सर्वरोगरहित मोक्ष तेहनइं काजिइं बोहिलाभ श्री
सम्यक्त्वनी प्राप्ति अनइ वर प्रधान समाधि मननउ स्वास्थ्य उत्तम सर्वोत्कृष्ट मझ कुं दिउ छ चंदे

सु निम्मयरा । आइच्चेसु अंपयागरा । सागरवरगंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ चंदेसु निर्मलतरा
: चंद्रमापाहिइं गाढा निर्मल छइं कलंकरहिततणी । आदित्येषु अधिकं प्रकाशकरा: आदित्य
पाहिइं अधिक तेजप्रकाशकर छइं सूर्य के तली इं निरंतर जिम्न लोकालोक नउ असंख्यातमउ भा
ग प्रकास इ स्वामी ज्ञानिइं करी संपूर्ण लोकप्रकासइं तेहतणी सागरवरगंभीरा: सागरवरस्वयंभू
रमणसमुद्र तेहनी परिइं गंभीर परीषहोपसर्गैक रीअक्षोभ्य तणी सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु । ७
सिद्ध सकल कर्मक्षयकरी सिद्धिपहुता मउक्ष इं सिद्धि मोक्ष दिउं इणइं चउवीसत्थय पहि
ल तृतीय आदि लगा गाथा सातिछइ २८ पद पदि पदिसंपदा तउ २८ संपद २५६ अक्षर
तेहमाहि २८ सारी घाकता २३८ लघुअक्षर नाम । जिनस्तवचारूप पद्ममृघमृ अधिकार ह
व त्रिभुवननां चैत्य वंदिवा निमित्त काउसग्ग करवा वांछतउ कहइ सव्वलोए अरिहंतचेइआ
णं करेमि काउसग्गं सर्वलोके अर्हच्चैत्यानां करोमि कायोत्सर्गं सर्वलोक ऊर्द्ध्वइं अधोलोक ऊ
र्द्ध्वलोक तिर्यग्लोक कहीइ तेहमाहि जे अरिहंतनां चैत्य प्रतिमारूप छइ त्रिभुवनमाहि आठ को
डि सत्तावन लाष बिसइ बियासी ८५७००२८२ प्रासाद तिहां पनर कोडि सइ बइतालीस कोडि अठ्ठाव ३२
न लाख छत्रीस सहस असी आगा ऊत जिनबिंब छइ तेहनइं वांदिवा निमित्त करेमि काउसग्गं

काउसग्ग करउं छउं । आघनं वंदण वत्ति आए इत्यादि कहीइ ॥ ८ ॥ लावा वनाम सुरदानव मानवेन
चूला विलोल कमलावलि मालितानि । संपूरिता भिनत लोक समीहितानि । कामं नमामि जिनराज पदा
नितानि ॥ १ ॥ कामं पजिनराज परमेश्वर तणां पदकमल हूं नमउं । किस्या छइं साथाप साचिइं करी अ
वमा मन तां जे सुर देवता दानव पाताल वासी देव मानव मनुष्य तेहनां इस्वामी तेहनी चूलामुकु
ट तिहां चिलोल हलहलता जे कमल तेहतणी आवलि श्रेणि तेहे करी मालित पूजित छइं दे
वेंद्रादिक जिचारइं प्रणाम करइं छइं तिवा रइं मुकुटनां कमलस्वामी तिपाम लागइं इसि
उं साव संपूरिताय । अलिन तनमतां लोक नां समीहित वांछित जेहे संपूरियां छइं ॥ ८
स्या परमेश्वर ना पग हूं वांदउं ॥ ८ ॥ चउवास कुण बालाब बोधः ॥ ८ ॥ १ ॥ दवज्ञा णइं करी
सकल पदार्थ जाणी इं छइं ते प्रदीप समान श्री सिद्धांत स्त विजउ छोईइ तेहमाहि पहेली गाथा
इं तेहना प्ररूपक तीर्थंकर देव स्तवइं छइं ॥ ८ ॥ पुक्खरवरदीवड्ढे धाइसंडे अ जंबुद्दीवे अ भर
हेरवय अविदेहे धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ धम्मादिगरे नमंसामि । धर्मादिकरान्नमस्यामि धर्मकहइ
श्री सिद्धांत तेहनी आदि ना करणहार । विहरमाण तीर्थंकर हूं नमंसामि नमस्कार करूं ते किहां रहइ
पुक्खरवरदीवड्ढे पुष्करवरद्वीपार्द्धे पुष्करवरइ सिइं नामिइं द्वीप तेहनइं विचालइ ।

मानुषोत्तरपर्वतनइ पाडिवइं करी विअर्द्ध हूआं छै। तेह नउ जे मानुषोत्तर माहि द्वइं अर्द्ध आवला।
खंडेच कालोअणनइ विस्तारि फिरतउं वलयाकारि छै। तेह माहि तिधाधायइसंडे अधोतकी
षंडेच। धातकी षंडनामिइं बीजउ द्वीप तेह माहि धातकी धाउडी हूइ नो षंड कहीइं। वनघणां
२ छइं तेह तणी द्वीप कहीइं। तेह जि नाम। ते च्यारि लक्षजोअणनइ विस्तारि फिरतउ वलयाका
र छइं। तेह माहि। तथा जंबुद्वीपे च अ जंबूद्वीप। नामिइं पहिलउ द्वीप लक्षयोजनप्रमाणवा
टुलउ स्थालनइ आकारि छइ। पटे त्रिडं द्वीप छइं। तेह माहि किहां २ छइं। भरतैरव
य विदेहे। भरतैरवतविदेहे पांचमेरुच तक्षेत्रे पांच भरतक्षेत्रे पांच महाविदेह
क्षेत्रे तीर्थंकर देव छइं ते वांदउं। पविहरमा णा जिन वांदिवा नइं छइ ते अधिकार छइ। ह
व सिद्धांत स्तवइ छइं। तमतिमिरपडलविद्धंसा। णास्स सुरगणनरिंदमहिअस्स सीमाधरस्स वं
दे पप्फोडिअमोहजालस्स। सीमाधरस्स वंदे सीमा मर्यादा तिहां धरइ राषइ जी
व कहइं आमा गिंवर्त्तिचा मदिइं। तउ सीमाधर कहीइं। श्री सिद्धांत तेहनइं हूं वांदउं। श्री सिद्धांत कि
सिउ छइ। तमतिमिरपडलविद्धंसणास्स। तमस्तिमिरपटलविध्वंसनस्य तम अज्ञान तेह रूपिउं तिमि २३
र अंधकार तेहनो पडल वृंद ते विध्वंसइ विणासइ छइ। सुरगणनरिंदमहिअस्स सुरगणनरेंद्र महित

स्य सुरनागगणसमूह। अनइं नरेंद्र राजा तेहे महित पूजित छइं। पप्फोडिअमोहजालस्स प्रस्फोटिता
मोहजालस्स। मोहरूपिउं जाल जीणइं प्रस्फोटित त्रोडिउं छइ तस्या श्री सिद्धांत कहइं वांदउ छउं। छ
हवइं ए श्री सिद्धांतनइ विषइ प्रमाद न करिवउं। इस्युं कहइ छइं। जाईजरामरणसोगपणास
णस्स कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स धम्मस्स सारमुवल
भ करे पमायं। व्याख्या। सांतिलका छंद। धम्मस्सण धर्म श्री सिद्धांत तेह संसार कहीइ महिमा तेह चलल
जाणी करी कुण प्रमाद करइ। जाण को न करइं। इसिउ भाव। किसिउ छइ। श्री सिद्धांत जाइ
०॥ जन्मजरामरणशोकनउ पणासण फेडणहार छइ। कल्याण कारउं पुष्कर सं
पूरउं। विशाल मोटउं जे सुखसंबंधी उं। ते। हनउं आवह कहीइ करणहार छइ। देवदा
णव देवदानव नरेंद्र नागगण समूह तेहे अर्चित पूजित छइं। एहवा श्री सिद्धांतनइ विषइ प्रमा
द करतउ जीव ज्ञानावरणी कर्म महाविषम बांधइ। मासतुसानी परिइं। अत्र कथा। गंगानइ तटि
बिलाई वसता ते देवदारुला नीधी पकवउ जूअ कतह ऊतउ। आचार्य पदवी थापिउं पांचसइं महात्मा तेहक
न्हइ घे सेल उदीसस्त्र अर्थनी वाचना लिइ रात्रिइं वली चींतइं संदेह पूछइं। आचार्य अहोरात्रि मा
हि किचार इं वीसाम उं लेवा निद्रा करिवा न लहइं मनउ डइ २ ताग उं तेहना बीजा नाई कहं मूरखतणी को

कांई पूछइ कां बइ नहीं। समाधि इं दीहाडा काढइ। ते देषी उल्लिखु। अल्प नउ गाहिल उचीनव
इ। आहा धन्य एमाहरइ लाडि डोकइं ज्ञान रहित तणो कोकचाट इनही। ह्व अल्प गाम ने जेडा ण
वानइं दो पिइं रात्रि दीस इमकट थीउं बउ। तउ कहिइं। सुभाषित रूइ उं कहिउं। यथा। मूरखत्वं हि
सखे ममापि रुचितं तस्मिन् यदष्टौ गुणा। निश्चिंतो बहु भोजनो ऽत्रपमना नक्तं दिवा शायिकः
कार्याकार्य विचारणांध बधिरो मानापमाने समः। प्रायेणामय वर्जितो दृढवपुः मूर्खः।
सुखं जीवति। १ घणइ सीतावनानमावइं य था। ज्ञानाशास्त्र सुभाषितामृत रसैः श्रोत्रोत्स
वं कुर्वतां येषां यांति दिनानि पंडितजनव्या यामखिन्नात्मनां। तेषां जन्म च जीवितं च स
फलं तैरेव भूर्भूषिता। शेषैः किं पशुवद्विवेक विकलैर्भूभारभूतैर्नरैः॥ २ इम ज्ञानक्रूपरि
अलावडिं चीतवतइ तीणइं ज्ञानावरणीय कर्म बांधिउं। ते पाप आलोयइं जिम रीदेवलो
कि गिउं दीक्षा न इश्या बिइं। तिहांथी च्यवी आली वनइ घरि बेटउ हूउ। माधी त्रेपरणावि उ ते
हनइ पांच बेटी हूई। एकवार श्रावकइ काढीइं तरी नमरस णी धींची वाचालिउ ते बेटी षेडि बाबर
सारी बइ सा धिंइ बीजो घणा श्रावकइ करइं। तेहमा आहारे ते कन्यानउ रूप देषी व्यामूढ धिका कव
टइं गाढुं खेड वाल्ला गां गाढा लागी विलखा थिकी कन्या माकहइं एश्रावकटा कन्या एहनउ पिता

ते श्रावकटा पिता पिला कइंते हजि विराग्य कपनउं गुरु नइ थो गिइं धर्म प्री लिउं कहि एकक ईकन्य
देइ। घरवात आपी आपणपइं दीक्षा लीधी। जंत्रा सउत्तरा ध्ययन ना योगवही। २ उत्तराध्ययन पढइ इडइ
त्रिणि अध्ययन आवडिआं। चउथूं असंखया ध्ययन चकदगा था प्रमाण जि सिडलणइ डइ। ति सिइं
ते ज्ञानावरणी कर्म उदय आविउं। बि दिन आंबिल करी ते अधेयन सवि बलिइं तणि उं पुणएक इगा
थान आवडी ति सिइं गुरु पूछ्या तग चनठा आर अध्ययन ना वडइ तां सिउं तप की धउं जोईइ गुरे कहि
उं आंबिल पेल नउ कइहइ तउ सग चनमाहइ रइ बीजइं तपिइं अनइ पाढिस रिउं हूं पइ जिक
रि सु पडइ सं दिच सणइ। आंबिलकर इं बार यर समा गे रइं हूं आं कांइ ना वडइ। लज्ज
डा चेला हइ सइ। वितकंइ। पेल उडिइ न मा क रइ पेलउं अतन्न पणइं तणइं जि। पुण कर्म नइ गा
ढपणइं करी अक्षर इ आति रूहलणइ डइ। तेदेषी गुरे कहिउं। बहुए सिद्धांत नउ अक्षर इकूड
उं तणां सामुहुं कर्मबंधा इडइ। सर्व सिद्धांत नउ सार एतलइं जि धो पि अरे जीव मारूस मा तूस पल
उं ते हजि घो षइ। पणि ते हूं सूधउं न घोषाइं। मारूस मा तूस नइ स्थानकि मास तुस जि घोषइ। लोकनो
मउ मास जि नाम दीधउं। इम करतउं बार मइ वरसि कर्मक्षय करी। केवल ज्ञान ऊपाजिउं। सकल सिद्धां
त पढइ जि बारई आवडिउं इं। मास तुसा नइं द्रष्टांति इं। प्रमाद अप्रमाद अप्रमादनां फल डाणी सि

द्धांतनइं विषइ प्रमादन करिवउ ॥ ७ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे देवं नाग सुवन्न
किन्नर गण स्सब्भूअ भाव च्चिए लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क मच्चासुरं धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ
धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ श्री ॥ जे हलणी सिद्धांतनइ विषइ प्रमादन कीजइ तेहलणी सि
द्धे भो ण । भो अहो ज्ञानी जनम्हे देषउं सिद्ध प्रतिष्ठा पाम्या श्री जिनमत सिद्धांतनइ विषइ प्रयत्न सादर पक
रे हूं नमो नमस्कार करूं छउं । नंदी सया सं । जेम श्री सिद्धांतनइ प्रसादिइं संयम चारित्रनइ विष
इ समृद्धिइं नंदि वृद्धि हुअइ । संयम किसिउ छ इ देवं नाग पदिइं विमान वासी नाग धरणेंद्रादिक
सुवर्ण कहीइ । ज्योतिषी देवता किन्नर व्यं तर विशेष तेह नागगण सम्भूत तेहे सभूत तनता व
इ सा तइं ता विइं करी । अर्चित पूजित छइ । लोगो जत्थ लोक कहीइं अतीत अनागत वर्त्तमान
काल विषइ ज्ञान जेह श्री सिद्धांत माहि प । इट्ठिउ रहिउं छइ । जगमिणं तेलुक्क एक हइं लोक अ
धोलोक तिर्यग्लोक त्रिलोक्य अनइ मच्चासुरं मर्त्य मनुष्य असुर देवता तिर्यंच नारकी एस घलु इ जगत्
सिद्धांतनइ चलिइं जाणीइं । धम्मो वड्ढउ । एहवउ धर्म श्री सिद्धांत अर्थ आश्री सदैव शाश्वतउ वद्धउ
वृद्धिवंत उथाउं । विजय धम्मुत्तरं विजयपरवादनउ जीपवउं तेह विकउ धम्मुत्तरं । जिम चारित्र ३५
धर्म्म कइं घणाउं प्रधान पणउं छइ तिम वाधउ । एह श्रुतस्तव माहि पहिली बि गाथा आगिली विकाथ

चि इक्क घर्ड संपद । संपद । अक्षर तेह माहि तारी २७५ लघु अक्षर सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं
भगवंत श्रुत सिद्धांतनइं आराधना तणी काउस्सग्ग करूं छउं वंदणवत्तिआए इत्यादि तणी काउ
स्सग्ग कर इपारिया पूठिइं सिद्धांतनी थुइ कहइ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूरा भिरामं जीवा हिं
सा विरल लहरी संगमा गाह देहं चूला वेलं गुरुगम मणी संकुलं दूरपारं सारं वीरागम जलनिधिं साद रं
साधु सेवे ॥ वीतराग मय श्री महावीरना आगमरूपि इं जलनिधि समुद्र सादर यत्नइं साधु रूडी परि
इं सेवं । किसिउं छइ श्री सिद्धांत समुद्र बोधागा । बो धज्ञान बइं करी अगाध ऊंडउ छइ सुपद
प । या रूप इत्तणी पदवी श्रेणि तेह रूपि आं नीर पूर पाणीना समूह तेहे अभिराम शोभ
तउ छइं । जीवा हिंसा य जीवा हिंसा जीव दया रूपि । णी अविरल घणी लहरि तेहनइं संगमि
इं मिलवइं करी अगाह दुष्प्रवेश देह छइ तेह मउ चू लिका रूपिणी जिहांबेल कंधाण छइ । गुरुगम
मय गुरु आज्ञ इ छइं ममरी बापा गुले हरूपि आमणि तेह संकुल व्यापि छइं दुरापारं जेह नउ पार डे र
वेगल उछउ । केवल ज्ञानया रवइला लइ नदी सारं अतिसार श्रेष्ठ इ एहउ श्री सिद्धांत रूपि समुद्र हुं
सेवउं ॥ ७ ॥ श्रुतज्ञानस्तव रूप एसातमउं अधिकार श्रुतस्तव बालावबोधः ॥ ॥ ७ ॥ हवइ सर्व अनुष्ठा
न सिद्ध पणा लहवा काज इ छइ इं तेह तणी सिद्धनी स्तुति कहइ छइ ॥ ७ ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परं

MEMORIAL

पारगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं। नमो सया सव्वसिद्धाणं॥१॥ नमो सया णं सर्वसघलाइ जे सिद्ध थइं पनरे
भेदे तेह हूइं सदा माहरउ नमस्कार हउ किस्या थइं ते सिद्धाणं जेहनइ सघलाइं काज साध्यां थइं बुद्धा
णं ज्ञानि इं करी सर्व वस्तु स्वरूप थइं पारगयाणं संसार समुद्र नइ पारि गिया थइं परंपरगयाणं पर
परा कहीइं अणि पहिला मिथ्यात्व गुणठाणा थकउ अनुक्रमिइं चउदमा अयोगि गुणठाणा लगइ
चडइ चउदनी परिपाटी तेह परंपरा कहीइं तिणइं गया थइं लोअग्गमु चउद राजलोक थइ तेहनइ
अग्रि सिद्धशिला ऊपरि जे जोअण थइं तेहनइ ऊपिलइ चउवीसमइ भागि उपगत प्राप्त हूता
थइं तेहं सिद्ध हूइं नमस्कार हउ सिद्धनां पनर भेदनी गाथा। जिण १ अजिण २ तित्थ ३
तित्था ४ गिहि ५ अन्न ६ सलिंग ७ थी ८ नर ९ नपुंस १० पत्तेय ११ सयबुद्धा य १२ बुद्धबोहि १३
क १४ णिक्काय १५ ॥ इत्यादिनी व्याख्या ग्रंथांतर थकउ जाणवी ॥ सिद्धस्तुतिरूप आठमउ अधिका
र हवउ जेह नउ उपासन नउ यथा तउ थइं तिह श्री महावीर स्तुति करइ। जो देवाण वि देवो जं देवा पं
जली नमंसंति तं देवदेवमहिअं सिरसा वंदे महावीरं॥२॥ जो देवाण॥ जे महावीर भवन पति व्यंतर
ज्योतिषी वैमानिक देवता इं नउ देव थइं जं देवा पं॰ अंजलि बे हाथ जोडी करी जे परमेश्वर
हूइं देवता नमस्कार इं तं देव॥१॥ देवदेव इंद्रादिक तेहे महित पूजित श्री महावीर सिरसा मस्तकि

इं करी वांदउं॥३॥ स्वामी नमस्कार कानूं फल कहइ छइ॥ इक्को वि नमुक्कारो जिणवरवसहस्स
वद्धमाणस्स संसारसागराउ तारेइ नरं व नारिं वा॥ जिनवर कहीइं केवली तेह माहि वृषभ समूलगउ
श्री वर्द्धमान तेह हूइं घणो नमस्कार पर हउ॥३॥ एकइ वीर नउ नमस्कार कहीइ प्रणाम ते संसार न
३ पुरुष हूइं अथवा नारी स्त्री हूइं संसार समुद्र थिकउ तारइ मोक्ष लेई मूकइ नारिवा कहतउ
सिद्धांत णाव इ छइं जे दिगंबर इम कहइं स्त्री हूइं मोक्ष नहूइं ते कूडउं जाणिवउं ज्ञान दर्श
न चारित्र नउ पूरउं आराधिवउं पुरुषनी परिइं स्त्री हूइं छइ जि तेह तणी इत्यादि युक्ति जा
णवी॥ श्री महावीर स्तुतिरूप नवमउ अधिकार॥३॥ ॥ पछि त्रिणि गाथा गणधरनी
कीधी निश्चइं पूर्वी क काहिवी आगली बि गाथा। गुरुपरंपरागत तणी कही छइ तिह मह
श्री गिरिनारमंडन श्री नेमिनाथ स्तुति॥४॥ ॥ उज्जिंतसेलसिहरे दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स
तं धम्मचक्कवट्टिं अरिट्ठनेमिं नमंसामि॥४॥ उज्जिंत॥ श्री उज्जयंत श्री गिरिनार पर्वत नइ शिखरि जे
स्वामी हूइं दीक्षा व्रत माहिं दीक्षा हूई नाणं सहस्राम्र वन माहि केवलज्ञान ऊपनउं निसीहि
या सकल व्यापार निषेधवा तणी निषेधिका कही इ मोक्ष॥ ए त्रिणि हइ कल्याणक श्री गिरिनार पर्वत
ऊपरि जे परमेश्वर हूइं हूआं तं धर्मतं धर्मनइ विषइ चक्रवर्त्ति समान श्री अरिष्टनेमि श्री नेमिनाथ हूं न

२६

मस्कर उं ॥ ए गाथा ॥ ७ ॥ श्री अंबिकानी आपी स्तुत कथा ॥ १ आगइ श्री गिरिनार तीर्थ दिगंबर कदालि
क आरं तिवार करइं ए तीर्थ अम्हारउं तिसिइं एक श्वेतांबर संघ आविउ पेलां तेहरइं चडिवा न दिइं गु
रु थीनव्या । गुरु इम इं ध्यान नइं बालिइं श्री अंबिका राखिइं प्रत्यक्ष आवी कहइ इम करतउ चिंता पूला
ति बिहु पासानी कन्या पाहिइं स्तिति वंदना स्तुत कहावीजो । स्वयमेव नो श्वित घासिइ प्रला तिम सांव
इ संघ बइठउ । दिगंबर तेहि आसवचकहि । । नइं सम तिइं वि कन्या पासानी बालिका तेडी वंदना स्तुत
कहाव्यां । श्वेतांबर ना बालिका जि सिइं सिद्धाणं । बुद्धाणं त्रिण गाथा कहीरइं इति सिइं अं
बिकाइं तेह नइं मुखि अवतरी नइं चल्हिंतास लसिहेर गाहा कहावी । ए दिगंबर इम
कहीन सकइं । जिहसूत्र अम्हारउं तिहलणी तारे इ नरिबना रिवा । ए अह्निनाए मोटउं तिसि
इ । जयजयकार हूउ सव कूणा हिइं कहिउं पती थैश्वे तां बरहं । राजाइं दिगंबर निद्दौटीका ढ्या संघ
यात्रा महोत्सव करी टेषें पूरी पाछउ गिमें । श्री गिरिनार श्री नेमिनाथ स्तुतिरूप दसमउ अधिकार ॥ हवि
बीजी गाथा श्री अष्टापद प्रमुख तीर्थ नमस्कारिवा तणी कहइ । चत्तारि अट्ठ दस दो अ वंदिआ । जिण
वरा चउवीसं परमट्ठ निट्ठिअट्ठा । सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ च्यारि आठ दस बि एकठा मेलीइं चउवी ३७
स थाइं । जिनवर वर्त्तमान तीर्थंकर परमट्ठ परमार्थिइं कल्पनामा त्रिइं नहीं । निट्ठिअट्ठा ...

आठइ सिद्धा ते सिद्धि छइ वकता मम रहिं सिद्धि दिउ । ए गाथा जीणइं मेलि श्री गोतमस्वामि अष्टापदि
पर्वत जइ देव वांदिआ । तिम जिनो यनी बइ । अत्र कथा ॥ श्री ॥ एकवार श्री महावीर चंपानगरी तणी
वाल्या तिसिइं स्वामी नइं मोकला वीसाल महासाल बिनाइं महात्मा । श्री गोतमस्वामि साथिइं पृष्टि
चंपानगरी इं प्रकूता । तिहां तेह नउं ताणेज गागलि राजा राज्य पालइ छइ । श्री गोतम रहिं वांदिवा आ
विउ प्रतिबूधउ । पिवर कराडा पिता । यशोमती रा णी माता बिहु सहित गागलि राजाइं दीक्षा ली
धी । श्री महावीर वांदिवा आवइं छइं मार्गि इसि इ हर्षें छइ । किमइ स्वामी महावीर वांदी सिइं
ते थेला किवार इं जसिइं इसिउं ध्यान तां पेला । पांचइ रहइं मार्गि जि केवलज्ञान ऊपनउं ।
श्री गोतम चंपानगरी इं आविआ । समोसरण मां हि स्वामी वांदिवा जाइ छइं । तिसिइं पेला पांच
इ केवली नी पर्षद तणी जाता देषी बोलव्या । वछो । आम आवउ स्वामी वांदउं । तिसिइं श्री महावी
र आय सा दिइ । वछ गोतम केवली नी आशातना म करि पछइ श्री गोतम तेह रइं खमावइं । मणम नि
अं दोहद धरइ । अहा हा किसिइं कर्म करी म्हरइं इं केवलज्ञान न ऊपजइं तिसिइं कणाहिं इसिउं कहि
उं जइ श्री महावीर नइं वचन अष्टापद पर्वत तरइ तिसिइं श्री अष्टापद पर्वत तीर्थ जइ जिको आपणी ल
ब्धिइं । तीणइं अष्टापदि पर्वति चडी देव वांदइ । ते केवलज्ञानी थई नइ तीणइं जिन विमोक्ष जाइं ते सां

तलो श्री गौतम अष्टापदि जाबानउं मन कीधउं । आति प्राय जाणीनइ स्वामीइं आदेश दीधउ । श्री गौ-
तम चाल्या । तिवार पहिला आगइ मोक्षार्थी । विका त्रिणि तापस नउ गुरु अष्टापद तीर्थ तणी चाल्यां छइ
कोडिन्न । दिन्न । सेवाली । एकानइ पांचसइं परिवार पहिला रहइं । एकांतर उपवास पारणइ साम-
न्य फल मूल आहार । बीजा रहइं छट्ठ तप पारणइ स्तकां फल आहार । त्रीजा रहइं अट्ठम तप पारणइ
सूकउ सेवाल आहार । अष्टापदि पर्वति आठ मेष लाक्षिआणइ ऊंची पगथी छइ । तिहां पाति वा-
रइं पहिला तापस पहिली मेषलाइं चड्या बीजा । बीजीइ त्रीजा त्रीजिइं चड्या आघउं न
जाइ नहीं । श्री गौतम आवता देखी पेलेचीतविउं । अम्हे महातपीआ वडा न थी सकतां तउ
ए एहवउ स्थूल देह । किम चडिसिइ इम चिमासतां । जि श्री गौतम सूर्य नां किरण अवलंबीनइ
चड्या जि ते देखी पलेचीं तिवउं जिवारइं वलउआ । विसिइं तिवारइं अम्हे एहना शिष्य थासिउं
श्री गौतम चउबारइ प्रासादि दक्षिणनइ बारि पइसी चत्तारि तिहां श्री शंतव प्रमुख दस प्रतिमा वां-
दी । पूर्वनइ बारि श्री आदिनाथ श्री अजितनाथ बि प्रतिमा नमस्करी मणिमय निज निज वर्ण प्रमाण
लांछन सहित चउवीस प्रतिमा दिहाडउ सघलउ नमस्करी वांदी सांझइं प्रासाद बाहरि शिलात- २७
परि प्रतिक्रमण कीधउं तिसिइं धनद लोकपाल तिहां आविउ श्री गौतम वांदी बइठउ श्री गौतम ते

ह आगलि महात्मानाउ अतप प्रमुख गुण वखाण पापिलउ वीतवइ महात्मा जउ एहवा दुर्बल देह:
कइं तउ आपणपयइं एकउ उपचित देह काइं । ते मननी शंका जाणी ते फेडवा तणी श्री गौतमइं पुं-
डरीक अध्ययन वखाणिउं । पांचसइ गाथा प्रमाण ते अध्ययन धनद सामानिक देवताइं हियइ धारिउं । वे-
उं समय कहाउ । तेह वीछ हिलउ दसपूर्वधर श्री वइरस्वामि हुआ स्यइं प्रभाति श्री गौतमस्वामि देव वां-
दा ऊतरतां तापसे वीनविउ । स्वामी अम्हरहइं दीक्षा दिउ । पनरसइं त्रिडोत्तरइ हिं दीक्षा दीधी ।
पाछा श्री महावीर तणी चाल्या । एक गाम आविउ । श्री गौतम माहिं जई परमान विहरी आणि-
उं अक्षीण महानस लब्धिनइं बलिइं एकइ पडघानी खीरिइं सिंचक हिक्कइं पारणउं
करावता लागा । डोक्खगइं पात्र माहिं अंगुठउ । रहइं तां लगइं तेहनी वस्तु किमइ खूटइ न
हा । धणी जिमइ तिवारइ पतासइं पहिला पांचसइं एकोत्तर रहिं खीर जिमतां जि शुक्ल ध्यान करी ।
केवलज्ञान ऊपनउं । तिहां तउ चाल्या । बीजा पांचसइं एकोत्तर रहिं वेगला जिनघर स्वामीना समोस-
रण माहि बार परषद वइठी देखीनइ केवलज्ञान ऊपनउं । त्रीजा पांचसइं रहिं समोसरण माहि गया
प्रभु दिइं परमेश्वर देखीनइ केवलज्ञान ऊपनउं सघला केवली पर्षदि तणी जातां देखी श्री गौतम बोलाव-
इ । वच्छो आम आवउ । श्री महावीर वांदउ । स्वामी वारइं । वच्छ गौतम केवलज्ञानीनइं आशातना म क-

रि। श्री गोतम विशेषिइं अंदोह धरइ। तिसिइं स्वामी कहइ। वछ दुख म धरि। अंते ज्ञान वि।
सामी। आपणपइं बेहु हुइंसरीषा थासिउं। मोक्षि जासिउं। ते सांभली श्री गोतमनइं मनि समाधि हु
इ। तउ ए च्यारि अट्ठ दस दोअ। इसी परिइं श्री गोतमस्वामि अष्टापद पर्वतिं देव वांदिआ। एह गाहनो
अर्थ घणो छइं। जूजूआ अर्थ संमेतसिहरि श्री शेत्रुंजय श्री नंदीश्वरद्वीपवास विहरमाण प्रमुख
तीर्थंकर वांदीइं छइं। एअ अष्टापद प्रमुख तीर्थ वांदिवारूप इग्यारमउ अधिकार। तेह तणी इणि
इं सिद्धस्तवि पांच गाथा। वीस पद। वीस संपद २०। ६ अक्षर तेहमाहि १७४ सरिषा कता परलघु
अक्षर। सव्वद्धउ वियकरा इम परमेश्वर। फरिवउं। तेह तणी चिंतकरिवा तणी।
वेयावच्चगर सम्यग्दृष्टी देवतानउं काउस्सग। करतउ इसिउं कहइ। वेयावच्चगराणं सं
तिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं। करेमि काउस्स। ग्गं। वेयावच। श्री जिनशासननउं वेयावच्चसा
र संभाल चिंता करइ छइ। जे गोमुखयक्ष चक्रेश्वरी प्रमुख। संति। सर्वलोकनइं शांति करइ छइ।
सम्मदिट्ठि। सम्यग्दृष्टी आवकनइं समाधि करइ छइं। तेहनउं काउस्सग करउं छउं। इहां वंदणवत्ति
आए इत्यादिक न कहीइं। जेह तणी देवता अविरतपणइं करी वांदिवा पूजिवा योग्य नही। अन्नत्थ ऊससि ३५
एणं इत्यादिक कहीइं। देवतानउ काउस्सग करता मिथ्यात्व लागइ। जे के तला इसिउं कहइं। तेह उंछे

तणी श्री हरिभद्रसूरिकृत ललितविस्तरावृत्ति। श्री हेमाचार्यकृत योगशास्त्रवृत्ति। तथा आवश्यकचूर्णि माहि देवतानउ काउस्सग करिवउं। प्रकरइ दिसि कहिउं छइ। तथा। श्री वयरस्वामि
इं गाथामाहि लिषिउं कांतिइं सुभद्रा श्राविकाइं चंपानगरीनी पोलि कउघाडिवानइं अवस
रि मानोरमा श्राविकाइं सुदर्शन श्रेष्ठिनइं शूली टालिवानइं संकटि पडिइ देवतानां काउस्सगा
कीधा सांभलीइ। तेह तणी सम्यग्दृष्टि आवकनइं। इं एक काउस्सग करिवइ दोष नही। काउस्सग
पारी। नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपा। ३। आमूलालोलधूली बहुल परिमलालीढलोलालि
माला। झंकारारावसारामलदलकमला। गारभूमी निवासे। छायासंभारसारे वर
कमलकरे तारहाराभिरामे। वाणीसं। दोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारं
॥४॥ आमूलालो। मूलगाइ लहलहतउं धूली। बहुल पराग तेणइ बहुल परिमलिइं आलीढ
लुब्धलोल फिरतां आलिमालां भ्रमर श्रेणी तेहनइं। झंकाराव झंकारा शब्दिइं करी शोभता निर्म
लदल जेहनां छइं। एहवां कमलमाहि जे भवन तेहनी भूमिकाइं निवास छइ तेहरहिं। गयाव। छा
यानइं संभारिइं समूहिं कीसार छइ। वरकमलवर प्रधानकमल हाथि धरइ छइ। तारव तं प्रधान
हारिइं करी कंठ शोभतउ छइं। वाणीव। अक्षर नासमूह तेह रूपिणी देह धरती छइ। तं श्रुतज्ञाननी

अधिष्ठायिका तणी एहवी देवी श्रीसरस्वती। तच चिजिहां भवसंसारनउं विरह विलय हुइ। ए
ह्वउं सारमोक्षरूप मकरंद दिउ। ७। पढइ बइसी नइ नमस्कार करीइ ए। जावंति चेइआइं
करीइ ए। जावंति चेइआइं उड्ढे अ अहे अ तिरियलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ
संताइं २ जावंति ए। जेतलां केतलाइं चैत्य जिनबिंब छइं किहां। उड्ढे अ ऊर्द्ध्वलोकि विमानि
कमाहि चउरासी लाष सत्ताणू सहस त्रेवीस आगला प्रासाद तिहां एकसो कोडि बाव
न्न कोडि चउराणूं लाष चूंआलीस सहस। सातसइं साठ बिंब। ज्योतिषीमाहि असं
ख्याते प्रासादे असंख्याता बिंब छइ। अहे अ अधोलोकि भवनपतिमाहि सात
कोडि बहुत्तरि लाष प्रासाद तिहां तेर कोडि सइं नव्यासी कोडि साठि लाष बिंब व्यंतर
माहि असंख्याते प्रासादे असंख्याता बिंब। तिरियए तिर्यग्लोकि बत्रीस सइं ओगणसाठि
प्रासाद तिहां त्रिणि लाष एकाणू सहस त्रिणिसइं वीसा बिंब छइ। एतलां शाश्वतां कहिआं
अशाश्वतां नउं कांइं गणित नहीं सव्वाइं ए तिम घलाइं हूं वांदउं। इह संथ हूं अहीं छउं। ते चित्य
तिहां छइ तिहां थिका हूं वांदउं छउं। पढइ इच्छामि ख०। जावंति केइ साहू भरहेरवय महावि ४५
देहे अ सव्वेसिं तेसिं पणओ। तिविहेण तिदंड विरयाणं। ८। जावंति ए। जेतला केतला साधू

चारित्रीया ऋषीश्वर भरहेण। पांच भरतक्षेत्र पांच ऐरवत पांच महाविदेह क्षेत्रमाहि सहू छइं थिको
डि केवलज्ञानी थिको डि सहस साधु संप्रति काले छइं। सव्वेसिं। तेहं सबिहुं कहुं हूं प्रणाम नमस्का
र करउं। तिविहेण। जे ऋषीश्वर त्रिहुं मन वचन काय करी त्रिहुं दंड थिकउ विरत उपरहिआ छइं त्रि
णि दंड किस्या। मन कुध्यानि वर्त्तइं ते जीव करइं आपणपा सी दंडइ ते हतणी मनोदंड कहइ। सावद्य
वचन बोलइ ते वचनदंड। कायव्यापार वर्त्तइं ते कायदंड कहीइ। एहे त्रिहुं गाहे छइं। आठप
द। आवसंपद ७३। अक्षर ते हमाहि ४ ला रीघा कताइ छइ ए लघुअक्षर। पढइ नमोऽर्हत्सि
ण॥ उवसग्गहरं पासं। पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहरविसनिन्नासं मंगलकल्ला
ण आवासं १। पासं वंदामि श्रीपार्श्वनाथ हूं वांदउं। किसिउ छइ उवसर्ग ए सव्व जीवह हूइं उप
सर्ग नउ हरणहार। जेह स्वामी नउ सेवक पार्श्व यक्ष छइ। कम्म ए। कर्म रूपिआ घन अभ्रपडल
थकउ मुक्क मुंकाणउ छइ। विसहर ए। विषधर साप तणां विस नउ फेडणहार। मंगल करीइ दुःख नउ
विलय कल्याण करीइ सुख नी वृद्धि। तेह नउ आवास स्थानक छइ १। विसहरफुलिंग मंतं कं
ठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोग मारी दुःख नउ जरा जंति उवसामं २। विषधरस्फुलिंग नामि श्री
पार्श्वनाथ नउं मंत्र। मणुओ मनुष्य कंठि धरइ तेहरहिं इह लोक नउं फल कहइ छइ। तस्स ए तेह पुरुष

कइं प्रतिकूलग्रह मारि मरगी दुष्टज्वर उपशमी जाइं॥२ सिद्धउ हरी मंती उक्रपणामो चिवकफलो दा
इ नर तिरि सुचिजीवा पावंति न दुक्ख दोहग्गं॥३ अर्थ स्वामी ताहरउ प्रणाम मंत्र हरिरहउ परहउ अनु
रूप ताहरउ प्रणाम बहुफल दाइ हुइ इहलोक मांफल नइं कहिवउं किस्यउं नरतिय परलोकि
मनुष्यत्व तिर्यंचत्व मांहि प्राणीया जीव पावंति दुक्ख अनइं दोहग्य दारिद्रकदीइ अनइ पामइ
इ तुह सम्मत्ते लद्धे चिंतामणि कप्पपायव भहिए पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं॥४ अर्थ
स्वामी ताहरउ सम्यक्त ताहरा धर्मनी आस्था ॥ चिंतामणि कल्पद्रुम थकी अधिकी छइं ॥ ते
नइ लाधी पावंति तेहे जीवा निर्विघ्नपणइ अजरामर स्थानक मोक्ष पामइं ॥ इति ॥ इ
य संथुउ महायस भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण ता देव दिज्ज बोहिं भवे भवे पास जिणचंद॥५ इ
य संथु॥ महायश माहरा धणी हे स्वामी भक्ति तणइ भरि इं समूहिं इं करी निःसार तरिं ठउ माह
रउ हिअउ इसी परिं मइ संथुन स्तोथिउं ताहरिउ ते देव श्रीपार्श्वनाथ जिन तीर्थंकर माहिं चंद्रम
मान आल्हादक तणी स्वेप परमेश्वर तचित्त चिबोधि श्री धर्मनी प्राप्ति ते मूं हइं देजे॥ ॥ ॥ उव
सग्गहर माहि पांच गाथा एथइ २० पद २० संपद १८ अक्षर तेह माहि २० सारा थाक तां १६६ लघु
अक्षर एहना थया अर घउइ एक अर्घ लघु लेश मात्र कहित्र॥ ॥ एतो त्र चक्रद पूर्व धर श्री भद्रबा॥

हु स्वामि श्रीसंघना उपसर्ग फेडवा तणा कीधउं॥ अथ कथा॥ श्री॥ एकइ गामि बेसाई तइं भद्रबाहु वरा
हु कंता श्रीसंभूतविजयसूरि कन्हइ लिदी क्षालीधी बेहू विद्वांस तउ भद्रबाहु इं विशेष गुणवंत तणी
आचार्यपद दीधउ वराहमुखि उ बेष मूंकी ग्रहस्थ थिउं पूर्वगत सिद्धांत अंगोपांग नाअर्थ लेई वा
राही संहितादिक नवां ज्योतिषकरी लोक माहि वर्त्तो व्यामूरइ इं श्री सूर्य मउ वरहु उं तेहलगइं श्री सू
र्य नइ रथि वयबइ चारचरस फिरा शमइं सघलउ ग्रह चक्र जोइउं तेहतणी ज्योतिष सम्यग्ज्ञाण उं
मूं हूं इं वराहमिहिर नाम कहिइं॥ इसी लोक माहि प्रसिद्धि चनावी राजा इं पुरोहित थापिउं ए
कवार श्री भद्रबाहु गुरु तिहां आवइ तिसिइं व राहनइ बेट उ जायउं तमात्री इं सउ वरस आ
उषउ वर्त्तिउं महोत्सव कीधा राज्यमान तणी नगरलोक सहू मिलिवा गिउं गुरु टाली पेलइं
राजा आगलि चाडी कीधी एमाहरइ सगला ईमाह रइ पुत्र जन्मा आवि मिलवा आव्या एथवद्ध र
बाहु राजाइं गुरु तेडावी पूछिया गुरे कारण कहिउं सातमइ दिवसि एहना पुत्र हुइ विलाडीनइं मुखि
खिइं मरण हुइं जायइं आवीइं तउ वली मूं अइं आविउं जोईइ तेहतणी नाव्या पेलइ चालक पाच
लिउ णामूं किआ बिलानउ प्रवेश टालिउं इम करतां सातमइं दिहाडइं स्तनपान करावीवा पालणा बा
हिरिका थिउ हुइ तिसिइं तोगल कली मूंकी ऊंती तिपडी मर्षिच्चा गी बालक मूउ राजा चमक्रिउ गुरु

DR. BHAU DAJI

तेडावी पूछियाइ सिउं गुरे कहिउं । जे वेला चरती हूंती । तीणइं जमाडूउ अछइ । तउ आनाथ कुंअरइ पु
णि तिवेला पहिलेरडी गई । सूतिकालवज्रमांहि । जे घंटा बांधी हूंती । ते घालिका आंबी हूंनही । अनइ
त्रियाई जे आणी मांहि छिउं । तिहां वडा नइ वडाची । एतलइं आघी गई । घालिका पूठी तेतिम इ छिम
लिउं । वली पेलउ कहइ । बालक मूर्ख पणा बिलाडीनउ मुख किहां । गुरे कहिउं । जाउ लोगल नइ देखे
ह डइ बिलाडीनउं मुख सरखा हिंइं घडिउं । जइ अघवा बिलमांहि अटइ । पडइ सइ तउ वि
ला छिइं आछिइं लोगल किकहीइ । राजा कहइ इप तलीवेलानइ विहरइ । आक्रषानउं एव
उउं । अंतर किमप डिउं गुरे कुंसार नक्षत्र आणावी फिरितां इजिमि सिना टवकावि
इसमकाल एक एक ऊपरि छिवराव्या । तेअने धारपडियां पाडी कहिउं । एतलइं लारनइ सुक्षि
वेगिइं करी अनेरा अनेर ऊअइ छइ । तउ ते काल दक्रम हाकता वलउं फिरइ छइं । तेहनउं कांसि
वउं किम सिउं । इमकरतां एकवार राजा आगलि वराहिंता पिउं । एह आलामांहि मीछउ ऊपनउ अछ
इ सुं इह ऊडउं काढी कहिउं । एहूंडा मांहि हिवडा जि पडिसिइ । तो लिङपा वांचनपलन ऊलारका ।
सिइ राजाइं गुरु पूछिउं आ एक अइ छइ । तेकिम गुरे कहिउं मांछउ ऊपनउ अछइ । ते साचउ । छणातेए
हूंडा बाहिरि पडिसिइ । तो लताए कावनडि पलऊ सिइं । पछइ राइं करी आलाधिक उमाछउ पडि ५२

उं । गुरु जिनउं कहिउं मिलिउं राजा कहइ । एक डि गुरु कन्हलि एकडि वास्त्र अम्हे वेहूं लहां पाए
वडउ अंतर कांइं गुरे कहिउं तम्हारइं बुद्धि जोईइ । पर कूइं एतली बुद्धि नहीं । एमाछउ ऊपनउ तिवार
इं वाचन पलन ऊजाण एपाणी नउ जीव वाइ लाग इसू कइ इहलू ऊधाइ पूर्व विइं वाइं लांषी तउ प
रहिरहउ ऊपडइ । एतली बुद्धि हायानी नहीं । पलइ लोकमांहि लाजिउं । निश्कल थिउ गुरु ऊपरि द्वेष धर
तउ मरी व्यंतर थिउ । संघमांहि मरगी विकुर्वी । संघिइं गुरु वीनव्या गुरे महामंत्रमय अगाथा प्रमा
ण । नव समगाहरं स्तोत्र करी आपिउं मरगी ऊपसम ह वइं लोकमूर्ख पणइं घोडइ कांजिउं वस
गाहरं गुणइ धरणेंद्र तां जि उवली वली प्रत्यक्ष आवइ पछइ धरणेंद्रिइं गुरु वीन
व्या लगाव मए लोकमूर्ख मरूं कइं वलीश तां । णइ प्रसाद करी बइ गाथा संहारि घात उपां
चेगाथा एश्री संघनी आर्त्ति सां जि सुपरइ गुरेति मकीधउं तेह जिलगइ पांच जि गाथा सुणइ छ
इ स्तवन पूजिइं मुक्ता शुक्ति मुद्राइं । जयवीराय बिगाह कहइ । समसमी आंसुलो मोती नरी सीप
नीमां संपुट नइ आकारि बेहाथ जोडी ललाट देसि लगाडीइ । ते मुक्ता शुक्ति मुद्रा कहइ । जयवीरा
य जगगुरु होउ ममं तुह पभावउ भयवं भवनिव्वेउ मग्गाणुसारिया इट्ठ फलसिद्धी ॥१॥ लोगविरु
द्धच्चाउ गुरुजण पूआ परत्थकरणं च सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ जयवीयरा

यण। जेहनइ गुरु श्री वीतराग तूं जयवंतउ वरतइ। ए आशीर्वाद दीधउं। हिवमननी इच्छा कह
इ छइ। होउ मय। हे भगवन ताहरा प्रतापथकउं एतलां वानां मुझनइं हउ। भवनिर्वेद। संसार
रूप रिनिर्वेद वैराग्य। मग्गाणु। मोक्षरूपपरिखपनउं करिवउं। इट्ठफल। इहलोकि जीणइं बउ तीइ आ
जीविकानां आहट दोहट गाहांनउ ऊइं। तेवा चित्त धनादिकनी प्राप्ति हुज्यो। लोगविरु जिलोक
विरुद्ध कर्त्तव्य परनिंदा विशेषिइं उत्तमप्रसिद्ध नी निंदा चोरी परस्त्रीगमन तेहनउं त्याग होइ
वउं। गुरुपूय। गुरु कहता माता पिता धर्मना देणहार एतलानी पूजा भक्ति। परत्थ। परोपकार कर
वानउं सहज। सहगुरु। कालनइं मानिइं खरा गुरुनउ सामग्री योग। तव्वयण। तेह
गुरुनां वचननउं आराधवानी आस्था। आभव। जां संसारमाहि रहउं तां गुरुवचननी आस्था अ
खंड परिपूर्ण होज्यो। ए बि गाथा श्री गणधरदेव कहइ तणी छइ बिहुं गाहि घई ८ पद ८ संपद ७९ अक्ष
र तेहमाहि ८ तारी थाकता ७१ लघुअक्षर। आगिली त्रिणि गाथा पूर्वाचार्य कीधी छइ तेह चउवीसानी स
माप्ति इं कहीइं। मुख आगलि बेहाथ जोडी करी। छ। वारिज्जइ जइवि निआणं बंधणं वीयराय तुह
समए। तहवि मम हुज्ज सेवा। तुवलवे भम्हचलणाणं। इहं श्री वीतराग ताहरा समय सिद्धांतमाहि ४३
यद्यपि निआणानउं बांधिवउं वारइ निषेधीइ। धर्मना प्रतावलगइ अमुकउं राजादिक मुझनइं हउ॰

ज्यो। इसिउं मागीइ नहीं। तहवि तथापि एतलउं मागउं छउं। ममहूंइ होउं ताहरा पगनी सेवा ज
ज्यो। दुःखक्खउ कम्मखउ समाहि मरणं च बोहिलाभो अ संपज्जउ महइ यं तुह नाह पणामकरणेणं॥ दुःखक्षय कर्मनउं तेहनउं क्षय। कम्मखउ। कर्मक्षय। समाहिमरण। समाधिमरण
ण। बोहि। परलोकि बोधिलाभ जिनधर्मनी प्राप्ति संपजउ। हे नाथ ताहरा प्रणाम करता लगइ। एतलां वा
नां मझनइं संपजउ। इहां मंगलीक लेषीइ। जिनशासनइं संस्कृत श्लोक कहइ। आशीर्वाद दिइ छइ
इ। सर्वमंगलमांगल्यं सर्वकल्याणकारणं प्रधानं सर्वधर्म्माणां जैनं जयति शासनं॥ पस
र्वमंगलीकमाहि मंगल्य कहीइं। उत्कृष्ट छइ। सर्वकल्याणनउं कारण छइ।
सर्वधर्ममाहि प्रधान छइ। जीवदयामूलनणी एहवउ जिनशासन जयवंत वर्त्तइ छइ। ए
ह त्रिहुमाहिली बि गाथा अनइ छेहिलउ श्लोक त्रिहुं घई १२ पद १२ संपद ११२ अक्षर तेहमा
हि [illegible] तारे थाकता ९७ लघुअक्षर। पांचे गाहे घई जयवीयराय माहि २० पद २० संपद १९१ अक्षर
२३ तारे थाकता १[illegible] लघुअक्षर। इसी परि सूत्र अर्थ पद संपद शुद्ध अक्षरनउ कच्च रिवइं देववं
दता ध्याननाइ बलिइं तीर्थंकर गोत्रकर्म उपार्जइ। जिम श्री शांतिनाथनइं जीवइं दसमइ मेघरथराय नइ
इ भवि। ए श्रापर नइ क्रोध इंद्रविमाम बइसी शाश्वत जिनभवननी प्रतिमा नमस्कार करतइं तइं तीर्थंकर

गोत्रकर्म उपार्जिउं । तीणइं सविराधकपणइं दीक्षा लेई सर्वार्थसिद्धि विमानि पहुतउ । तिहां तेत्रीस सागरो
पम आयु पाली । आहां तरतक्षेत्रि हथिणाउरि नगरि । विस्वसेन राजा अचिरा राणीनउ पुत्र श्री शांति
नाथ हूउ । संपूर्ण चक्रवर्त्तिनी पदवी पाली पछइ दीक्षा लेई सोलसमउ तीर्थंकर शांतिनाथ मोक्षि
पहुता रिज ॥ ६ ॥ इति चित्यवंदनाबालावबोधः ॥ ६ ॥ श्री १ ॥ पहिलउ अधिकार संपूर्ण हूउ ॥ ६ देव
वांदणउ वषाणिउ ॥ हवइ गुरुवांदणउ वखाणी — इ पछइ गुरुवंदन त्रिहुं प्रकारे जघन्य मध्य
म उत्कृष्ट । जघन्य वांदणउं प्रमाणमात्र मध्यम छो — भ खमासमणा देइं । बिहु वांदीइं खमासम
ण सूत्र आगइ वखाणिउं छइ ॥ उत्कृष्टउं छेहा — दशावर्त्त वांदणउं गुणवंत गुरुनइ पगि
दीजइं हव महात्मानइं वांदणां देतां मुहपतीउ — घउं पचिकुं पगरणइ छोइं आवकनइ मु
हपती अनइं चरवला पचिछोईइं । ते थानइं चरवला — कइं रजोहरण एहनउ नाम । मुहपत्ती रजोहर
ण लेवानां अक्षर महात्मा अनइ श्रावककइ साधारणपणइं श्री अनुयोगद्वारसूत्रवृत्ति माहि प्रक
ट छि बइं । तथा कविला श्रावक आश्री अद्धाकहि आठइं सामाइअ कडम्म समणो वा सगास्स गंथविहि ध
म्मा वगरणपन्नत्ते । तं जहा घवणा परियत्ति मुहपत्तियति उचमालि आत्ति दइ पात्र बणणं वत्तिय । ४४
आलावउ अनुयोगद्वार चूर्णि माहि लिउ । तथा जो मुहपत्तिअं अपडिलेहित्ता वंदणं देइ गोयमा

गरु अंतस्स पच्छित्तं । एउ आलावउ व्यवहारचूर्णि माहि लिउं । तथा गंठपोसहसालाए गविउ रचण
रित्रं मुहपत्तियं पमज्जंतो । सीहो गिन्हइं पोसह । एऊ आलावउ विवाहचूलिका ग्रंथ माहि माहे श्रावकनइं
पोसह लेवानइं अधिकार छइ । तथा पाचरणं मुत्तूणं गिन्हित्ता मुहपत्तियं वजकायविशुद्धी एकरेइं
पोसहाई अं ॥ १ ॥ एश्लोक उ व्यवहारचूर्णि माहि छइ ॥ इत्यादि ठाणि ठाणि पविवाना दाली अनेस्व का
इ उपगरण महात्मानइं कल्पकाबली प्रमुख श्रा — घकनइ पंगवडी प्रमुख उ तइ वांदणा दीवान
सूरूइं महासती अनइ श्राविकानउ चलीअनेर — उ व्यवहार पहिलउं खमासमण देइं आदेस
मागी मुहपत्ती पडिलेहीइ पंचवीस पडिलेह — ण मुहपत्तीनी पंचवीस सरीरनी पंचवीस प
डिलेहण करइ मूल गइ तां गइ पगा वलवलइं । — करी पउंजिया नहीं तउ मुहसंघ तीकुइ हव वां
दणां देतां पंचवीस आवस्यक साचव्यां जोइंइं ॥ त — हनी व्यक्ति कहीइ छइ पाखलिइ चिउं दिसे अ
कार हाथ प्रमाण अवग्रह कहीइ का जिकामि अणुजाणह मे मितउ अवग्रह माहि पइसिवउं अवग्र
ह वाहिरि रहि अंउ पंचिहाघडोडी मुखमुहपत्ती देई इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए नि
साहि आपणउ तलउ कहतउ आपणी चांदियानी इच्छा जणावइ पछइ गुरु कहइ छंदेण तेनीघत्तन मां अ
णुजाणह मे मिउग्गहं कहइ पनींचा नमवा रूप एक आवश्यक १ ५ पछइ शिष्य मुखि निसीही कहि

तउ रजोहरणइं करी आगिली भूमि प्रमार्जी तउ अवग्रह माहि पइसइ पइसतां पूंजी ऊभउ आवश्य
क ३ संडासा दिक पडिलेही कमगड उवइसी गुरु चरण समीपि रजोहरण मूकी डावइ हाथि मुह
पत्ती लेई तीणइं करी डावा कान तउ आरंभी जिमणा कान लगइ ललाट प्रमार्जी वली तीणइं जिम
णा हाथ जानु पर्यंत भी तिहां मुहपत्ती मूकी अहो कायं इत्यादिक तउ त्रिस्त्रि आवर्त्त करइ किम उ
मला बिहु हाथ ऊंचा पसारी साधलउ अणफरस तउ गुरुनां चरण ऊपरि सलग बिहु हाथनी द
सइ आंगुली लगाडइ तउ मुखि अक्षर कहइ । प बइ तिम ज्ञ लिदस आंगुली आपणइ ललाटि
लगाडइ तउ हा अक्षर कहइ बिहुं अक्षरे आ वर्त्त एक कायं नइ यं पं बि अक्षरे आवर्त्त
बीजउ २ तिम जिका अनइ य । एहे बिहुं अक्षरे आवर्त्त त्रीजउ ३ । यं पछइ संफासं कहइ तउ
गुरु नई पगे माथउं लगाडइ पछइ बे हाथ कमलके । सानइ आकारि जोडी माथइ चडावी खम
णिज्जो भे किलामो । अप्प किलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो । इसिउं कहइ । पछइ बे हाथ म
स्तक तउ जत्ता भे जवणिज्जं च भे इत्यादिक तउ वली त्रिस्त्रि आवर्त्त करइ किम पाछली परिइं जिद स आ रे आवर्त्त
गुली सम समी करी गुरु नई पगे हाथ लगाडइ तउ पहिलउ ज अक्षर नीचइ स्वरादि कहइ इत्ता । बीजउ अ पहिलउ ॥१
क्षर मध्यम स्वरादि कहइं । त्रीजउ अक्षर ललाट फरस तउ ऊंचइ स्वरादि कहइ इतलइ त्रिहु अक्ष ४२

तिम जि जवणि पत्रि स्त्रि अक्षर त्रिबिध स्वरादि करी । त्रिहुं स्थानके करतां बीजउं आवर्त्त प २ च
लो तिम जि ज्जं च भे पत्रि स्त्रि अक्षरे करी । त्रीजउ आवर्त्त ए छ आवर्त्त पछइ बे हाथ माथउ गुरु नई प
गे लगाडी खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं कहइ । तउ गुरु प्रत्युच्चरइ । अथवा अनेरा पा
छलि थिक तउ वांदणां देतउ जाइ । तउ महात्मा रजोहरण जिम आगलि मांडउ छइ । तउ श्रावक तउ
मुहपत्ती आवडी आगलि मांडइ । तिहां जि गु रु चरणनी स्थापना करी छइ आवर्त्त करइ प
छइ फल तउ घई रजोहरण करी पाछलि भू । मि प्रमार्जी तउ मुखि आवस्सिआए कहइ तउ
अवग्रह बाहिरि नीकलइ । पनीकलवारू प आवश्यक । पछइ फल तउ घई बेहाथ जो
ग मुद्राइं । जोडी पगे जिनमुद्रा साचवतउ प डिक्कमामि खमासमणाणं इत्यादिक बेह
लगइ सूत्र ऊच्चरइ इम वीजइ वांदणइ आव श्यक तेहनां जि साचवइ । एतलउ विशेष बीज
इ वांदणइ आवस्सिआए ए पद न कहइ वली अवग्रह बाहिरि नीकलवउं नहीं स्थानकि
जि ऊभउ रहिइं पडिक्कमामि खमासमणाणं इत्यादिक सूत्र ऊच्चरिवा वांदणां देतां मनोगुप्तिक
रवी । मन माहि एकध्यान पणउ करिवउं वचनिगुप्ति बिहुं वांदणां विचालइ अनेरउं बोलिव
उं नहीं । कायगुप्ति सइर यथा तथा हलावउं नहीं । पत्रिलिउ मिरूप त्रिस्त्रि आवश्यक खमणिज्जो

तेकिलामो कहतां जेमाथइ हाथ चडावीइं छइं तेयथा जात आवश्यक कहीइ जेहतणा ज
मनइ समइ बालकनइ बेहाथ माथइ चडाविइं जिनम्नीइ तेहतणी यथाजातइ भिंजेनाम हचनुं
आवश्यक मेलीइ छइ पहिलउं विङंघाद्दणाघइ थिनीवानमिचा आवत्त्रै१ गुरुशिष्यनाकहि
व्यारिमस्तक नाप्रणाम च्यारि४ अवग्रह माहि पइसिवा वि अवग्रह धकनी कल्लचउं एकवि
बीजइ व्यांदणइ नी कलचउं नषी तेहतणा। त्रिगुप्तियथाजातक एवंकारइ२५ आव
श्यक अवश्यमेव कीधाजोइइ तेहतणा आ वश्यक नाम बांदणानाबत्रीसदोषथयो
ग्य॥ अयोग्यक्षु गुणइत्यादि विस्तरग्रंथांत रजाणिवउं हवबांदणानउसूत्रबोल
णीइछइ अवग्रहबाहिरिरहिउशिष्य मु खिमुहपत्तीदेईकहइ इछामि खमासम
णो वंदिउंजावणिज्जाए निसीहिआए खमा पहेक्षमासमहित श्रमणक्षमाश्रमणयाप
नीयक हीइ शक्तिसहित निसीथ नैषेधिकी कहीइं आपणउं देह तीणइं करी इछामि वं
दउं वांदिवा वांछउं पतलइ शिष्यइं आपणी इछा जाणावी तिसिइं जउ गुरुकिसइ काजि
व्यग्रहुइ तउकहइं तिविहेण त्रिबिधमनिवचनिकायकरी संखेपिइंजिवांदउ पछइ शिष्य सं
खेपिइं जिखमासमणांदेईवांदइ जउअव्यग्र नहुइं तउकहइ छंदेण जिमताहरउंछंद आति

Dr. ... MEMORIAL

४६

प्रायहुइ तिम प्रमाण पछइ शिष्य तिहां जिरहिनंलगारनीचुउ नमी कहइ अणुजाणह मेमिमाहं गु
रुपाखलिइं चिहुं दिसि मितमविचउंअहूठहाथ प्रमाणउ अवग्रह कहीइ छइ तेहमाहिं पइस
वानी अनुज्ञा दिउ तिसिइं गुरु कहइ अणुजाणामि अनुज्ञादिउं छउं पछइ शिष्य निसीही कहि
तउ अवग्रह माहि पइसइ गुरु वांदिवा टाली बीजउ व्यापार करिवा निषेध एनिसीहीनउ अर्थ पछ
इ बइसी गुरुनापग अनइ आपणउं ललाट फ रसतउं हूंतउ कहइ अहोकायं काय संफा
सं अहो० कायतणउ अधःप्रदेश बे हिउंचरण। मा एतलइ पग इ नउ अर्थ उम्हारा पगतेकाय
संफासं आपणइं काइं मस्तिकिइ करी स्प र्शीकरउं एहइ करघानी अनुज्ञा दिउ पछ
इ बेहाथ माथइ चडावी गुरुनामुखसमुहउं जो अतउंकहइ खमणिज्जो भे किलामो जगव
नइ उम्हारा पग फरसतां किलामो हुइ चपणकप। जाचीहुइ ते खमउ ते म्हे खमउ पाइ मखमावी
नइ हवतेदिहाडानी हेमा कुसलीन बंस्वरूप पूछइ छइ प अप्पकिलं ताणं बहुसुभेणं भेदिवसोवइ
कंतो अप्प अल्पघाडइ अमिइ बहुघणइ शुभि समाधिइ ते उम्हइ कांइ दिवस दिहाडउ अवहक्के
तोचउं तिसिइं गुरु कहइ तहत्ति जिम तुं कहइ छइ अत्रि तिम जि दिहाडउ अम्हजिरहइ समाधिइं
गिउ पछइ शिष्य गुरुनापग अनइ विचालउं अनइ आपणउं ललाट त्रिहुं अक्षरेफरसतउ आव

तेकरतउवलीपूछइ। जत्ताभेअम्हकइंयात्रासंयमनउनिर्वाहछइ। तिसिइंगुरुकहइ। तुम्हंपि
वट्टए। हिवशिष्यपूछइ कइंतउछइ। पछइशिष्यचीलीछए। अम्हारेतिमइजि। बिआवर्त्तेकरनउपूछ
इ। जवणिज्जंचभे। जवणिज्जंचभे। अम्हारउंशरीरयापनीयनिराबाधछइ। तिसिइंगुरुकहइए
वंएमजितिमनूंकहअछइअ। निराबाधजिछइ। वलीशिष्यललाटपगेलगाडीकहइ। खामेमि
खमासमणोदेवसिअंवइक्कमं। हेक्षमाश्रमण दिवस दिहाडासंबंधीउवइक्कमंव्यतिक्रम
कहीइअपराध। खामेमि। हूंखमावउंछउं। ति सिगुरुआपणउंमस्तकनमाडइतोकहइअ
हमविखामेमितुमं। हूंइप्रमादनउकीधउं। अपराधतुम्हहरहइंखमावउंछउं। पछइ
छप्रश्नकृतरकहियापछइकृतउंघइराहा। हरणिइंकरापाभिलीतूमिकायकुंडीअव
ग्रहबाहिरिनीकलवउंइनहींस्मामकिजिकृत। उरहिइं। पडिक्कमामिखमासमणाणं। इत्यादि
कसूत्रकुचरिचउंवांदणादितोमनोगुप्तिकरिवीवनमाहिंपकधसनयपाउंकरिवउं। वचनगुप्ति
बिजुंवांदणाविचालइंबोलिवउनहीं। कायगुप्तिसइरयथामथाहलाचवउंनहीं। पत्रिसिगुप्ति
पत्रिसिआवश्यकउखमणिज्जोसेकिलामोकहइतोडेमाथइंहाथजाचीइछइंतेयथाजातआ
वश्यककहीइ। डेहलणीजमनइसमइबालकबेहाथमाथवडावइ। जिजमीइ तेहसणीयथा। ४७

जातइसिउंनाम। एपडिक्कमामि। अवश्यकर्त्तव्यं जेपडिलेहणाप्रमुखव्यापारतेहविषइआअती
चारथकउं। पडिक्कमवउंनिवर्त्तउं। पछइपगोजिनमुद्राहाथेजोगमुद्रामाचवतउकृतनरहा। पाभिली
जिवातविशेषिइंकहइछइ। खमासमणाणं। देवसिआए। आसायणाए। तित्तीसन्नयराए। जंकिंचि
मिछाए। मणदुक्कडाए। वयदुक्कडाए। कायदुक्कडाए। कोहाए। माणाए। मायाए। लोभाए। सव्वका
लियाए। सव्वमिछोवयाराए। सव्वधम्माइक्कमणा ए। आसायणाए। जोमेअइयारोकउ। तस्सखि
मासमणो। पडिक्कमामि। निंदामि। गरिहामि। अ। प्पाणंवोसिरामि। खमाप। क्षमाश्रमणइकइ
देवण। दिवससंबंधिनीआशातना। तित्रीसंप तेत्रीसमाहिएककोकीधोछइ। तेमिछा
मिछक्कडं। आगलिकहिसिइं तेत्रीसआशातना व्यक्तिइंलिखीइंछइं। निष्कारणगुरुआगलि
इं। अतिढूकडउभूघइजाइ। अविनयथाइ। बिजुं पासेअतिढूकडउंघइजाइ। त्रिजुंअति
ढूकडउघइजाइ। तिहांनीसासखीकसासकरताउंकश्लेष्माना बिंदुआगुरुनइलागइएदोष
उ। तिमगुरुआगलियासइंपाछलिउ। अतिढूकडउभूघइरहइएत्रिसि। तिमजिगुरुआगपासइं
पाछलिउ। अतिढूकडउघइबइसइ। एत्रिसिउ। एवंनव। पछइंजिसाडिनिपाणीजइ। अनइबहि
र्भूमिइंगिआंगुरुपहिलउंतेसाजननइंपाणीइं। शिष्यशौचकरइ। गुरुपहिपहिलउंगमणागम

मणी प्रकट आलोअइ ११ रात्रिइं गुरु किसिइं कालि साद करी बोलावइं तिवारइं जागतउ साद
न दिइ । आइ सादि इम न कहइ १२ नवमेइं साधु श्रावकादिकि आविइ छतइं गुरु पहिलउं तेहसिउं
बोलावइं १३ विहरी आव्या पूठिइं गुरु आगलि पहइ सातपाणी आलोअइ पहिलउं अनेरा मा
हात्मादिक आगलि आलोअइ १४ तिमजि गुरु पाहिलउं अनेरा कन्हइं सातपाणी देखाडइ १५ तिम
जि गुरु पहिलउं अनेरा कन्हइं सातपाणी देषाडइ १६ तिमजि गुरु पहिलउं अनेरा कन्हइं सातपा
णीइं करी निमंत्रणा करइ गुरु नइं अणपूछिइं । जे स्निग्ध मधुर वस्तु आपणीइ गमइं ते आवइ
ते महात्मा कन्हइं आपइं गुरुनइ अरस विरस दिइं आपणपइ सरस आहार लिइ
१८ गुरुनउं वचन तहत्ति करी पडिवजइ १९ गुरुं प्रतिइं निद्रोचितपणइं कचिकउ वचन बो
लइ २० जिहां बइठउ हुइ तिहां जि धिउ गुरुनइ पूछतां उत्तर दिइ गुरु कांई पूछइ तिवारइ
काहि सिउं २१ गुरुनइ तुंकार उ कहइ २२ गुरु कहइ अमुकउं एक ग्लाननउं वेयावच्चादिक
उ तिवारइं पेलउ कहइ तुम्हे कां न करउ २३ गुरु कांइ हित शिक्षादिक वचन कहइ तेहं ते सा
वधान थई वचन प्रीछइ नहीं अणसांभलता नी परि शून्यचित्तपणइं रहइ २४ गुरु विस्तर तिहनउ ४८
गइ कांई कउ कहता हुइ । तिमिइं पेलउ सउं बइठउ कहइ तुम्हे कहइं सम्यक् सांतर तउ न घी ए अ

र्थइ मन ही । आमइ छइ २५ गुरु कांई कथा कहता हुइं तिसिइं पेलउं आपणी कथा आडी घालइ गुरुना
कथा न रस मांडइ २६ गुरु कांई कथा कहता हुइं । तिसिइं पेलउ आपणी व्याख्यान करता
हुइं तिसिइं हिवडां विहरण वेला हुइ इत्यादिक अप्रस्ताविव वचन बोलीनइ सभानउं भंग करइ २७ अ
र्थ गुरे सभा आगलि वखाणिउ हुइ तीणइं सभा अणऊठइं जि आपणपणउं डाहपण जणावा भणी
ते ज अर्थ सविस्तर वखाणइ २८ गुरुनइ वइसणइ पग लगाडइ २९ गुरुनइ पाटि पाटलइ बइसइ
बीजउं कांई गुरुनउं पात्रादिक आपणपइं वाव रइ ३० गुरुना पाहिइं ऊंचइ आसनि बइसइ गु
रुना पाहिइं विशेष वस्त्र पात्र कांबलादिक वा वरइ ३१ गुरु समानि बइसइ । सभा निव
स्त्रादिक वावरइ ३३ तेत्रीस आशातना नाम कहं ही बीलाइ कांइ छइ ते एहजि माहि लेखवी
उं किंचिन्मिथ्या वेयावृत्त्यादिक नइ विषइ समर्थइं छतां जं कुडां आलंबन लीजइं अणकरवा
नी बुद्धि हुइं ते मिथ्या क्रिया कहीइं तीणइं क्रिया करी मणडुप मन मांहि कुतर्क विकल्पनइ करि
वइं करी वयडुप वचन पाडू आनइं बोलिवइं करी कायडुप कायइं अवविधइं नइं करवइं करी को
हाएण क्रोध लगाइ माणाए मान लगाइ मायाए माया लगाइ लोभाए लोभ लगाइ जं कांइ अविनय की
धउ हुइ एतलइं ते दिहाडा नउं आलोअउं हवइ त्रिकाल नउ अविनय आलोअइ छइ सव्वकाए

सर्वे अतीत अनागत वर्त्तमान त्रिकाल संबंधिया इत्यादि अनेरे सर्वेइं आशातना करइ ते सर्वे मिछामि दुक्कड
लागइ ते मिथ्या उपचार करी हीइ कूड कंइ मन नइं विनय सारिखा इस कवण जीणइं करी सघला धर्मत्र
तिक्रमाइ छइ आशातना तेहनी आशातनाइं करी जो मेइं जे मइं अतीचार अपराध कीधउ हुइ
तस्स तेह अपराधनइं तेहथी क्षमाश्रमण पडिक्कमुं छउं पडिक्कमणुं निवर्त्तउं वली एहन
उ न करउं निंदामि अन्याइं आपणउ आत्मा साखि आमा हिं निंदउं गरहा गुरु साखिं गरह
उं अप्पाणं अपराधकारक आपणपउं वोसिरामि। राग द्वेष छांडउं बीजउं वांदणउं लागउ छि
दीजइ तेह तिपरिणत लउ विशेष जे आवसि आपन कहीइ तथा अयन वास्ति बिहिं
कलइं पगमिरहिइं पडिक्कमामि खमासमणा णं इत्यादिक सूत्र कहीइ वांदणा दितउं
आवश्यक करवा लइ करी पखमासी पाडि तिथि सूत्र आनकर इ गुण महात्मानी परइं मुख आगलि धरइ
न हंि तिहां आचरणा दिवसमाहि इणइं वांदणा न इं सूत्रि अट्ठावन्न पद २२६ अक्षर तेहमाहिं २५ गु
रु अक्षर २०१ लघु अक्षर इम २५ आवश्यक १२ आवर्त्त ३ प्रश्न इक्कतर इत्यादिक बोल सात वरत गु
रुनइं साखसहित वांदणां दिइं तेहनइं अनेक भवनां संच्या पाप कर्म क्षयि जाइं तांचा पाप इअल्प लि
लजइ अत्र कथा॥ ॥श्रीकृष्ण महाराय वीरासाल वीनी कथा॥ एकवार श्री नेमिनाथ द्वारिकां न ४८

गरीइं समोसरिआ कृष्ण महाराय वासुदेव वांदिवा गिआ श्रीगुरु वंदन नउं फल बखाणी तउं सांभलिउं
कवी स्वामीनइं अनइ परिवारना अढार सहस्र पद स्थ महात्मा छइं द्वादशावर्त्त वांदणउं करउं विधि
पूर्वक देवा लागउ साथिइं सोल सहस्र मुकुटबद्ध राजा प्रमुख वांदणां दि तउं पूर्णं तउं ते केतलइ
केतलइ लाजी लाजी साथ छोडिउं एक वीरइं माल वी आपणा ठाकुरनी अनुवर्त्तना लगइ छे
हडां संघातन मोल्हिउं छेहडइ कृष्ण महाराय थाक उं सर्वांग प्रस्वेद हूउ स्वामी कहइं पूछइं सग
वन मइं त्रिणि सइं साठ महासंग्राम कीधा पण एवा इउ श्रम कहीइं तहूउ जेवडउं आज हूउं
स्वामी कहइं अहो नरेश्वर जिम श्रम हूउ तिम ला भ तइं क्षइं घणा हूआ जे हणीतइं क्षायि
श्वर वांदतइं हूं तइं क्षायिक सम्यक्त्व उपार्जिउं तीर्थं कर गोत्र उपार्जिउं अनइ आगइ सातमी
नरक पृथ्वी जोगउं कर्म उपार्जिउंतउं तेह चउथी जी नरक पृथ्वी जोगउं कीधउं वीरासाल वी
नइं ठाकुरनी अनुवर्त्तना टाली बीजउं कांइ फल न हूउं॥ ॥ इय द्वादशावर्त्त वंदन दिइ अवग्रह
माहि जि रहिउ शिष्य लगारनी सुजन मा कहइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन देवसिअं आलोएमि इ
च्छाकाय अम्हारी इच्छा छइ जउ तउ संदिसउ आदेस दिउ भगवन देव दिवस माहि जे कोअतीचार
लागउ हुइ ति आलोअउं अम्हे आगलि प्रकासउं ति सिइं गुरु कहइं आलोअउ शिष्य कहइ इच्छइ

छइं वांदवुं। पछइ मुहपत्तिं वंदन पछइ दंडक पढइं। आलोअमि जो मे देवसिअ अइआरो कओ काइ
ओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छि
यव्वो असमणपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हम
हव्वयाणं छण्हं जीवनिकायाणं सत्तण्हं पिंडेसणाणं अट्ठण्हं पवयणमायाणं नवण्हं बंभचेरगु
त्तीणं दसविहे समणधम्मे समणाणं जोगाणं जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।। आ
लोय।। आलोउं कहुं जो मे देवसि० जे मइं दिवसमा हि अइअतीचार कीधउ हुइ अतीचार घ
णी परि छइ तेहमांहि व्यक्ति हुइ कहइ छइ काय इ कायइं सयरिइं करी कीधउं वाइअ
वचनइं कीधउं माणसिअ मनइं कीधउं वली तेह। नी व्यक्ति कहइ छइ उस्सुत्तो उत्सूत्र जे
सिद्धांत विरुद्ध कांइ भाखिउं हुइ अथवा समाचरिउ हुइ जेह लगी उन्मार्ग तेह लगी उम्मग्गो उ
न्मार्ग बइ जे धर्म नउ मार्ग मूकी छांडी नइ कषाय नइ उदयइं करी कीधउं हुइ तेह भणी अकप्पो
अकल्प जे कल्पइ नहीं जेह लगी अकरणी जे करवा ना वइं एतलइं वचन नउ कायनउ अतीचा
र ... कह्या हव मननउ कहइ छइ दुज्झाउ घणी वेला लगइ मनि आर्त्त रौद्र ध्यान रूप दुर्ध्यान
... ध्यायउ हुइ दुव्विचिं० थोडी वेला मनि पापइं चीतविउं हुइ एअ जिहणी अणा ५०

णा अनाचार जे आचार हुइं विरुद्ध छइ तेह भणी जि अणिच्छिअ इच्छवा योग्य बिवाइ जे नावइं क
रवउं परहउं छइ तेह जि भणी असमण अश्रमण महात्मा हुइं प्रायोग्य युक्त अनचाले एहनु अती
चार ए आश्री हुउं ते कहइ छइ नाणे ज्ञान आश्री दंसणे दर्शन सम्यक्त आश्री चरित्ते चारि
त्र आश्री हुउं वली एह जि विस्तारि कहइ छइ सुए श्रुत सिद्धांत अकालि पाठि वइं करी विराधिउ
हुइ सामायिक कहीइ सम्यक्त तेहनइ विषइ कांइ शंका आकांक्षा दिक अतीचार हुउ आ हुइ
तिण्हं गु० मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति ए त्रिणि गुप्ति रूडी पाली न हुइ चउण्हं कसा० क्रो
ध मान क्रोध माया लोभ ए च्यारि कषाय कीधा। हुइं पंचण्हं प्राणातिपात मृषावाद अ
अदत्तादान मिथुन परिग्रहारंभ ब्रत छण्ह छ जीवनिकाय विराध्या हुइं सत्तण्हं पिंडेष
जे सात पाणी विहरवाना आलि ग्रहते पिंडेषणा। कहीइ ते सात छइं किम किम आगइ अणष
रडिइं हाथिइं अथवा वाटूइं दिइ तउ लिलिउं आगइ परठिउं हुइ जिहां घवा दूआ दिक तीण
इं दिइ तउ लिलिउं जे आहार हाडला दिक तउं ऊपाहिं ऊभिइं आपणइं लि का ठिइं सा णाइं इ घा
ली मूंकिउं हुइ ति दिइ तउ लिलिउं ४ जे आहार सहाय पात्र इं कि हुइं लागइं वलगइं न हुइ तेवा
य निर्लेप कहीइ अनइ अल्पं तर निर्लेप जे मन हुइं विकार हेतु नहीं। एहनउ आहार वालाविरा

प्रमुख सबलेआहारनिर्लेपकरइ तेहजि लिउं ध्रारावलइ सनघाली तक्रदूधणादिकलीवारी
नइं निमचा आलीतउकइ। तेलहउंतत्र जि लिउं केहिकइंदेवा अथवाजिमयानइं काजिंकव
लादिक हाथिइं रूपाडिउं कइ तेहजि दिइ तउजि लिउं॥६ जेअन्ननारसनणीक्रियकरइइनो
खवायो गमइ मनुष्यादिकजिमवानहीइइ अथवाजेअधभांडिवउंकइं तेहजि लिउं एम
तइ सातपाणी चिहरवा मा आतिग्रह जेलीधान कइं अथवालेइसम्यक्पालिआ नहीं आ
८ पहेंपण ईर्यासमति१ भाषासमति२ एषणा समति३ आदाननिक्षेपासमति४ पारिष्ठा
निका समति५ एपांचसमति मनोगुप्ति१ व चनगुप्ति२ कायगुप्ति३ एत्रि
णिगुप्ति ए आठप्रवचनमातरूडी पाली ना। हीनवल्हेच० ब्रह्मचर्यनी रक्षा तेणी नव
गुप्ति वालिकहीइं कण कणस्त्री नपुंसक अनइ खरादिक अधमपशु जिहां नकइं तीणइ
पाश्रयि रहिवउं स्त्री सिउं धातकथावार्त्ता नकरइ किवारइ कांइ कइ तउ साधु हउ अणजातन
रूड वचन इकरइं२ स्त्रीना आष्या आसनन बावरइ जघन्यतउ स्त्री ऊठ्या पूंठि घडी बि घडी ते आ
सन टालिवउं जिउ स्त्रीनां आंगोपांग नउं निरीक्षण न करइ॥४ वस्त्रनी तिकिडा विचनइ आंतर
इ जिहां रहि आं स्त्रीनां हसितगीतरमितशब्दविकार वचनकाम चेष्टाविलाप दिकना शब्दसांभ

लीइं तिहां न रहिवउं५ पुरुषनी अवस्थाइं जे कामक्रीडादिक हूआ कइं ते संभारइं नहीं६ स्नि
ग्ध आहार जेहे इ रूकइ बलधारइ ते लेवउं नहीं रूकइ आहार अतिघणउं न लेवउं७ आपणा सरीर
नी शोभा विभूषा न करइ॥९ एनववाड ब्रह्मचर्यगुप्ति जंकाइ रूडी पालीन हीं दसविध क्षमा मार्दव आ
र्जव३ निर्लोभपणउं४ तप५ संयम६ सत्य७ निरतीचारपणउं शौच८ निःपरिग्रहीपणउं९ ब्रह्मचर्य१०
एदस भेदे श्रमणा महात्मानउ धर्म रूडउ पालिउ नही एतलइं तिण्हं गुत्तीणं। इहां घणा आरंभ
चता बोल कह्या ते वपकइं बोल उह्लकरइ। ब्द समणाणं जे तला श्रमण महात्मा संबंधी
आयोग व्यापार छइं चरणसत्तरी करणस त्तरी रूप ते हमाहिं जंखंडिय जंकाइं
खंडिउं लगारेक तांडिउं जं बिराध जंकाइ नि टोल तां डिउं तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥८॥ ति
हनउं माहरउं दुःकृत पाप मिथ्या हउ॥ आलोअ णा ब्हुरि प्रकहउ आरंभी १५। अक्षर तेहमाहि
२७ गारे १६६ लघुअक्षर एमहात्मानउं पाचकाहिउं आचकप्रणा आमप ढइ आलोएमि व जोमे
देव॥ अणचियद्वो असावगपावगो नाणेदंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं च
उण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सा
वगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥ अणिच्छियव्वो एतला लगइ सरिष

DR. BHAU DAJI

उंति। अथ जे अतीचार श्रावकनइं आयोग्य नहीं करिवा जेहउं नही। नाणे दंसणे य चरित्ताचरि
त्ते श्रावकनइं कांइ एक पाप नो नियम छइं तेहनइं चारित्र कहीइ केतलाइं पाप मोकलां छ
इं तउ अचारित्र कहीइ। बिहुं मिल्यां चारित्राचारित्र कहीइं देशविरति तेहना अतीचार ला
गा हुइं सुए सामाइए तिहिं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचन्हमणुव्वयाणं पांच अणुव्रत क
हीइं निरपराध मोटा त्रस जीव जाणी करी निर पेक्षपणइं मारिवा नीम। मोटकां कूड बो
लवा नीम। जीणइं चोरीकार चडइ तेहवउं। अदत्त लेवा नी नीम। स्वदारसंतोष करइ अ
थवा परस्त्री नउ नीम। परिग्रह नउ परिमाण करिवउ। ए पांच अणुव्रत महा
त्मानां पांचइ महाव्रत मोटां छइं तेह आश्री ए पांचइ अणु आसरियां नान्हां तेहनी
अणुव्रत कहीइं। तिण्हं गुणव्वयाणं तिन्नि गुण व्रत कहीइं वसवानां गाम घर करउ चिहुं
दिसि एतला अधिक नूं इं व्यवसाय भणी न जाउ बीजइं सेजन आश्री सचित्तादिक वस्तुनां नाम लि
इ आजीविकाकउ व्यवसाय महारंभनां नीम लिइं हासा खेड करइ नहल पापोपदेश जोह
करी मुहिं आ पाप लागइ ते अनर्थदंड टालइ। ए त्रिणि पाछिलां पांच अणुव्रत ऊहइं गुण कर ५२
इ तेहनइं गुणव्रत कहीइं चउण्हं सिक्खावयाणं च्यारि शिक्षाव्रत कहीइं जिवारइं पडिक्कमतउ

हुइं तिवारइं सामायिक लेवउं उत्तय काल पडिक्कमणा ना वेलां तउ अवश्य मेव जाणउं। जावज्जीव
उं दिसिनउं परिमाण कीधउं छइं तेह मांहि दिनाइं थोडउं नीम लिइ घोडउ सिउ मोकलउं मूंकइ सचित्त
द्रव्य विगइ ए॥ दिनाइया उकू दनी मवसाति लिइ सांझइं संक्षेपइं पर्वतिथिइं पोसह लिइ उन्याथोपार
णि तस्स रुतउ आहारादिक महात्मादिकनइं दिधा पछी च्यारि वली रसा खाइं अल्पसाइं तेहन
णी शिक्षाव्रत कहीइं। बारस्स प एवं प्रकारइं द्वादशविध बार व्रतरूप श्रावकधर्म नउ बोल जं खंडि
णा। जिको खंडिउ विराधिउ हुइ तेहनउ मिच्छा मि दुक्कडं हुउ। श्रावक नइ पाछि आलोअणइ
धुर घका १६३ अक्षर २७० सारे ३४ लघु अ। हुइ वली लगार नासुनं नमी सर्वपाप नी अ।
द्विहिद्ध दसिन कस्श्च ब। सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण सं
दिसह। सव्वस्सवि सघलुइ दिवस माहि जिं काइं। दुचिंत मनिइं दुष्ट पाडुअ चीतविउं दुष्ट बं
चनिइं पाडूअं भाषिउं बोलिउं। दुच्चिट्ठिय। कायिइं करी पाडुइ चेष्टा कीधी ति सविहुं कूइं इच्छाकिसिउं
करउं इच्छाकारेण उत्तम्हारइ इच्छाकुंउं तउ संदिसह आदेश द्यउ जिम हउं मिच्छा कहउं तिम करउं इसिउ
तावप तिसिंड गुरु कहइं पडिक्कमह प्रतिक्रमउ हउं निवर्त्तउं वली इसिउं पाप म करिज्यो इसिउ तावप
वइ शिष्य कहइ इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं। इच्छं बांछउं एवात तस्स तेह पापनइं मिच्छा मि दुक्कडं हउ।

छइ अग्रह बाहिरिनी कहती तिम इछि बि बांदणा दीइ अपराध खमाववा भणी इसिउं कहइ ॥ ६ ॥ इच्छा
कारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर देवसिअं खामेउं इच्छं इम कहइं इच्छाकारइ तउस
हिउ आदेश दिउ अब्भुठिउ छउं अस्फालित सङ्ग हूउ छउं अरुं दिवसमाहि जे अपराध कांई कीधउ
छइ ते खामेउं खमाववा नइं कांछिउं तिसिइं गुरु कहइ खामेह खामेउ शिष्य कहइ इच्छं खामेमि
देवसिअं इच्छउं छउं एहवी म्हारी आज्ञा खामेय दिवसमाहि जे अपराध खमावउं ते पछइ पंचांग
प्रणाम करउ मुहपत्तीइं मुख ढांकी इसिउं प छइ जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे
विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं
किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न याणामि तस्स मिच्छा मि
दुक्कडं जं किंचित् जे कांई अपत्ति अप्रीतिकरु। आवी छइ परपत्ति परप्रत्ययी गाढेरडी अप्री
ति कीधी छइ भत्ते पाणे भातपाणी आश्री विणए विनय अभ्युत्थान आसन मेडनादिकन कीधउं
वेयावच्चे औषध पथ्य पाणी प्रमुख वेयावच्च सम्पूर्ण न कीधउं आलावे बोलतां संलावे वली संभा
षण करतां उच्चासणे गुरुना थकी ऊचउं अथवा सरिषउं वस्त्रपात्रचा वरिउं छइ ते हूं जाणतउं अं ५२
तरभाषा गुरु बोलावतां विचालइ आडी वात घाली छइ उवरिभाषा गुरु वात कहइ ते पछी

हा छइ ते वात मांहि विशेषी नइ कहइ छइ आपणी स्फूर्ति देषाडवा भणी जं किंचि मज्झ इसिउं कांई माहरउं
विनयरहित हूउ छइ सूक्ष्म स्वल्पमात्र अथवा बायर अथवा कांई बादर मोटकउं तुब्भे तुम्हे जाणउ
गुरु आत्मभणी अहं न हुं न जाणउं मूर्ख भणी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ते कहइ मिच्छा मि दुक्कडं हुउ खामणा इच्छुर
घक १२६ अक्षर ३ सारे १११ लघु अक्षर विधिपूर्वक अपराध खमावतां अनेक रहइं केवलज्ञा
न ऊपनां छइ चंडरुद्र आचार्यना परिइं अत्र कथा उज्जयनी नगरीइं चंडरुद्र गुरु प्रकृतिइं गाढ
उ रीसाल तेणी महात्मा थिकउ अलगा एकलउ। छिबइ सुउ इसिइ एकव्यवहारी आनंदइ बे
ठउ नवपरिणीत तिवारे तेवडा मित्रे परिवरिउ आवी महात्मा वांदइ मित्रे हास्य करइ
हिउ एह कहइं दिक्षा दिउ महात्मा एक हिउं प वात गुरु जाणइ ते हुइ गुरु देषाडइ गुरु आ
गलि आवी मित्रे तिम कहिउं गुरिइं रोसइ राखअ णावी नवपरिणीत माथइ लोच कीधउं दी
क्षा लीधी मित्र बिलषाणा घरे गया नवदीक्षित गुरु कहइ कहइं भगवन् अनेथि ईमाहरा संसारि
आ आवतां इसिइं अनर्थ करिसइ रातिइं गुरु कहइ वडा भणी खांधि चडावी चालिउं अंधारइ कांचा नी
चइ पग पडइ गुरु रीसाव्या माथइ दांडइ आहणइ लोहीनी कल्लइ ते शिष्य मनमाहि चींतवइ ए गुरु
आ गुरु कहइं मा सहइ कीधउं एवडउं कष्ट आविउं इम चींतवतां गुरु तत्क्षिण लागइ केवलज्ञान ऊप

पमउं मारगिपाधरउंहीडइ चालागाउ गुरेसू छिउं अंधारइ पाधरउ किमहीडइ छइं कांइ अति
शय हा भगवन् किसिउं प्रतिपाती कि अप्रतिपाती तउ भगवन् अप्रतिपाती पछइ गुरु कहइं पश्चा
त्ताप करवा लागा गुरु खांधथका उतरी पगिलागा खमावतां केवलज्ञान ऊपनउं जिमतीणइं सम्यग्
ताचरूं वेक खामणउं कीधउं तिम अनेरे कीक करिवउं॥ ८॥ श्री॥ वली तिमजि गुरु नइं विहइ वांदणा
दिइ यथाशक्ति नइमानिइं पच्चखाण करइ पच्चखाण नउ सूत्रघणौ विस्तर लगी आगलि पच्चखाण
सिद्धा पच्चखाण कीधा पूछिइ॥ बेजानुअनइ मस्तक लगुइंलगाडी डावइं हाथिइं मुहप
त्तीमुखिदेई जिमणा हाथ गुरुनेपगे लगाडीइ सिउं कहइ फासुएणं एसणि
ज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वच्छपडिगाह कंबलपायपुंछणेणं पाडिहारि
अ पीठफलग सिज्जासंथारेणं उसहभेसज्जेणं भयवं अणुग्गहो कायव्वो॥ हे भगवन् एत
लेवानकर मउक्कहइं लिवानउ अनुग्रह करिज्यो किसिउं किसिउं फासुएणंप्रासुक
अचित्त एसणीय एषणीयसूजता जे महात्माकहइं कल्पइ॥ एहवा असणपाण० असन कहीइ
धान पकवान चिगइ सालणादिक पाणी कहीइ श्री कल्पसिद्धांतोक्त नव पाणी अथवा आ ५४
चारांगोक्त एकवीसपाणी अथवा अनेरउं सूजतउं पाणी खादिम कहीइ खारिकइत्यादि॥

रोपरा द्राक्षादिक सूषडी स्वादिम कहीइं सूंठि हरडइ एलचि लवंगादिक एहेकरी तथा वच्छपडि
ग वस्त्र लूगडउं पडिग्गह पडिघउ ईणइं करी सघलां पात्राजाणवां कंबल कांबली प्रमुख पाय
पुंछणपात्रं छणउं जेणघाउपरि वीटीइ एहे करी पाडिहार प्रातिहारिक पडिगृहस्थइ जिनां
थि कांवावरी पाछां आपीइं एहवा जे पीठ बइसणा पाटलादिक फलक पाटिउं शय्या उपाश्रय
संथारा संथारक पाटि तेहे करी तथा उसह ते ओषध अजमादिक जे एकलउं हलीइ भेषज जे त्रिक
त्रिकटु कषाय नउं संयोग त्रिगडू त्रिफलादिक ते हे करी भगवन् अनुग्रह करिज्यो जेकाई लीई
इ ते विहरिज्यो इम सिउं अर्थे ए निमंत्रणा इ करतउ जीव घणां पुण्य उपार्जइ अत्र
जीर्ण श्रेष्ठिनी कथा॥ श्री॥ एकवार छद्मस्थपणइं श्री महावीर वर्षाकालि विशालानगरी
बाहिरि देवकुलिका नइ मागिरहया छइ तिहां परमश्रावक जिनदत्त छइ जेहकहइं सेठिपद
नष्ट कुआन्तणी लोक जीर्णश्रेष्टि कहइं ते स्वामी देषी वांदीइं पर्युपास्ति करइ फासुएणं एसणि
ज्जेणं इसी परि निमंत्रणा करी घरि जाइ स्वामी नगरमाहिं किहांइ न पइसइ तापेल इच्छा लेउं सरीर
पवासी घटइ इम सदैव निमंत्रणा करतां च्यारिमास गया स्वामीनइ चउमासी तप उपरी भजे पारणा
इदिवसि तिमजि प्रेम तिजइ निमंत्रणा करी घरि आविउं चिंतवइ आज स्वामी माहरइ घरि आव

इ। तउसिउं जोईइ। इमध्यानुं निरणउं धिकउ। मध्यमेनवेलाघरनइबारिकनउंरहिउ साचनालाव
इ। जउ इहवडांस्वामीपाउधारइं। तउ अम्हेसाम्हाजाउं। बेहावमाघइ वडाचीत्रिसिपुदक्षिणादेइ
सउं उवांद्उ। पछइ घरमाहिपाउधारावीप्रधानफासू अन्नपाणीएकरीपारणउंकरावउं।चा
लीवांदीएमचितलाइस्वामीसंघेडीघाकतइंक्रमरिइं आहारिइंहलतोजनकरउं। इमजीर्णश्रेष्टि
के इमनोरथकरतांलि स्वामी अतिनवश्रेष्टिन इघरिपधुता। पलइ गयाक्विवइ इं तीधारी
नीपरिइंदासीपाहिइं कोमासनाचाकला॥ दिवराव्या। देवताघरिसुवर्णवृष्टिकरइ। दे
वइंदुंदुभिवजावइं। राजालोकसहू मिलि नं श्रेष्ठिसवकणिहिइं प्रसंसिउ। स्वामी
अनेथविहारकीधउ। तिसिइं जीर्णश्रेष्ठि तिहां नीदेवइंदुंदुभिनउनादसांभली। चीतवइधिग
कुउमूंइकइं हुं अलागीउंसउ। स्वामी माहरइघ रिनाव्या। इसिइं तीणइंनगरितहींइ डि। एक
केवलीगुरु आव्याराजादिकलोकवांदीपूछइ। साबनएनगरमाहिकुणमाहउंपुण्यवंतनुं
कहइ। जिनदत्तजीर्णश्रेष्टि। राजाकहइ। स्वामी श्रीमहावीरनइपारणउंश्राइंनकरावियुं। पु
एपसावतउंईणा विईणइं पारणानी साचनालावतइं। बारमादेवलोकजोगउंपुण्यउपार्जिउं। तेत
लइ जुदेवइंदुंदुभिवाजतीनसांभलत तउ बिकं घडीमाहिकेवलज्ञानउपाजेत। अनइ अतिनवश्रे ५५

ष्टिकइं पात्रदानदीधांतणउ सुवर्णवृष्ट्यादिकफलपामिउकइ। अधिकउंकांइनही। तावरहितमणी।
तेसांभलीराजादिकेजीर्णश्रेष्टिप्रसंसिउं। धर्मपालीबारमइदेवलोकिपहुतउ। एयुक्तमनिमंत्रणाभा
वश्रुद्धिइंकरवानां एचडांफलछइ। तलइ अगुरुचंदनसंपूर्णसौहउं॥७॥ अगुरुचंदनानिमंबालाबबो
ध:समाप्ता॥७॥ बीजउ अधिकारहूउ॥७॥ ॥ हवपडिकमणानउविधिलिखीइछइ।पडिकमणां पां
चकुंइं। देवसियश राइयश पक्खिअ३ चउमासि अथसंवच्छरीयप तेहमाहिदेवसिअपडिकम
णउंराविमापहिलापहरलगइ। कीधउंसूझ इं जेह कइं निश्चयकइ अनइ श्रीव्यवहार
ग्रंथमाहि पुरिमढलगइ करवउंकहिउं छ इं। पाखीचउमासीसंवच्छरीपत्रिसिणइ देव
सिअनीपरिइं जाणवां। पहिलउंइ तउगुरु आ चार्य दिक प्रत्यक्षइ। अथवा तेहना प्रतिष्टि
आचार्यरियकइं। तउंतिमहूउं। नहींतउ केह कइं पडिकमणानिश्चयकइ। तेज्ञानोपकरण
तणाउत्तरकरवालीनीस्थापनानउकारपूर्वक। थापिगाहइतणानइ करतादीसइ॥ ॥ पंचिंदिय
संवरणो। नवविहबंभचेरगुत्तिधरो। चउविहकसायमुक्को। इअअट्ठारसगुणेहिंसंजुत्तो॥१॥ पंचमह
व्वयजुत्तो। पंचविहायारपालणसमत्थो। पंचसमिउ तिगुत्तो। छत्तीसगुणोगुरुमज्झ॥२॥ पंचिंदिय पांच
रवउ संवरणहार। नवविहवा नवविधब्रह्मचर्यगुप्तिनउधरणहार। चउविह चिहुंकषायेर

इ तउ असिउं जोईइ इम ध्यातउ निरणउ घिकउ । मध्यामे नवेला घर नइ बारि किम नउ रहिउ साचनालाव
इ जउ अहवडा स्वामी पाउधारइं तउ अम्हे सामुहा जाउं । बेहा घमा घइ वडा वी त्रिसि प्रदक्षिणा देइ
मऊकुं बवादूउ । पछइ घरमाहि पाउ धारावी प्रधान फासू अन्नपाणी एकरी पारणउं करावउं चा
ली वांदी पगचे तला इ स्वामी संप्रेडी घाक तइं इम मरिइ आहारिइं हलं तोजन करउं इम जीर्ण श्रेष्टि
इ इम मनोरथ करतां लिं स्वामी अत्तिनव श्रेष्टिन इघरि पहुंता । पेलइ गया कि वइ इ इती घारी
नी परिइं द्वासी पाहिइं । कोमासमा वाकला ॥ दिवराव्या । देवता घरि सुवर्णवृष्टि करइ । दे
वइं दुंदुभि वडावइ । राजा लोक सहू मिलि नं श्रेष्टि सवक्रणि हिइं प्रसंसि उ । स्वामी
अनेघ विहार कीधउ । तिसिइं जीर्ण श्रेष्टि तिहां मी इक्षवडं इतिमउ भाद संभली । छीतवइ धिग
कुउ मूढइ इ हूं अताणीउ जउ स्वामी माहरइ घरि नाव्या इसिइं तीणइं नगरि तहीइ जि । एक
केवली गुरु आव्या राजादिक लोक वांदी पूछइ । सांपनगरमाहि कुण गाढउ पुण्यवंत कुण
कहइ । जिनदत्त जीर्ण श्रेष्टि राजा कहइ स्वामी श्री महावीरनइ पारणउं अभिनवइं करावि
ण्य तावृत अइणी । इणइं पारणानी लाचना लावतइं बारमा देवलोक जोगउ पुण्य उपाजिउं तेत ५५
लइ जउ देवदुंदुभि वाजत तीन संभलत तउ बिकुं घडीमाहि केवलज्ञान ऊपाजत । अनइ अभिनव श्रे

ष्टि कुइ पात्र दान दीधां सुवर्णवृष्ट्यादिक फल पामिउं इ अधिकउं कांइ नहीं तावरहितपणी
ते सांभली राजादिक जीर्ण श्रेष्टि प्रसंसिउं । धर्मपाली बारमइ देवलोकि पहुतउ । गुरु माननि मंत्रणा ना
वस्त्र छिडिइं करवा एवडां फल । तलइ अगुरु चंदन संपूर्ण हूं ॥३॥ अगुरु चंदनानि मंबालाब बो
धः समाप्ता ॥३॥ बीजउ अधिकार हूउ ॥३॥ ८ ॥ हिव पडिक्कमणानउ विधि लिखीइ छइ । पडिक्कमणां पां
च कहिइं । देवसिय १ राइय २ पक्खिअ ३ चउमासि अ ४ संवच्छरीय ५ तेहमाहि देवसिअ पडिक्कम
णउं रात्रिना पहिला पहरलगइ कीधउं सूत्र हुं जेह कहइं निश्चय कहइ अनइ श्री व्यवहार
ग्रंथमाहि पुरिमड्ढलगइ करवउं कहिउं छइ हुं पाखी चउमासी संवच्छरी पत्रिसि इ देव
सिअनी परिइं जाणवां । पहिलउं इ उगुरु आचार्यादिक प्रत्यक्ष कहइ अथवा तेहना प्रतिष्टि
आचवणारिय कहइं । तउ तिम हूउं नहीं तउ कहइ इं पडिक्कमणा निश्चय कहइ । तेह ज्ञाना पकरण
तणी कर वाली नी स्थापना नउकारपूर्वक । पंचिंगाह तणी करता दीसइं ॥ ॥ पंचिंदिय
संवरणो । नवविह बंभचेर गुत्तिधरो । चउविह कसाय मुक्को । इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१ पंचमह
व्वय जुत्तो । पंचविहायार पालण समत्थो । पंच समिओ तिगुत्तो । छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥२ पंचिंदिय पांच
संवर हार । नवविध ब्रह्मचर्य गुप्तिनउ धरणहार । चउविध चिकुं कषायेर

...गुण एवंअढारगुणेसहित॥७॥श्री॥वलीपंचमहव्रत पांचमहाव्रतेसंयुक्त पंचविहाण ज्ञाना
...दिकपांच आचारपालवासमर्थ पंचसम पांचसमिति समतउ तिगुत्तोण त्रिहुंगुप्तेगुप्तउ एवांगुण
छत्रीस बेमेलीइं तउछत्रीस छत्रीसगुणो मा एहे छत्रीसगुणे करीसहित माहरइगुरु तेहनी स्था
पना करउं छउं को कहिसिइं सिद्धांतमांहि तउ अर्थमांहि नउ करवाली थापवीनथी कहा
म अएथाद पदिनउ करवाली थापीनइ जेपडि कमगाजंकीजइं तेह पाछिइं आणकीधउसल
त्रतिहांउमकहिवउं एउ जउ सूत्रवस्तनजेहला एपाहिलउं समवलूइं धर्मकर्तव्यतउ अर्थमाहि
इ मूलगीरीतिइं डिकरिवउं अनइयोग किन्हइनमिलइ तउ मिठोलउ आणकीधा
पाछिइं अपवादिइं कीधउं रूडउं हुंतइ सणीछे दयंक्षमाहि आणकीधानउं प्रायश्चित्त थोड
उं कहिउ अनइ अपवादिइं प्रायश्चित्तथोडउं क हिउ छइं तथा वंकंप॥ अविहिकयावसम
कयं उस्सुअवयणेलणं तिमद्दव्वं जमहापायच्छित्तं अकप्पगुरु अकप्पेलक्कं॥ तेहतणापुस्त
नीस्थापनाकरीइरिआवहीपडिकमी विधिपूर्वकसामायिकलीजइ सामायिकदंडकउच्चरा
॥७॥श्री॥ करेमिभंते सामाइअं सावज्जंजोगं पच्चक्खामि जावनिअमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहे ५६
णं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि तस्सभंतेपडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पा

MEMORIAL

णंवोसिरामि॥७॥ सभंते हे भगवन हुंसामायिककरउं समतापरिणामआणउं सावज्ज सावद्यलीण
इंकरीअवद्यपापलागइ पच्चक्खउं जेयोग्यकहीइ च्यापार तेपच्चक्खामि कहीइ निषेधउं केतलीवे
लालगइं जीवनि जांलगइ नियम कहीइ नचमजं सामायिकव्रत तेपज्जुवासउ कहीइ सेवउंपत
लइजघन्यतउ बिघडीमात्रसामायिकनी वेलां जाणिवी हवइनियमकिसिइलागइछइं तेक
हइ दुविहं तिविहेणं द्विविध त्रिविधिइं पनिय म त्रिविधनउ सिउं अर्थ मणेणं वायाए काएणं
मनिइं कायिइं करी हवइ द्विविधनउ अर्थ कहइ इनकरेमि नकारवेमि किसिउंइ पापविडं
घडीलगइं आपणपइं करउं नही अनेरा॥ पाहिइं करावउं नही भाण अनुमतिनउ
नामइ हमछइं पलइं नहीं पहम अर्थोलउ श्री श्रावकनाभांगा तेरकोडिसइंचउरासी
कोडिबारलाखसत्यासीसहस्सबिसइं॥१२८४१२२ ८०२०२ एतलाकपडइं तेग्रंथांतरथकउजा
णवा तस्सभंते पाछेआगइपापकीडलागउंछइ तेहंसभंते हे भगवन पडिक्कमामि हुंपडिकमउंमन
माहि मिच्छामिदिउं निंदामि आत्मासाक्षिकनिंदउं आहामइं पापकांइं कीधउं गरिहामि गुरुसा
...तेपापगरिहउं भगवन जेमनपवडउ अपापमूकउं अप्पाणं वोसिरामि॥७॥ एहापाप
...णहार आपणउं आत्मा वोसिरावउं छउं॥७॥ हवइ पसंगिइं सामायिकपारवानीगाहकहा

२॥७॥ श्री॥ सामाइयअवयजुत्तो जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो। छिन्नइ असुहं कम्मं
सामाइयजत्ती आवारा॥२ सामाइया॥ जावमाणोवज्जोलगइ सावद्यव्यापारनइ विषइ मनमाहि
नियमसंयुक्त हुइ मांलगइ सामायिकव्रतनउधणी कहवाइ तिंमइ० जेतलीवारलिइ तेतली
वार अशुभकर्म छेदइ॥७॥ इवइं जेके तलाइ कहइं सामायिक दिनप्रतिअ समयकालकीजइ
इ आधिक्य उनलीजइ ते निषेधवइ सामाइयंमि उ कए समणो इव सावओ हवइ जम्हा एए-
ण कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा॥२ ए श्रीभद्रबाहुस्वामि प्रणीत आवश्यकनिर्यु
क्ति माहिली गाथा॥ सामायिक कीधइ छंत इ श्रावक मनि इं वचनि इं कायइं साव
द्य करइ नही करावइ नही तेहतणी समणो इव श्रमण महात्मा सरीषउ हुइ। नि
टोल महात्मा नही जेहतणी अनुमति मोकली छ। इतथा देशतः पोसह लीधइं सामाइक ठ
तइ आधाकर्मी आहार इहां हठ इ मोकलउ मूंकिउ छइ जेहतणी आनगी वचूर्णि माहि इ
मकहिउ जं तउ छिद्रकउं तं कडसामाइअ विलुज्जइ अनइ महात्मा आधाकर्मी किमइं न लि
इं तेह तणी निटोल महात्मा नहीं भणासरीषउ कहीइ एएण एह कारणइ तणी बहुसो घणी घणी ५७
वार सामायिक लेवउं जिवारइं पहुचिइ तिवारइं लिइ जियतनइं कां जाहि खणि उनाइसामा

इअंकरेइ तथा श्री आवश्यक चूर्णि श्रावकप्रज्ञप्तिइत्यादिक घणा ग्रंथमाहि वली सामायिक
लेवउं कहिउं छइ॥७॥ सामाइअ पोसहसंठिअस्स जीवस्स जाइ जो कालो सो सफलो बोधव्वो से
सो संसारफलहेऊ॥३ सामा०॥ सामायिक तथा पोषधि लीधइं जीवहूइं जे कालजाइ सो फलो पु
तो सफल जाणिवउ॥ सेसो० थाकतउ काल संसार रूप जाणिवा लिनइ कारण॥७॥ सामायिक वि
धिइं लीधउं विधिइं पारिउं विधिं करतां जे कांई अविधि खंडन विराधना हुई ते मनिवचनिका
यि मिच्छामिदुक्कडं॥७॥ कायोत्सर्गमाहि जे आठ अतीचारनी गाथा कहीइ ते विचारणी इम
इं नाणंमि दंसणंमिय चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि आयारणं आयारो इअ
एसो पंचहा भणिओ॥१ नाणंमि० ज्ञान दर्शन चारित्र तप अनइ वीर्य० आय एहनइ वि
षइ जे आचरवउं ते ज्ञानाचार दर्शनाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार ५ इम
सो एपांच प्रकारि आचार ज्ञानीए कहिउ॥७॥ पहिलउं ज्ञानाचारना आठ प्रकार कहइ छइ का
ले विणए बहुमाणे उवहाणे तह अनिन्हवणे वंजण अत्थ तदुभए अट्ठविहो नाणमायारो॥२
कालेवा कालिक कहीइ वेलाइं विणए विनयपूर्वक भणवउं बहुमाणे गुरु उपरि बहुमान ध
रवउं उवहाणे उपधान वही नइ भणवउं नहीं अनिन्हवणे गुरु अपलपवउं नहीं वंजण व्यंजन

नेत्र ह्वार अद्ध अर्थ। तदुभय बेनां शुद्ध करवां अष्ट ए ज्ञानाचारनां आचार भेद। ए जिम कह्या छइ
तिम न करइ। तेह आवइ ज्ञानाचारना अतीचार कह्या ८।। २॥ हवइ दर्शनाचार। निस्संकिय निक्कं
खिय। निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ। उववूह थिरीकरणे वच्छल्ल पभावणा अट्ठ ८। निस्संक जि
न भाषित एकइ बोलनइ विषइ साचा शुद्ध नीशंका न करिवी। एका तिहां साचउं जिमा निवडं
निक्कंखिय परलोगार्थे केहमानउ तपनउ गुण देषीन   इ परदर्शननउ अभिलाष न करिवउ। अव
चा साधु साध्वीमां देह वस्त्र मल मलिन देषी सूग न   करवी। अमूढदिट्ठी अ मिथ्यात्वीनइ ध
र्मि लगार ध्रुसाचना देषी मन माहि। एहइ छि।   सिउं साचउं घटइ इम मूढ न थावउं
उववूह उपबृंहणा सम्यक्त्वधारी मनुं घोडउं गु   णप्रकाशिवउं। थिरीकरणे धर्मि जिहां
उमनटलटलतउं जाइ। तेहनउं स्थिर करवउं। वच्छ   ल्ल साधर्मिक ऊपरि एकांत वच्छलपणउं
पभावणा धर्मनी प्रभावनाना महोत्सव। तेह्ना करइ जे देषता मिथ्यात्वी हुइ एपणा जिनइ। ए आठ भेद
दर्शनाचारनी जेहनु एइ मन करइ तउ ए आवइ दर्शनाचारना अतीचार कह्या ८।।३।। हवइ चारित्राचार
पणिहाणजोगजुत्तो पंचहिं समइहिं तीहिं गुत्तीहिं। एस चरित्तायारो अट्ठविहो होइ नायव्वो।।४।। पांच स ५८
मिति। इर्यासमिति धुरा प्रमाण आगलि हाथ भुइं सोधतउं हींडइ। किसिउं इ ध्याढेपन करइ।।१।। भाषा

समिति। सपाप वचन न बोलइ।।२।। एषणासमिति। सोल उद्गम दोष गृहस्थना कीधा। सोल उत्पादनादो
ष महात्माना कीधा। दस एषणादोष विहरतां लागइ। एवं ४२। पांच संयोजनादिक दोष जिमतां लागइ
एवं ४७ दोषरहित आहार लिइ ३। आदाननिक्षेपसमिति सावइ तेवस्तु लेतउ मेल्हतउ पडिलेही प्र
माजी लिइ मेल्हइ।।४।। पारिष्ठापनिकासमिति। विधिमार्गि आहारादिक अधिकउं थिइ राण हुं
ति छाडिइ परिठवइ अथवा मात्रादिक परिठवतां   कीडीना नगरा हरियकायादिक टालइ।।५।। ए
पांच समिति। हवइ त्रिणि गुप्ति। मनोगुप्ति मन संवरइ।   आर्त्त रौद्र ध्यान आलजाल न चीतवइ। वच
न गुप्ति वचन संवरइ। गाहा काजपारवइ इन।   बोलइ आलजाल वचन वर्जइ २। काय
गुप्ति काय संवरइ। अणमार्जितं मइरन हलाच   इ अणप्रमार्जिइं थानि न सलसलइ। तितिहवी।।
गइ नही ३। ए त्रिणि गुप्ति एह आवनइ विषइ महा   त्मा सादिम अनइ श्रावक सामायिक पोसाहि
लीधइ। पणिहाण प्रणिधान योग। एकांत पालिवा न इध्यानि लागइ। ए आठ भेद चारित्राचार जइ इमा
ने पालइ तउ ए आवइ चारित्राचारना आघ अतीचार कह्या ८।।४।। हवइ तपाचार। बारसविहंमि।
विनये। सब्भिंतर बाहिरे कुसल दिट्ठे। अगिलाइ अणाजीवी नायव्वो सो तवायारो।।५।। बार सब्भिंतर छ
ष्ट बाह्य छ भेद अभ्यंतर एवं बार भेद कुसल कुशल परमेश्वरना भाषित तप नइ विषइ अगिलाइ गि

॥नथाइं साजइनही अणाउरी थी । आजीविकाइहलोकहेतुनही । किंतु कर्मक्षयनणीकर
इ नायवो सोतवायारो तेतपाचारना । णिवउ जउ नकरइ तउ तेबारइतपाचारनाअतीचारजाणि
वा ॥ ८ ॥ श्री ॥ बाह्यतपना बभेदना नामकहइछइ ॥ अणसणमूणोअरिआ । वित्तीसंखेवणारस
उ कायकिलेसो संलीणयायबज्झोतवोहोइ ॥ ६ ॥ अणण अनशनउपवासादिक ऊणोअरि
आ ऊनोदरी केवलएकाबिकंउ लउं कवल २ वित्तीसंव वृत्तिसंक्षेपविहरवाजाइतउमहा
तमा आउस्त्रीनइं अथवा पुरुषइं जिमइहां वि इंविहरउंइत्यादिनू अनइ आचकथान
द्रव्यादिकनापरिमाणकरइ रसच्चाउरस । त्याग । विगइगुल्यां तल्यां सालणादिक
मउ नाम लिइ ॥ ४ काय किलेस ॥ कायक्लेश लोच । दिकय संलीण संलीनता अंगोपांगसुसं
वृत तराषइ ॥ ६ ॥ बज्झो ॥ एबाह्यतप छभेद ॥ ८ ॥ ह वअभ्यंतरतपनाछभेदनामकहइछइ पा
यच्छित्तं । विणउ वेयावच्चं तहेवसज्झाउ झाणंउस्सग्गो विय अभिंतरउतवोहोइ ॥ ७ पायण प्राय
श्चित्त गुरुकन्हइ आलिम थी आलोयणलेईगुरुदत्ततपलेख शुद्धपइसारइ ॥ १ विणउ विनययुवा
दिकक्रइं आस्फकज्ञानादिक प्रतिपत्तिकरइ ॥ २ वेयावच्चं ॥ गुरुबालक वृद्ध गिलाण तपस्वीनउं ५८
वेयावच्चकरइ तहेवसज्झाउ स्वाध्यायवाचना पृच्छना परावर्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथारूपपंचविध

स्वाध्यायकरइ झाणंध्यानआर्तरौद्रध्यान टाली धर्मध्यानशुक्लध्यानध्याइ पउस्सग्गो ॥ काउस्सग
मक्रिनइंमानिश्चघणउंइकरइछइ एछभेदे अभ्यंतरतपकर्मक्षयनउएअंतरंगकारण तेहनणी
एहकहइंअभ्यंतरनाम पेलाकहइंबाह्यनाम बाह्यलोकमाहि प्रसिद्धनणी ॥ ८ ॥ हवेवीर्याचार आण
गूहियबलविरउ परक्कमइजोजहुत्तमाउत्तो । जुंजइजाहाथामं नायव्वोवीरियायारो ॥ ७ अणगूहं
बलेकह्यांइं सहइनउं वीर्यमननउं तिणोपचइनहीं परक्कमइ यथोक्तबिधिनइबिषइउद्यमकरइ
जुजइअबलनइं अनुसरइंमननवचननकायनका यनइंबीर्यउद्यमिंगोपवइयापिक्रमवइतो
त्रिणिवीर्याचारना अतीचार एगाथाकहइतउ । जेकांइंपांचआचारनाअतीचारएगाथा
कहइतउ जेकांइंपांचआचारनाअतीचारगाथा । कइं तेसंसारइते लणीएआवश्यकइअती
चारगाथाएनाम ॥ ८ ॥ श्री ॥ आयरियउवज्झाए सीसे साहम्मिए कुलगणेअ जेमेकेइकसाया सव्वे
तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ आयरिए ॥ आचार्यजिहादशांगी मउअर्थकहइ उवज्झायउपाध्याय जेद्वादशां
गीसूत्रपढावइं सीसेशिष्यपासेवयासीषइं साहम्मिए साधर्मिक सरिखा धर्मनापालणहार कुलगणेअ ।
कुलकहीइएकआचार्यनउशिष्यसंतान गणकहीइघणा आचार्यनउंशिष्यसंतान तेहनइविषइ
जेमइंकेइंकिस्याइक्रोधादिककषायकरूपना सव्वेतिए तेसर्वत्रिविधमनवचनकायेकरीखम
षउं जेमिंजेजकइंकिस्याइक्रोधादिककषायकरूपना सव्वेतिए तेसर्वत्रिविधमनवचनकायेकरीखम

नत्रंबत्रं॥ श्री ॥सव्वस्स समणसंघस्स भगवउ अंजलिं करिअ सीसे सव्वं खमावइत्ता खमामि सव्व
स्स अहियंपि॥ १ सर्वस्य श्रमणसंघस्य भगवंतकुइं अंजलि करी नेहा घमाघइ वडावी सह्वा सर्व
खमावीकरी खमाव छुं सर्व कहइ नइ खमउं॥ छ॥ ॥सव्वस्स जीवरासिस्स भावउ धम्मनिहिअ
नियचित्तो सव्वं खमावइत्ता खमामि सव्वस्स अहियंपि॥ २ सर्व धर्मनइ विषइ निज आपणउं चित्त
। पीकरी सर्व जीवरासिनइ खमावीनइ खमाव छुं इ सर्वि काहिनइं खमउं॥ सुदेअ य भगव
इ नाणावरणीयकम्मसंघायं तेसिं खवेउ सय यं जेसिं सुअसायरे भत्ती॥ १ सुअ ण श्रुत
सिद्धांतना आधिष्टायिका देवता सरस्वती भग वंति तेहउ कषमउं नाणावरण ज्ञानाव
रणी अकर्मनउ संघात समूह सदैव रूपउं फेडउ। जेसिं जेहनुं कुइं श्रुतरूपिआ सागरस
मुद्रनइ विषइ भक्ति छइ॥ छ॥ ए गाथा श्रीपाक्षिक सूत्र सिद्धांतनइ विषइ छइ तेहनणी एकाउसग
करतां मिथ्यात्वनी शंका न करवी॥ छ॥ ॥ जीसे खित्ते साहू दंसणनाणेहिं चरणसहिआ हिं साहं
ति मुक्खमग्गं सा देवी हरउ दुरिआइं॥ जीसेण॥ जेहनइ क्षेत्रि भूमिकाइ साधु महात्मादिक दस
व दर्शन ज्ञान अनइ चरण चारित्र एहे करी साहंति मोक्षमार्ग साधइं सा देवी व ते क्षेत्रदेवता दुरितपा ६८
प हरउ क्षेत्रदेवतानउ काउस्सग श्री वयरस्वामिकी धउ सांभलीइ अनइ श्रीभद्रबाहु स्वामि प्रमुखिक

खवउ काहिउ बइ तेह मिथ्यात्वी नही॥ छ॥ ॥ ज्ञानादिकगुणयुतानां नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानां
विदधातु भवनदेवी शिवं सदा सर्वसाधूनां॥ १ ज्ञान ज्ञानादिकगुणेकरी सहित नित्य नित्यमेव स
ज्झाय संयमनइ विषइ रत आसक्त। एहेवा सर्वसाधुकुइं भवनकहीइ घरनी अधिष्टायिकादेवी।
शिव कल्याणकरइ सदा भवनदेवता नउ काउस्सग श्रीभद्रबाहु स्वामि आवश्यकमाहि करव
उ करइ कहिउ छइ तेहभणी मिथ्यात्व नही छ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य साधुभिः साध्यते क्रिया
सा क्षेत्रदेवता नित्यं भूयान्नः सुखदायिनी॥ ॥छ॥ २ यस्याः जेहनउं क्षेत्र आश्रीय साधुम
हात्मा पधर्मनी क्रिया साधइ साध्यते। क्षेत्रदेवता नित्यमेव अम्हकुइं सुखदाय
क थाउ॥ श्री ॥ ॥नमोऽस्तु वर्द्धमानाय स्पर्द्धमा नाय कर्मणा। तज्जयावाप्तमोक्षाय परोक्षा
कुतीर्थिनां॥ १ नमोस्तु॥ वर्द्धमान श्रीमहावीर प्रभु। तिइं नमो नमस्कार हउ स्वामी किसिउ छइ स्प
र्द्धमान कर्म वइरी सिउं स्पर्द्धा करइ छइ तज्जय तिहं कर्म वयरी कुइं जीपीनइ मोक्ष पहुतउ छइ
परोक्ष कुतीर्थिक परदर्शनी कुइं परोक्ष वेगला छइ तेह स्वामीनउं स्वरूप नपीछइ इसिउ भाव॥ छ॥ य
षांविकचारविंदराज्या ज्यायः क्रमकमलावलीं दधत्या सदृशैरतिसंगतं प्रशस्यं कथितं सन्तु शिवाय
ते जिनेंद्राः॥ २ स्वामी कुइं विहार करतां देवता पगहेठि विसु वर्णमय नव कमल संचारइं ईहइं कवि

नीघटनाविकचाय।सुवर्णमयकमलनी श्रेणिइं।ध्यायः क्रमण स्वामीनइ पदकमलधरतीइं
इ।सितंकादित्यं सद्दाग्रो: सरिषा।सितं॥मिलवतंअपाररूडउं।ङिहनणी।अम्हेक्कमलस्वामी।
मापगतेहइ कमनमे अम्हयक इं मिलतां अपारशोभतं बगं। एक चिघटत्ता। संतशिवाय
तेजिनेंद्रशिवमोदईस्तुघात॥३॥कषायतापादितजंतुनिर्वृति।करोतियो।जिनमुखांबुदो
सश्रुक्रमासोद्भवद्वष्टिसंनिभोदधातुवृष्टिम। ।यैचिस्तरोगिरां॥उंजेआगमहजिनमुखाप
ननामुखरूपिआमेघ धिकउक्रपनउकषाय पा।कषायरूपतापिकरीपीड्यांजंतुप्राणी
कइंनिर्वृतिसमाधिकरइ।सस्तुतय।तेज्येष्ठ मासनीमेघवृष्टिसरीषउं गिरा।विस्तर।
वाणीनउ।विस्तरमरुक्कइंउष्टिकरउ॥४॥वि शालदलोचनदलं प्रोद्यदंताशुकेशरं
पातचीरजिनेंद्रस्य।मुखपद्मंपुनातुच॥२वीर॥ जिनेंद्रण।श्रीमहावीरनउंमुखरूपियंपद्म
कमलप्रतातिउम्हक्कइं।पुनातुपवित्रकरउकिसिउछइ।विशाप।विशालविस्तीर्णलोचनेरूपिआ
जिहांदलपानडांछइं।प्रोद्यउल्लसत्तां दांतनां किरणरूपिउ केसरपराग जिहांछइ॥४॥ ॥येषा
मभिषेककर्मकृत्वा मत्ताहर्षभरात्सुखंसुरेंद्राः तृणमपिगणयंतिनैवनाकं प्रातः संतुशिवा
यतेजिनेंद्राः॥१॥येषाण।जेहतणाअभिषेकमहोत्सवकरी।मत्ताप।हर्षिइंकरीमाता।घिकाइंद्र

इंद्राण।देवलोकतृणाइंप्रायनगणइ।प्रातः।प्रभातितेजिनेंद्रशिवमोक्षदेउघात॥४॥ ॥कलंक
निर्मुक्तममुक्तपूर्णतं।कुतर्कराहुग्रसनंसदोदयं।अपूर्वचंद्रंजिनचंद्रभाषितं।दिनागमेनौमिबु
धैर्नमस्कृतं॥उ।जिनचंद्रभाषितस्वामीनउ।सिद्धांतअपूर्वचंद्रमा।कलंकप।कोदतणीकलंकरहि
त।अनइअमुक्तपूर्णतं।किवारइंसंपूर्णपणउंनमूकइं।खांडउंनथाइ।वलीकुतर्कप।परदर्श
नीनरूपिआराहुकइं।सामन्ययसइछइ तथासदोदयं।सदाकालिउदयछइ।आधिमइन
हो।तेहतणी।अपूर्वचंद्रमाश्री।सिद्धांत। बुधविद्वांसेनमस्कारिउ।दिनागय।प्रभाति
कुस्तवउं॥४॥वरकनकशंखविद्रुम। मरकतघनसंनिभं विगतमोहं सप्तति
शतंजिनानां सर्वामरपूजितंवंदे॥१॥वरप्र धानकनकसुवर्णशंखसंखा।विद्रुमपरवाल
उ।मरकतनीलउंरत्न।घनमेघ।तेहकइंसंनिभ। सरीषायतनलइं।पंचवर्ण।विगतमोहजीतउछइ
सप्ततिप।एकसउसत्तरिसत्तरीर्थंकरउत्कृष्टइकालिविहरमाणकइं।सर्वाप।तेसर्वदेवताएपूज्याछंवा
दउं॥४॥नमोस्तुवर्द्धमानाय।पत्रिमित्रुण।विशाललोचनदलं।पत्रिमिघुइ।अनइवरकनकप।तला
वांनांपूर्वमाहिलां।इसिउप्रघोषछइ।तेहतणीस्त्रीतणाजानलरइ॥४॥अढाईद्वीपसुदीवसमुद्देसु

MEMORIAL

६१

पनरसुसुकम्मभूमीसु जावंतिकेइसाहू रयहरणगुछयपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा अठ
रसहस्ससीलंगधारा अरकयायारचरित्ता तेसव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ ७ ॥ अढाइज्जदु
द्वीअनइधातकीखंडपविद्वीप पूरा त्रीजउपुरकरवरद्वीप अधिलउ एतलइं अढाईद्वीप अन
इ बिसमुद्र पनरसमुण तेहमाहिं पांचभरत पांचेएरवत पांचेमहाविदेह एहं पनरेकर्मभू
मिकाए जावंत जेतला केतला साधुछइं रयहरणरजोहरणउघउ एतलइं महात्मा
नउवेषसंपूर्णलाभइ गुछंण ॥ महात्मानां इंसीकी नउंकपिलउ तेपकरण एतलइंप
त्रीनउंसमुदायसंपूर्णलाभइ पडिग्गहपात्र त्रनं एतलानाधरणहार पंचमह० पांचमह
व्रतनाधरणहार अठारसए अढारसहस्रशी लंगनाधरणहार अरकयाए अखंडितअखंड
आचारचारित्रपालइंछइ तेसव्वेए तिसर्वे सिरसा मस्तकिइं मणसा मनिइंकरी मत्थएण
वंदामि वांदउंछउं ॥ ७ ॥ चउकसायपडिमल्लुल्लूरणु दुज्जयमयबाणमुसूरणु सरसपि
यंगुवन्नगयगामी जयउपासुकुवणत्तयसामी ॥ १ ॥ चउक्कसायपडि० च्यारिकषाय ६२
रूपिआ प्रतिमल्लवइरीउल्लूरइ फेडइंछइं दुज्ज० दुज्जयमदनतणांबाणमुसुमूरइ ॥ गा ॥ः

तोडइछइ सरस० नीलाप्रियंगुवृक्षतेहनइवर्णिछइ गयगामी गजगति हालइछइं एहवुभुवण
त्रयजगत्रयतणउस्वामी पार्श्वनाथजयवंतउहुउ ॥ ७ ॥ जसुतणुकंतिकडप्पसिणिद्धउ सोहइफ
णमणिकिरणालिद्धउ नितंवजलहरतडिलयलंछिय सोजिणुपासुपयछउवंछिय ॥ २ ॥ जसुणउ जे
हनादेहिनीकांतिनउंकडप्पसमूहफणामणिनेरातेकिरणेकरी मिश्रघितउंकंनउ नव जिमनव
उमेघ० तण वीजइंकरीसहितहुइ तिमिजदी सइछइ सोपते श्रीपार्श्वनाथमनोवांछितदि
उ ॥ ७ ॥ एतलइंपडिकमणासंबद्धनांन्हांनान्हां सूत्रसर्ववखाणिआ ॥ श्री ॥ दण ॥ वंदित्तुस
व्वसिद्धे धम्मायरिए असव्वसाहूअ इछामिप डिक्कमिउं सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ वं
दित्तुसव्व० सर्वतीर्थंकरदेव अनइजे सिद्धजे मोक्षिपहुता धर्माचार्यजे देइधर्मबूझवि
उ चत्राचार्य उपाध्याय सर्वसाधुमहात्मा एपांच परमेष्ठियादि इछामिपडि० प्रतिक्रमयां
निवर्तिवावांछउं कहिधिकउ सावग० श्रावकधर्मनइविषइ अतीचारलागाछइं तेहिविकउ
॥ ७ ॥ हवसामानिइं अतिचार आलोइछइ जोमेवयाइआरो नाणेतहदंसणेचरित्तेअ सुहुमोवा
यरोवा तंनिंदेतंचगरिहामि ॥ २ ॥ जोमेव० जेमइंकउं व्रतनइअतीचारलागउ नाणे ज्ञानाचारविषइ
उ तहदंसणे दर्शनाचारसम्यक्तविषइ ॥ ७ ॥ अनइचरित्तेअ अनइचारित्राचारविषइवलीत्रा

षिइं तपाचार वीर्याचार अनइ संलेषणा। विषइनु सूक्ष्म मोटा वचची सासत्तै अतीचार माहि
सूक्ष्म मान्हउ अथवा बादर मोटकउ तं निंदे ते हुं निंदउं आपणापासा। खिगरहउं गुरुसाखिइ
वलउ बीसासमउ अतीचार मेली दे बाडी इत्यइं। ज्ञानाचारि दर्शनाचारि चारित्राचार प्रत्येकं ८।८
अतीचार एवं २४ सम्यक्त्वना पांच पांच मेलतां साठि एवं ५९ पनरकर्मादाननां एवं ७४ संषणाना पां ३
च एवं ७९ तपाचारिना बार एवं ९१ वीर्याचारिना त्रिणि एवं ९४ अतीचारना णिवा एहं
माहि पंच आचारनाइं अतीचारनुं स्वरूप॥ ॥ ॥ जिहानाणंमि दंसणंमि य एउ गाहा वखा
णी तिहिं च्यक्कि करइं कहिउं ७५ गाथा कतां सेवे अतीचार आगलि च्यक्कि इं कहि
सिइं ॥ ॥ हवइ पाछिइं परिग्रह इत्यादि पापनउं मूल तेह तणी परिग्रह आश्री कहइ छइ ५
दुविहे परिग्गहंमी सावज्जे बहुविहे य आरंभे करावणे अ करणे पडिक्कमे देसियं सव्वं
३ दुविहे परिग्रहंमी द्विविध परिग्रह एकसस चित्त परिग्रह जे द्विपद चतुष्पद रूप
बइ। बीजउ अचित्त परिग्रह जे द्रव्यादिक नउ सावज्जो पापपरिग्रह सावद्य स पाप
बइ तेहनइ विषइं बहुविहे अ आरंभे बिहुं विध अनेक प्रकारनु आरंभ तेजीवा हि ६३
सादिक मिषावादिक कागउ करावतां अनइ करतां तथा च ३ छइं

अनुमोदतां जे अतीचार लागउ पडिक्कमे ते सर्व देसिअं दिवसिक दिवस संबंधिउं पडिक्कमउं निवर्त्तउं
बनं देसिअं सव्वं इम वचन कहइं ते हुं कुं इउं देसिअं इम साचउं प्रसातनइं प्रतिक्रमणइं राइयं इम
कहि वउ रात्रिक रात्रि संबंधि उं इसिउं इम साचउं प्रतातनइं प्रतिक्रमणइ राइयं अथवा इम पक्खि
अं चउमासिअं संवच्छरिअं इसिउं पद नउ फेर जाणिवउ ॥ ॥ दवपहिलउं ज्ञानाचारना अ
तीचार आलोअइ छइ ॥ ॥ जं बद्धं मंदिएहिं चउहिंकसाएहिं अप्पसत्थेहिं रागेण दोसेण ×४×
व तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥ जं बद्धं अशुभ ज्ञानावरणीय यकर्म पांचे इंद्रीय करी मोकि
उ ले करी चउ हिंकसाण चउ कसाये अप्रशस्त मूपाडू एक रागेण रागि इं अथवा द्वे
षिइं करी बांधिउं तं निंदे ते निंदउं गरहउं ॥ ॥ दर्शनाचार आठ अतीचार आलोय इ छइ
आगमणे निग्गमणे ठाणे चंकमणे अणाभोगे अभिओगे अ निओगे पडिक्कमे देसिअं सव्वं
॥५॥ आगमण ॥ मिथ्यात्वीनां भवनादिक देवालय नइं स्थानकि इं आगमन निर्गमन जावा आविवा ति
हां गमणि मिथ्यात्वी नइ स्थानकि क्रीडा रहतां चंक्रमणि तिहां जिन रइं परइं फिरवा अणाभोगे अ
साचवतां नपणाइं अभिओगे राजादिकनइं अभियोगइं बलात्कारिइं निओगे मंत्रपदइ सगिपुदा
दिकनइं योगि व्यापारि चापरतां जे पापबांध्यउं जेपापपडिक्कमे सर्व दिवस संबंधिउं पडिक्कमउं ॥

हवइ सम्यक्त्वना अतीचार आलोइइ छइ ॥ संकाकंखविगिंछा पसंस तह संथवो कुलिंगीसु सम्मत्तस्स
ईआरे पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥६॥ शंका जिनभाषित तत्त्व तेहनइ विषइ साचउ किंइ ऊंडउं इसिउ सं
देह १ ते शंका कंखकांक्षा अल्पस्वप्नादिक गुण परदर्शननइ माहि देषी तेह कउ परिमति अभि
लाष करइ ते कांक्षा ॥२ विगिंछा धर्मकी धानउं फल कांइ हुसइ किं नही राषे कोजो तउ जा
इइ सिउं संदेह विचिकित्सा। अथवा ऋषिना वेद हमलिन देह देषी जुगुप्सा दुगंछा करइ
ते विद्वज्जुगुप्सा कहीइ ३ ए संस अहो एमोटउ तपस्वी इत्यादिक मिथ्यात्वीनी प्रशं
सा ४ तह संथवो तथा संस्तव परिचय कुलिंगी मिथ्यात्वीनउ समस्तव ५ ए पांच सम्य
क्त्वना अतीचार जे कांइ लागा पडिक्कमे देसिअं। बंधे आप डिक्कम उं छउं ए श्री सम्य
क्त्व दृढ पालि वाचिकउं श्री कृष्ण श्रेणिक प्रमुख निटालिउ अविरत इथिकाइ तीर्थंक
र पदवी लहि सिद्धि ॥ एहनी कथा प्रसिद्ध ॥७॥ ॥ हवइ चारित्राचारना अतीचार आलोइइ छइ
छक्कायसमारंभे पयणे य पयावणे य जे दोसा अत्तट्ठा य परट्ठा उभयट्ठा चेव तं निंदे छक्काय
॥ माटी पाणी २ आगि ३ वायु ३ वनस्पती ४ त्रस ५ जीवरूप छजीवनिकाय कहीइं तेहनउ
समारंभ कहीइ संघट्ट परिताप उपद्रव तिहां तथा पयणे य पचतां पचावतां अत्तट्ठा आपण ६४

इ काजिइं परपरकुणादिकनइं काजिइं उभयट्ठा चेव तंनइं काजिइं करतां निरथंक रागद्वेषादिके
करी जे दोष लागा ते निंदउं छउं ॥८॥ पंचन्हं मणुव्वयाणं गुणव्वयाणं च ति मइआरे। सिक्खाणं च चउण्हं
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥९॥ ईहं बार व्रतना विचार कहीइ छइ पांच अणुव्रत तिणि गुणव्रत च्यारि
सिक्षाव्रत ए बार व्रत श्रावकनइ तेह माहि पहिलउं प्राणातिपात विरमण १ मृषावाद विरमण २ अ
दत्तादान विरमण ३ मिथुन विरमण ४ परिग्रह प रिहार ५ ए पांच अणुव्रत कहीइं माहात्मानइ
पांच महाव्रत तेहनी अपेक्षाइं अणु आसरी थां। नान्हां ते भणी अणुव्रत नाम जे भणी
पहिलउं व्रत महात्मानइ जोईइ तत्र वीसरवी सा श्रावकनाहाइ सवा १ विसवा विसउ
जिउं किम जीवा सुहुम संकप्पारंभ अतेद वि हा सविराहा निरवराहा सावेक्खा चेव निर
वरका ॥२ एगा हनन अर्थ जीवना बिसेद स्थूल बादर सूक्ष्म कहीइ जे एकिंद्रिय माटी पाणी आ
गि वायु वनस्पती ना जीव अनइ बादर मोटका जीव हालता चालता बेइंद्रियादिक एवं माहि आत्मार
हइ बिसेद ना जीव हिंसवानउं नाम छइ वीसइ विसा मनउ हरउ अनइ श्रावक करइ मोटका जीवम
नी मप हिलइ प्राण सूक्ष्मनउ न पलइ जेह भणी एक वार नउ अन्न पाकउ जे नइ इ जीवनी विराधना छ

रइ तउकुइ एतलइं अहिगिउं अनइ अहरहिउं वीसविसानी दसविसाघ्या हवइ हस्थ जिवारइं
अनिर्वाहतउ करसणादिकआरंभकरइं छइ तिवारइं मोटका जीव नउ वधकुइ छइ तेहलणी ज
मिउ आगार मोकलउं मूंकइ संकल्पी करी जाणी करी मोटका जीव हणवा नउ नाम पुण आरंभि
इंकरी अजाणतां कुइं तेमोकलउं तउ चलाआ हिगि उं दसना पांच जिघ्या हवइ कणहिं घरिचो
री अथवा चाघचोरी कीधी तउ तेहरइं पंचिंद्रय जीवजाणतउ करतउ कूटइ मारइ छइ ते
हलणी आगारमोकलउं मूंकइ निरपराधजी। वमारिवानीम पुणजे सापराध अन्याय
उकुइ तेहनउ मीमनही वली अहिगिउं पांचना अढाइ विसाघ्या हवइ षलघोडादिक
खडइ तिवारइं निरपराध पंचेंद्रियजीवजाणीक रा आरदिइं ताडणादिकनउ घारमूक
इ तउ तिहां आगारमोकलउ करइ जेकरि कुइं घायप्रहार दिउं तेविरीटोलनिर्दयपण
इ नेदिउं पुण सापेक्ष पणइं सदयपणइं घायदेवउं मोकलउं वली अहिगिउं अढइ नउ सवा
विसउ धिउ जनपालइ रहइं जउ श्रावकरवरउं पालइ तेहलणा अणु अन्हा न्हउउं ते
अणुव्रतकहीइ इमबीजाइ ज्यारि जाणवां किम ॥ लिषतं मुनि प्रेमकीर्ति श्रुतंस्तूयात ॥ ६५

बीजइ व्रति माहा मोटकुइं सूक्ष्म बादर सर्वजूठउ बोलिवानीम श्रावककुइं जे मोटकउं जूठउं क
न्यालीक गाइ अलीक भुइं अलीक कूडी साषि थांपणिमोसादिक तेहनउं नीम पलइ पुण नान्हउं
जूठउं बोलाइ सिद्धि त्रीजइ व्रति माहा मोटकुइं चणा मात्र अदत्ता लेवानीम छइ मागि षडिजं जीव
नी सिली मात्र इ जिवारइं लिइं तिवारइं अणुजाणह उस्मुगम्हा इमकहा लिश अनइ थइहस्थ कुइं जे
मोटकउं अदत्त जणाइं लीघइं चोरीकार कहइ तेह नउं नीम छइं पुण सूक्ष्मनउ न पलइ चउथइ व्र
ति माहा मोटकुइं सर्व जगनी स्त्री माइ बहिन नइ घा नछि अनइ जउथइ हस्थ निरतन तंधणीकुइं
तउ ब्रह्मचर्य पलइ न पलइं तउ स्वदारसंतो षपालइ एकपरणी स्त्री टाली सर्व स्त्री
नउनीम अनइ जेउ निटोलइ अविरत अजाण कुइ ते कुडे परस्त्रीलागइ तेहतउ पालइ ।
जिणी पांचमइ महाव्रति महा मोटकुइं सर्वधनधा न्यादिक परिग्रहनउ नीम अनइ श्रावककुइं नि
टोलन पलइ पुण परिग्रहनउ परिमाण करइ एतलइ पांच अणुव्रत कह्यां हवइ त्रिणि गुणव्रत कहीइ
छइं पाछिला जि पांच अणुव्रतकुइं गुणकारिआ कुइं तेहलणी गुणव्रतनाम पहिलउं दिगिविरमण
व्रत जे च्यारि दिसि च्यारि विदिसि अनइ अनइ अधकुइं इम दसे दिसे जे अणासउ एकदउढ लाख
धवा घणिरहउं एतला कपहर रवेइ स्हलोकार्थि जावा नउं नीम धर्म कार्जि तीर्थयात्रादिक नइं कार्जि इं मो

कलत्रं। ए दिगविरमणव्रत कहीइं। इणइं नीमड्डी धइं पाछिलाइ जि पांच अणुव्रत रहइं गुणकइ
किमइं जे तलीसु इंनञनी मलीधुं तेतलाबाहिरला जीवकुइं अतयदानदीधं। तेतलाबाहिरला जी
वकुइं कुडं बोलवा चिवर्जं रहिउं। अदत्तदेवडं। निषेधाणउं। मिथुनसेवाटाली। परिग्रहनी मू
र्छा व्यवसाय वाणिज्य नीयइ थोरही। तेहतणी गुणव्रत कहीइ। बीजउं गुणव्रत भोगपभोगपरिमा
णव्रत जं भोजन आश्रीसचित्तादिकनानीम लिइ अ घवापरिमाणकरइ। व्यवसाय आश्रीसचित्ता
दिकनां त्राणइं खरनां आरंभ जीवहिंसादिककइं तेव्यवसाय लोहलूणमीण मधुमद्यादिक
न टालइ। इणइं करी पाछिला जि इ कइ गुणकइं तेहतणी गुणव्रत कहीइ। त्रीजउं गुण
व्रत अनर्थदंड विरमणव्रत जे आर्त्ती विकादिकइ इ लोकना काजकाम पाखइ मुहिआं पाप
लागइ। हासां खेडकुतूहल। अगिन प्रष्टा जीलवा। होचघा। न्नरम घांप्रमुख ते करवा नञनीम
ए हरइं जम्रकरइ। तमजी वहिंसादिकथाइ। तेणइं करी पाछिलाइं अणुव्रत कइं दोषआवइ
अनइ जउ एहनां नीम पालइ। तउ ते इ जि फिइं गुणकइ। तेहतणी गुणव्रत कहीइं। एतलइ त्रि
णि गुणव्रत कह्यां। हवइ च्यारि शिक्षाव्रत कहीइं। शिक्षाव्रत कहीइ वलीवली अभ्यास पाछिला
आ च व्रत एकवार लीधां। तिस्यां जावजीव पाल्यां जोइइ मूंकचानाचइ। भणी च्यारि एतिमनं दीव ६६

लीइ लीजइ। वलीइ मूंकीइ तेहतणी शिक्षाव्रतनाम। एपहिलउं शिक्षाव्रतनाम। एपहिलउं शिक्षा
व्रत सामायिक। जे बिघडी सामायिक व्रत कचरी समता परिणामि आत्मा राखीइ ते सामायिक अ
होरात्रि माहि घणी इ वार कीजइ। गाढइ अपकृचिमाहि। जत्तयकालतउ कीधउं जोइइ। सि बी
जउं शिक्षाव्रत देशावकाशिक। जे छहइ व्रति दिसि परिमाण नउ जावजीव नीम लीधउं छइ ते
हमाहि दिन संकोडी नितं प्रतिदिसि नउं परि माणकरइ। आजमरुकुइ। एतली एकरूप इर
(मुइं जाश्वानीम। इसिपरितथा सचित्तद्रव्य वि गइ प्रमुखना दिनाइ त्यानी म संखेपीनइ लिइ
त्रीजउं शिक्षाव्रत पोषधोपवास। जे पर्वी तिथिइं। अहोरत्र पोसहलेइ। चउविहा
र उपवास करइ। नसकइ। तउ तिविहार क रइ। ते पोषन तिसकइ नसकइ तउ उपवास
दिइं आंबिलादिक करीनइ भोजन करइ। ते पौ षधव्रत। चउथउं शिक्षाव्रत अतिथिसंविभाग
व्रत जे अन्याय नउ कुपार्जिअ मूरुतउं आहार पाणी वासना इं करी चारित्रीआ कइं दिइ जउ चा
रित्रीयानउ योग मइं तउ गुणव्रत साहमी रहइं भोजनादिक कइं करी सक्ति करइ दीनदुस्थित
दयामणा जउ छइ। शक्ति नइ मा निइ उद्धरइ तिहां गुण अवगुण कांइ जोनही। ते चउथउं शिक्षा
व्रत। एवं श्रावकनां बार व्रतनउं विचारकहिउं। हवगाथा वषाणीइ छइ॥ पंचन्हमणुवयाणं पांच

अणुव्रतनां गुणव्रतयां च्यार। तिहं गुणव्रतनां। सिक्खाणंच चउण्हं सिक्षाव्रतनउ अतीचार लागउ प
डिक्कमे। ते दिवससंबंधिआ पडिक्कमउं छउं। जे निटोल निरपेक्षपणइं व्रत विराधइं ते व्रतभंग
इ जि कहीइ। अनइ गाढउं खरउं जे पालइ। तउ निरतीचार कहीइ। भणमनि व्रतलां जिवान
उतयत्रा आणइ। अनइ कांइं दोष लागइ ते निटोल सापेक्ष नहीं। तेह तणी कांइ लागइ कांई
सापेक्षपणउं व्रत घिउं ते अतीचार कहीइ। ॥८॥ पहिलउं गुणव्रत कहीइ छइ ॥९॥ प
ढमे अणुव्वयंमि थूलगपाणाइवायविरईओ। आ यरिअमप्पसत्थे इत्थ पमायप्पसंगेणं। पढम
पहिलइ अणुव्रति थूला स्थूल मोटका वे द्रियादिकनउ प्राणातिपातनउ हिंसान
उ विरति कहीइ। आयरियमप्पसत्थे अप्रश स्त क्रोधादिक नइ विषइ इत्थ एपहिला
व्रतनउ विषइ प्रमादनइ प्रसंगिइ करी अती चार लागउ। ते अतीचार जिनामलेइ कहइ
छइ ॥९॥ वहबंधछविछेए अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइआरे। पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१
वह बंध कहीइ क्रोधादिक कषाइं नइ घिरीहुं। द्विपद चतुष्पदप्रति लकुटादिकिइं करी निर्दय
पणउं कूटिवउं। बंध दोरडादिकिइं करी निर्दयपणइ बांधिवउं। छविछेद कर्णनासिकानउं छेदव ६७
उं। अइभारे अतिभार शक्तिकिंइं निरपेक्षपणइं प्रमाणरूप सहरा भारनउं घातवउं। रासलपोठिआ ग

डलादिकनउं जेतलउ भार प्रमाण लोकप्रसिद्ध छइ। तेतलाकिं पसहरउ लातनउ वाहि घालइ
भत्तपाणवुच्छेए। एतालतां पाणीनउ निटोल निषेध अघ्यवावे लांइदेवउं। पढमवयए। एपहिला व्र
तना पांच अतीचार अ आउ कांइ पाप लागउ। पडिक्कमे ते दिवससंबंधिउ पडिक्कमउं छउं मूलि आ
विका आपणी लायांभित्र दासी दीपो लादिक धुरि लगइ तिसां आसंरखमाहि राखइ जिम बांधइ
रूटि आपारवइ आपणी आज्ञा मानइं गाइ घोडा प्रमुख तिसिइं ढीलइं बांधीइ बंध वाधिवउं
जि सिइंगल सूतउं नाचइ अनइ पलेवणादिक लागइ आपहणी तत्काल छूटइ अतिदृढ बांधि
न बांधिवउ। द्विपद चतुष्पद प्रतिइं भार ते तन लउ घालइ जेतलउ तेसु खिइं उपाडी सकइ
चारि पाणीनी चिंता वेलाइं करइ प्रयोगना प्रती। कारनइ आघिउं चइद उंकरावइं तेह इसदय
पणइं एणां तिहितबुद्धिइं जि करउं अत्र शिष्य पू छइ। तउ गच्च अ श्रावक कहइं जीव मारिवा जिनउं नि
म छइ। तउ वधबंधादिक करतां सिउं दोष गुरु कहइं छइ सांभलि। व्रतनां विकल्पइ अंतरंग वृत्ति
नइं बाह्य वृत्तिइं। तउ ति चारइं निर्दयपणइं बधबंधादिक करइ छइ। तिवारइं दयानउ परिणाम ल
गारइनबी तेह तणी अंतरंग जोइइ। तउ व्रत लागउ जिभणमारतां रूटतां इ आऊषा सबल तणी सूत्र
नहीं तेह तणी बाह्य वृत्तिइं व्रत आषउ छइ। कांई लागउ तेह तणी अतीचार कहीइ इम सघले अती

वारनउप्रकार परीछवउ ॥ पहिलाव्रत ऊपरि सूरअनइचंद्रनी कथा ॥ श्री ॥ ॥ जयपुरनगर राजंज
यराजा सूरचंद्र बिबेटा अलीइत्तणी सूरकुंइ युवरायनोपद दीधो थी चंद्रराजा विनी कलिइंर
नपुरि पुहुतउ सुदर्शनरुषिकन्हलि पहिलउं व्रत अंगीकरिउं ॥ योयेहु त्रिटाली जीवमारिवानउ
नीम ॥ तिहां जिउयसेनराजानी सेवा करइ एकवार राजाइं तेहकुंइ आदेश दीधउं जामाहराव
इरी कुंतराजाकुंइ घायि कपइसीनइ मारी आ वि पेलइं आपणउं नीम कहिउं राजाइं हषि
इ अंगउलगू बांपिउ परिणाचउं ॥ एकवार ती णइं कटक सहित जई कुंतराजा बांधी राय
कुंइ आपिउ ॥ तिसिइं सूरकुमार युवराज इ अदृष्टपणबापकुंइ मारवा घायि कपइ
उठुरी मउ घाय मूंकिउं ॥ तिसिइं सादिउं बापि इं देसउटउ दीधउ ॥ चंद्रकुमार लेखमोक
ली तेडाविउं ॥ तेहकुंइ तेराज्य दीधउं ॥ पछइ राजा मरीनइ चीत्रउ थिउ ॥ सूरफिरतउ रतिहां आ
विउ ॥ चीत्रउ दीठउ चइ रहलगइ मारिउ ॥ मरीनइ भुत्रहूउ ॥ आहेडइ फिरतउ वली चीत्रइ मारिउ
चीत्रउ तीजे मारिउ बेमरी सूअर थया मांहोमांहिं बेमरी मगला थ्या ॥ तिमजि मूआ तो मरी विन्हइ वन
हस्ती थ्या ॥ तिसिइं जि मूआ तो ताल्हे धरी चिन्हइं चंद्रराजाकुंइ भेटइं आ ॥ पियाआं ज्ञाति हांइं माहोमा
हिं देषइं तिवारइं मच्छर धरइं ॥ तेजाणी राजाइं एकवार केवलज्ञानी पूछ्यां ॥ पूर्वभवनउ वइराण संब ६८

ध सांभली वैराग्य पालगइ चंद्रराजा दीक्षा लेई देवलोक पहुतउ दाथी आ बे मरी पहिलइ नरगि गया
इ मसूरकुंइ पहिला व्रत अणुपालिवानउं फल सांभलइ नइ ॥ पहिलउं व्रत पालिउं सुधउ पालिवउ
॥ ७ ॥ हवबीजउं अणुव्रत कहइ छइ ॥ गा ॥ श्री ॥ ॥ बीए अणुव्वयंमी परिथूलग अलियवयणविरइ
उ ॥ आयरिअमप्पसत्थे ॥ इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ बीएण ॥ बीजइ अणुव्रति परिथूलग परिथूल मोक
ट कउं अलीकवचन तेहज्जाणइं करी अप्प का थाइ ॥ तेपांचप्रकारि छइ ॥ पहिलउं कन्यालीक
उ ॥ निर्दोषइ कन्या सदोष कहइ अथवा सदो ष निर्दोष कहइ ॥ तेकन्यालीक एतलइ द्विप
द चिषई जेसघलउं कूडउं जाणवउं ॥ बीजउ गवालीक घोडउं दूधी गाइ कूडइ अनइ घ
णदूधी कहइ चउद बिषउ ई कूडउं ॥ सर्व एहमा हिआवइं ॥ त्रीजउं भूमिअलकायारकी
युइं आपणी कहइ ॥ द्रव्यादिक चिषई जे कूडउं ए हमाहिं आवइ ४ चउथउं न्यासापहार थापणि
णीमोसउ ४ पांचमउं साक्षिपणुं ॥ तेप्रमाणसूत कीधउं कुंइ अनइ मच्छरलगइ अथवा लंबादिक
नउ फेरबि कूडी साखितरइ ए पांच इनाम लेई कह्यां ॥ अनेराइ कूडां करहां नउं काढिवउं ॥ विश्वासघा
तइत्यादिक मोटकां कूडांनी बोलचानी विरति निषेध ॥ बीजइ व्रति करवउ ॥ आयरियं प अप्रशस्ता
इ एताचिइं करी ॥ इत्थप्पमाइ ॥ एह व्रतमाहि विषइ प्रमादनइ प्रसंगिइं करी ऊ अतीचार लागा ॥ अतीचार

जिनामलेईकहइछइ॥७॥सहसारहस्सदारे मोसवएसे कूडलेहेअ बीअव्वयस्सआरे पडि
क्कमेदेसिअंसव्वं॥१२॥सहस० सहसाक्कारिइंकहिरइंकूडउआलअभ्याख्यानदिइ तेसहसा
भ्याख्यानपहिलउंअतीचार॥१॥रहस्स० कोएकउंएकपछन्नमंत्रकरतादेषीकहइ आणइ मइजा
ण्यारउमंत्र उम्हेअमुकोरराजविरुद्धवातकरउछउ इमकहइ अथवाकहिनउमम प्रकासइ
तेरहस्याख्यानबीजउअतीचार२॥ सदारे० दा॥ स्वकदीइंकलत्रिइंमित्रादिकिइंआपणीवा
तगोप्यनीकहीहुइ तेअनेरेप्रकासइ तेस्वदार॥ मंत्रभेदत्रीजउअतीचार३ पतलइंसाच
उइबचनजेपरपीडाकारि तेकूडउंजिजाणि घउं मोसुवएसे अज्ञानमंत्रऔषधादिक
सीषवइ अथवाकहिकइं अपायपाडिवानइ कूड बुद्धिदिइ एमषोपदेश चउथउअतीचा
र कूडलेहेय कूडोलेखलिख्यो मिसिलेदसघल एएह मांहिजाणिवउ बीयवयस्सआरे ए
बीजाव्रतनापांचअतीचारआश्रीजेकांइलागउ पडिक्कमु तेदिवससंबंधिउसर्वपडिक्कमणउ
बउ॥ बीजाव्रतऊपरिवसुनअनइनारदनीकथा॥ ७ ॥शुक्तिमतीनगरीइंक्षीरकदंबकउपा
ध्यायिइंत्रिणिछात्रबेदभणाव्याछइ एकराजनउबेटउवसु बीजउआपणउजिबेटउपर्वत ६९
क त्रीजउअनेथिनउआविउ विद्यार्थी नारद क्षीरकदंबउपाध्यायचिंतामणिदिइ तेहनइपु

दिपर्वतकप्रसिद्धउपाध्यायथिउराजानइमाटिवसुराजाराज्यपालइ एकवारपर्वतकनइनारद
परंकनणउं आविउ तिवारइंपर्वतकउपाध्याय अजैर्यष्टव्यं एकपदनुंपदवखाणइछइ अजकहि
इंबोकडा तेयागमांहिहोमवा नारदिइंसाललिउंयारितबोधपर्वतककहइ आपणइत्रीजउमहा
ध्यायीवसुराजामहासत्यवादी तेनइचिकांकहइ तेसाचउं जेकूडउंकहइ तेहनउंमस्तकछेदाइ
इसिउपणकीधउ प्रभातितिहांजइसिउ तिस इंपर्वतकनीमाताइंरातिइंजईवसुराजाफिरवि
उनी एणइंप्रभाति वादमांहिकूडीसाखिनरीह॥ घेअजकहत्तांबोकडाकह्याकइंतां उपाध्यायिइं
तिसइंतत्कालदेवताइंपाटआहणी सिंहास नथिकउपाडिउ मिराकूडीसाखितरीयान
इंपापिइंनरगिगिउ पर्वतकहउलिउ नारद धर्मपालीदेवलोकिपहुतउ इसिउंफलाफ
लजाणीबीजउंव्रतसूधउंपालिवउंगा॥ श्री॥ १२ बत्रीजउंअणुव्रतकहइछइ तइए अणुव्व
यंमिथूलगपरदव्वहरणविरईओ आयरिअमप्पसत्थेइत्थपमायप्पसंगेणं॥१३॥ तइए० त्रीजउं
अणुव्रतिथूलगपरदव्वउ स्थूलमोटकाजीणइंलीधइंचोरीकारवडइ एकापरद्रव्यलेवानीविरतउ
उइव्रतियालीइ आयरिअमप्पणा अप्रशस्तनाविइ इत्थपए॥ एहेत्रीजाइव्रतनइविषइप्रमादमइं
प्रसंगिइं जेअतीचारलागा॥१३॥ तेहजिनामलेईकहइछइ तेनाहडप्पओगे तप्पडिरूवे विरुद्धगम

णे ।अ। हूंउअनेहूंडमाणे । पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।२४। स्तेन चोर तेहे आणिउं कुंकुमादिक बहु
मूल्य वस्तु लोभ लगइ सुहगा सणी लिइ ।१। पउगे प्रयोग चोरनइ प्रयुंजइ । कांइ अम्हे नी पाणी ।
आमा रहइ उ संबल न कांइ उह्वं आ पनइं अम्हारं आणिउं कोन लिइ तउ हूं लिउं । करउ कि हांचो
री । इम चोर नइं प्रयुंजइ ।३। तप्पडिरूवे । डिवस्तु जिहमांहि मिलइ तितेहरइं तेल संतेल क
रइ । जिम गोहूंना लोट माहि ज्वारिना लोट । घ ।१। माहि तेल गुलमाहि राष । तेल माहि विहनी
वल दनूं मूत्र मेंढी ढ माहि लीमाहि ऊंचा घाल इ इत्यादिक । अप्पवार्थ बहुलनउं वस्त्र नीब
राबी । अपवा रंगाची । नूवां नइ मूलिइं वेच । इ कारिमां सींदूर कपूरादिक षरा नइं
मेलिइं वेचइ । सूत्र कपासादिक क्रम वयरीन । देइ । अपवा कटक माहि राजाइं जा चउ
वारिअं कीइ । पैलउ करणादिक परइं मुहगउं सा तली लोल नउ वाहि उबानउ तिहां जाइ । ड
उसा हो इ मउ अनर्घिपउइ तेतणा इम न करवउं ।४। कूडउ अलूडमाणे । कूडा तोलमान मापक
रइ । उछे आपिवं चुक्रइ । सघलैइ दलो किजिरा क्षदंडादिक कपस इ । ए त्रीजा व्रतनां पांच अती
चार आश्री जे पाप लागा उ पडिक्कम तिदिवस संबंधि उ सव्वे पडिक्कमउं बहु ॥ एह त्रीजा व्रत उपरि ७०
वंचक श्रेष्ठिनी कथा ॥ वा ॥ श्री ॥ पुरंदर नामि धनश्रेष्ठि । धनश्री नारी धनसार वेटउ सेठि अपार कूट

व्यवसाइ उ । बापहा गामडी आलोक वंचीनइ घणउ इ द्रव्य मेलइ । छुत्तार हइ इ नहीं । वरस मइ दिव
सि वली वाल उपोल इ जिघाइ । इ सिरइ वेटउ मामडा नी कहिइ क सुश्रावक नी वेटी परणा विउं । तेअ
पारि श्राविका सेठि नउ ह्वाट घर दूकडउ उ बइ । सेठि नइ देवानउं भाणउं आत्रिक पाली नउं अनइ लेवा
नउं पांच पाली नउं बइ । अनइ वेटा नइ संकेत कहिउ बइ । जिवारइं जे माणा नउं मागइ । तिवारइ बे
टाइं । त्रिपोकर पांच पोकर नामिइं बोलावइ । लो केपतीतेजाणिउं वंचक सेठि नाम दीधउं । एक
वार वहूइं सत्तारि पूछिउं सेठि अम्हइं कुनामइ । काइं बोलावइ । सत्तारिइं यथास्थित वात कही
इं तेता तडा एपापूछिइं । वहूइं सेठि चीनवउं । तात इम होइ क पटिइं उपाली सहुं अ
पणइं त्यांइं न रहइं । सेठि कहइ तउ निचोह कि । म कीजइ । वहू कहइ तात त्याय न उं रूप
डिउं । चिरकाइ कंबाइ सुपात्रि देउं त्रिया चवइं करावु ञ्चिगुण लहइ । जउ न मानउ तउ ब मास इमक
राउ । सेठि सुद्ध व्यवसाय करत उ लोक माहि सत्यवादी तणी प्रसिद्ध हूउ । गुणमसचा उ डेपो त सेरसु
वर्ण रूपा जौपा आणी बहुलनइ आपि आ । बहू कहइ परीक्षा जोउ । एसोनउं नामीत उइ कि हांजा सिइ
नहीं सेठि इं वेटा पाहि इं तेसोनउं पासेरी करावी । सांबड इंमढावी । ऊपरि आपणउं नाम उंघ तावी ।

त्रिसि दिहाडा राजमार्गि लाषीनइ मूंकी नकणिहि दीठी नकुणिहिं लीधी पछइ लेई चेडिइं एक
श्रेसी सद्दह माहि तांस्या नइ मूंकी मांछइं गिलीए कचार तेहउमा छउ आलमाहि पडिउं चिदा
रिउ तिवारइं पांचसेरी नी कली नामजं वांदी माछीइं सेठि नइ हाटि आणी कांई देई नइ लीधी
वकु नइं वचनि प्रत्यय ऊपनउ पछइ न्यायमार्गि इं शुद्ध चित्त ऊपाडी तउ सांतिक्ले त्रेधन
वतउ प्रोहच्य वहारिउ अनइ सुखिइं थिउ ॥ सिउं जाणी त्रीजउं व्रत स्वरूप पालिवु ।
इव चउथु अव्रत कहइ छइ चउत्थे अणुव्व यंमी निच्चं परदारगमणविरईउ आय
रियमप्पसत्थे इत्थ पमायप्पसंगेणं १५ चउत्थे । चउत्थइ अणुव्रति निश्चंण परदार० निच्च
सदिवसइं परदार पराई स्त्री परणी अथवा संग्रही ते हनउं गमन सेववुं तेहनउ निषेध आयरिय
० अप्रशस्त ताविइं करी इहां एह व्रतिनइ विषइ प्रमादनइं प्रसंगिइं जे अतीचार लागा ते अचारिउं
नाम लेई कहइ छइ ॥ गा० ॥ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर अणंगवीवाह तिव्वअणुराये चउत्थवयस्सइ
आरे पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१६॥ अपरिग० । अपरिग्रहिका करतां एअतीचार लागइ ॥ आइत्तर इत्तरपरि
ग्रहीता गमन बीजउ अतीचार जे इत्वर कहीइ केतलउ काल भाडउं देईनइ वेस्यादिक कुणहि ए ९२

DR. BHAU DAJI

कलाय नइ स्थानकि राखी छइ ते इत्वरपरिग्रहीता कहीइ तेहनउं गमन आचिकाछइं ए अतीचा
र तिवारइ लागइं जिवारइं सकतिनइ चारइ आपणा पेस्तार नइं सेवइं अणंगक्रीडा अतीचार अनं
गक्रीडा कहीइ अथवा मिथुन सेवानू बि अंग ऊरूप विक तेटालीची जांसघलां अनंग कहीसा घल।
मुखादिक तिहां मिथुन सेवा करइ वीवाह आपणा बेरू टाली बीजानां वीवाह जोडा वाडा करइ
इ तलाई लिवा तणी एपरवीवाह करण चउथउ अतीचार तिव्वअणुरागे आपणी कलत्र कु
परि जे अती व्रतिलाष गाढउ कामाभिलाष अ घवा पोषकाम पोषवा छोहना सबल का
मपोषवा नइं काजिइं तांबूल आदि पोषण पो । स्तादिक सेवइं वाजीकरणादिक नाचू
ली गुटिका रसांम सेवइ दोसइ कामसेवा करइ इत्यादिक जाणवउं ए काम तोगती आ
भिलाष पांचमउ अतीचार ॥ पचउत्थवयस्स ए हचउथा व्रतना पांच अतीचार आश्री जे पाप ला
गां पडिक्कमेण ते दिवस संबंधि आलोयं पडिक्कमउं छउं ॥ अथ नागिलकथा ॥ सूर्यपुर नगर ताउं
राजा लक्षिणि श्रेष्ठि तेह नइ नंदा बेटी श्राविका बाप वर चिंता करइ तिसिइं बेटी कहइ जीणइ
दीवइं काजल न हो कालि कन छइ जिहां दसी चाटि खूटइ नहीं जे सदिवा स्ति रहइ जिहां चोपू
उ खूटइ नहीं एहउ दीवउ जेहनइ घरि मंदा रहइ ते वर टाली बीजउ न परणउं सेठि चिंता इंप

इउं तिसिइं नागिलश्रावकी आवी विरु आया वेश्यानु घरि लेइ घने सं(?)तुष्ट करी तेह पाहिइं आपणि घरि ते
इ आदी वस्त्र कराव्युं सेवि इं सऊ दु विइं तेऊ तेदा वत्त देषी तेह दरिद्री इहइं परिणावी पिली
जिम लारमत तेउ द्रव्य हार इ तिम इ तमाइं सणी सेवि प्रखत्र्य द्रोइ द्रव्य हारी परस्त्री सेवइ जिवार
इं घरि आवइं तिवारइं मंत्र्यवन इडि एक वार नागिल थी तवइ सही रूप हर रहइ वल्लभनही जेए
पूडे ए अपराध मऊ कपरि कोप न करइ एक वार स्त्र वधिज्ञानी गुरु पूछ्या तायो मझ ऊपरि स्नेह
कां न धरइ गुरु कहइ इणइं विवेक वरपरण चामइं कां जिइं दी वा न इं मिसिइं विवेक
कहि अकुंतउं तइं यहन इं वलिइं तेकच उ दीव उं जिकरी तइ परणी निविवि
कतणी तूं कपरि प्री ति न बांधइं पेलइं गुरु कन्ह । लि विवेकसी पत्नी सदारसंतोषव्रत पाडि
व जिउं घरि आवि उं स्नानदेव पूजा सुपात्रदाना । दिक करी विवेकि इं लाजन करइ पेलीह
षी कहइ स्वामी आजलगइ माहरउं जेतइं माहें विवेक आवि उं देषउं पेलइं गुरु कन्ह व्रत कहि
उं तही पूछिइं विजं कइं मोहा स्नेह सुखमइ काल जाइवइ एक वार नंदा पीहरि गइ नागिल पी
ट णीकपरि सूतउ चंद्रमा सामुहउं जोइवइ तिसिइं एक विद्याधरा नागिल नइं रूपिइं मोही घ की क 92
इवइ कामाग्नि संतपूघ वकी कुंता हरइ सार णिइं पइगी श्रीरस्तु लेषकपाठकयोः ॥ श्री ॥

रूपचंड विद्याधर रायनी बेटी हंसराज विद्याधरनी भार्या लीलावती नाम म म कुकइं अंगीकरि नंदा तरिमर
नइ स्त्री हत्यादेइ सु इ म कहो जिसिइं प गिलागइ तिसिइं पेलइं पग पाग्या कीधा पेली इं प्रसाचाइं तातउ
लोह नउ गोलउ नागिलतणी मूंकि उ तिसिइं ती णइं नउकार स्मरिउ गोलउ आने घउ जिप डिउ पढ
इ नंदा न बच्चि उ आवि नही तउ धर्म्म नइं प्रसाविइं तेणि नेसए विराग्य लगइ लोच रूप करा स्नेह वचन बो
लती आवी पेलइं ज्ञान्कारतइं कहिउं जउ तूं नंदा उ अंउ आवि नहीतउ धर्म्म नइं प्रसाविइं तेणिनेसए
विराग पल गइ लोच कीधउं यासनदेवताइं वेष आपिउ दीक्षा आगलि आवी कहिउं अहोय
क्ष्वं कइं मोकलउं यक्ष कहइ इ जा चक्री वता हरीसिचा करिसु माहरइं ते जिइं कुंडे ही न
कुं इ पछइ नंदा सहित तेउ इ गुरु नइ हा घिइंदी । । कालीधी तेहद ई चानइं ते जिइं रात्रि दीस
लणतउ पुण तउ महाज्ञानि कुइ मरी हरि वर्ष क्षेत्रि गलीउ थयउ नंदा गुली णी एआ उ षत्र आग
इ दीक्षा लेता एप हिल उं बांधउं कंतउं तिहां विके बेजणां देवता यइ महा विदेहि क्षेत्रि म उप पा
पामी मोक्षप कुंता इ सिउं ज्ञाणीव उधरउ व्रत शुद्ध पालिव उं इहव पांच म उं अणुव्रत कहइ इहतो अणुधय
ए पंचमंमि आयरि अमप्प सत्थंमि परिमाणपरिच्छेए इत्थप्पमायप्पसंगेणं ॥ १७ इहतो पचनघा अणुव्रतइ
गिइं अणुव्रए पंचममि पंचमइ अणुव्रति आयरिय ए अप्रशस्त ताविइं करी परिमाण ए जे कांइ परिग्र

हनउं परिमाणकरीनइ अतिलोभिइं करी इच्छाप्रमाण प्रमादनइं प्रसंगिइं करी ॥५॥ एहजि नापांच अति
चारकहइ छइ धणधन्नखित्तवत्थू रूप्पसुवन्नेयकुवियपरिमाणे दुपयचउप्पयंमी पडिक्कमे देसि
अं सव्वं ॥१८॥ धणधन्न धन विहुं प्रकारि एक गणिमा जे गणीनउं कोडीवद्ध बीका इ नालिकेरादि
क २ बीजउं धरिम जे तोलीनउं चीकाइं गुडखांड पापडादिक २ त्रीजउं मेय जे मविउं चीकाइ
लूणादिक ३ चउथउ पारिछेद जे परीक्षउं चीकाइ वस्त्र नाणउं सुवर्ण माणिक्यादिक ४ एचउ
विधधन अनइ धान्य गोधूम शालिमुद्गलादिक स   वेडातिनउ तेहनउं प्रमाण अतिक्रमइ जि
वारइं धन धान्यनउ गाइं देणहारउ तसामटउं आप   इतिवारइं वदरानउं मूडानउं प्रमाणकी
धउं छइ अनइ वदरा मूडा मोटराबांधइ एध्या   नधान्य प्रमाणति तिवारइं प्रमाणकूपह
रउं घातउं देषी जांगइ आगलिउं चीकाइ नहीं तां तेहजि नइ घरि रषावइ अथवा संचकार आपी
मेल्हइ अथवा क्रमपहिलउ अतीचार १ खित्तवत्थू क्षेत्र त्रिहुं प्रकारि एक सेतु क्षेत्र जे अरहट्टवा
दिकनइं पाणीइं नीपजइ बीजउ केतु क्षेत्र जे मेघनइं पाणीइं नीपजइ ॥ इपत्रिविधक्षेत्र अन
इ वास्तुक हाट घरहाट ... प्रमुख तेहनइं त्रिहुं भेदे एक खात जे नीचउंरषणी कीजइ भुंइ
रादिक ॥१ बीजउ उच्छ्रित जे ऊंचउं चिणावीइ मालिआदिक २ त्रीजउं खातोच्छ्रित जिहां खणावं ७३

अनइ चिणावउं वीजानाकीजइं ॥ इ ग्राम नगरादिक परिग्रह ते हइ वाडुं सुमाहि आवइ तेहनउं
प्रमाण अतिक्रमइ अथवा क्षेत्र विकुं नउ नीम कूइ अनइ त्रीजउं इमाहि यातवा सीडतउ नीमलाजि
वानेलए तेहनउ सेढउ चाडितां खइ जाणइ एक करउं छउं तथा घरहाट बषारि अधिकउं घात
उं देषी विचलीतीतिमीस पाडीएक करइ एक्षेत्रवस्तु प्रमाणातिक्रमय रूप्पसुवन्नेय रूपा सोना
नउ नीम उमासा आश्रीलीधउ कइ अनइरा   जादिक थकउ पेलइं सुवर्णादिक लाधउं
नीम संगनिस एतेलहइ लार्यादिकनइ ना मि।   इं करी मूकइ एसुरूप्पसुवन्न प्रमाणातिक्रम
कुवियपरिमाणे कुप्यप्रमाणातिक्रम कुप्य   कहइतां सोनउं रूपउं टाटा सर्वधातु सर्व त्रां
बरउ तरूआं सीसउं नाणां वाटलां खाटला पा   टला सर्वघरवाखरउं कुप्य कहीइं तेहनउं
प्रमाण अतिक्रमय अथवा कइ क्कइं हस ताणां। नउ नीम कूइ अनइ आधिकौ कुटिसंपना तिवा
रइं तेह जिताणी तेंजा वी जाडां करावी संख्या दस जिनी पूरवइं तेकुप्यप्रमाणातिक्रम ४ दुपयचउप्प
यंमी द्विपद अने चतुष्पद गा दिक गाइ घोडा हाथी आदिक तेहनउं प्रमाणातिक्रम करइ अथवा वर
समास अधिक करी द्विपद चउप्पदनउं परिमाण कीधउं छइ ते तला माहि जउ प्रसवइ कइं नउ नाम
कूपहरउं थाइ तेहलाणी गर्भग्रहण मउडे रउं करावइ द्विपद चउप्पद प्रमाणातिक्रम ५ एपांचमा

अणुव्रतनां पांचे अतीचार आश्री जे पाप लागउं पडिकमउं ते दिवस संबंधिउं पडिक्कमउं ॥ बंभ परिग्गह
नी अत्थ सिक्ख परिक्खवि कर्म्मी अनइ तिलकश्रेष्ठि अनइ नंदरायनी कथा॥ ॥ मगधदेशि सुघोष
गामि मिक्कवे कर्म्मी श्रेष्ठि गामनउ अधिकारीउ हूंतउ तेहनइ गाइना लाष हूआ काली धउली नी
ली पीली राती गाइना हूआ गोकल करी हूआ पीडा रहूइ आप्या दिहाडइ २ गोकल वधा
रइ एकवार अट्टमतउ दूध दही घृत जिमी पा णी रस सइ हूअइ गोकलनइ धणिइ आर्त्ति क
रतउ मूउ तिर्यंचगतिइं गिउ एगोकुले केतले पसमउ नषय उतथा॥ ॥ अचलपुर नगरि ति
लकश्रेष्ठि वडइ आलिम गति लाविणादिक धान दउडी सवाइ करी मेलइ एकवार
तेहूप कालि घणइ लाभइ उउ वलीसु तिरु हूइ। सुहं गांधाम मेली गामि नगरि कोठारसरइ
कोडानी को डिना विणास काईनगणइ एकवार तेह आगलि निमित्ति कहिउ कालपडतउ क
हिउं तिलकश्रेष्ठिइं आपणउ इव्यसघउ वेची धान्य जि इसघं का ढीनइ हुं धान नउ संग्रह कीधउ
इम करतां प्रजालागिइ दुष्कालन पडिउ मेघवूठउ कोठार फाटा धान पाणी ताणि गिउ वि
णठउं ते देषी तिलकश्रेष्ठिनउं हृदय फाटउं मरी नरगि गिउ इम तिलकश्रेष्ठि केतलेधान पमाण न पिउ
॥ तथा॥ ॥ पाडलीपुरि नगरि नंदराय हूउ तीणइं अनेक कराकर करी लोक दंडी सोनउं एक

७४

ठउ मेलिउं सोनेभंडार सारिष हूआ तरिआ सोनानी डुंगरी कीधी अनेकि राय लोके चा खिउन दी एक
वार सयरमाहा रोगरूपना तेह करी आक्रंद करतउ या दवतउ सोनलीलो करपी इम सोनइ अ
तउ डिमिरी नरगि गिउ घणउ संसार तमिइ इम नंदराय सोने केतले एपरमउन घिउ॥ ॥ एतलइ
पांच अणुव्रतना अतीचार आलोया हवइ त्रिणि गुणव्रत तेह माहि पहिलउं दिग्विरमणव्रत अनइ
तेहना अतीचार आलोइइ ॥ गमणस्स उ परिमा णे दिसासु उड्ढं अहे तिरियं च वुड्ढि सइ अंतरद्धा प
ढमंमि गुणव्वए निंदे॥ गमण पच्यारइ दिसि च्यारि विदिसि अनइ अधऊर्द्ध दसइ दिसि जाइवा नउं
परिमाण करइ उइ विहं दिसि अनइ विदिसि अरिडा गाम उ एकइ उह विकं लगइ
ऊंच उं श्री गिरिनारि श्री आबू तलहटीइ वसएहा रहू इजी अ णाविकं त्रि कुलगइ संलवइ
पर्वत ऊपरि चा स्त्रयइ एतलउ नी चउ जाव उं संलच। इ समी भूइ वासउ एतलउ नी चउं जाव
उं संलवइ अधगाऊ एक सलवइ इमनक त्था क जोई निमि दिसे दिसे परिमाण कीधउं हुइ तेहना अती चा
र कहइ इ दिसा उर्द्ध ऊर्द्ध दिसि नउं १ अहो अधो दिसि नउं २ तिति रियं च तिर्यग् दिसि त्री जउं एतलइ
च्यारि दिसि च्यारि विदिसि लगइ ते परिमाण अतिक्रम्य हुइ अधवा नीमत्ता जिवा नउं आपणपे ड
लइ नठाइ पगणा चाणु त्रादिक हा थि वस्तु अचा नानीमी मोकलइ लेता लगइ तउ हूअ अतीचारए तलइ

त्रिणि अतीचार ॥ २ ॥ पछइं दिसेण वुड्ढि । जोअण सउ एक कानइं प्रमाण कीधउं हुइ अनइ एकइं दिसिइं
कार्यविशेषिइं दउढ सउ जोअण करइ बीजइ पासि सउ जोअण करइ ज्ञाणइ सिरषाल इ लेख
उंमेलतउ हउं । ए क्षेत्रवृद्धि अतीचार सइं अंतरद्धा स्मृति नउं अंतरद्धान किमइ पूर्वइं दिसिइं जोअण सउ
एक गिउ आघउं जाचउं वइं पुण निरंतर स्मरण नही पूर्वइं दिसिइं जोअण सउ नीमहइ कि दउढ तिवा
जउ संदेहालइ हवइ आघउ जाइ तउ अतीचार पडि लइ गुणव्रति पढ॰ एपांचइ अतीचार पडिहरवउं
गुणव्रत तनंदिऊं हुइ [अत्र सिंहश्रेष्ठि कथा ॥ १ ॥] ॥ वसंती नगरी कीर्तिपाल राजा भीमबेटउ राजा
नइं मित्र सिंहश्रेष्ठि एकवार हूतउ एक आवी राजा। हूइं वीनवइं स्वामी नागपुर नगरि नाग
चंद्र राजा तणइ गुणमाला कन्या ते ताहरा पुत्र हूइं देवा वांछइ प्रसाद करउ पुत्र मोकलउ रा
जा सिंहश्रेष्ठि नइं कहिउं नागपुर इहां थकउ सउ जोअण णफेरइ उं ऊइ मरुइं सउ जोअण ऊपर
हरउं जावा नीमहइ मेहरण नहीं जाउं राजा कुपित कहइ जउ नहीं जाउं तउ हउं हकुइं कंट घाली
जोअण सहस परइं मूंकाविसु सेठि चलउं कहइ इं स्वामी अम्हारा वयोगनइं नइं एहलुं अंतर करतउ हउं
तउ अम्हारउ आदेश मारइ उं मस्तकि डि वइ सिंहश्रेष्ठि मुख्य करी बेटा साथिइं घणो परिवार चलावि
उं मागि सेपिइं प्रतिबोध देइं राय नउ कुमर संसार विरक्त कीधउ जोअण सउ गिउ पूठिइं श्रेष्ठि आघ ७५

उं पीआण उं न करावइं कुमर हूं तेऊ मुहूर्त्त दिक मांहि ऊतावलउं ऊतर करइ पंचदिहाडा हूआ तिसिइं सा
मंतउ कुमर वीनविउ राजाइं अम्हारइं चालतां ध्यान भंग कहिउं हूं तउ जउ ए सिंह पीआ एउं निषेधइ तउ
चालिइं बंधीनइ लेइ ल्यो कुमरिइं ते वात सांभली तक्षिलगइ आपणा गुरु सिंहश्रेष्ठि हूइं कही चल
तउं सिंहश्रेष्ठि कहइ एदेह कपरिमोह नथी वनमाहि जाइ पादपोपगम अणसण लेइसु बांधी
जा सिइं तउ माहरउं सिउं लेसुइं इसिउं कहीरा त्रिइं श्रेष्ठि वनि पहुतउ ताहरा डि पगाम मंडि
इं आरण इसिउं कहइ तउ कुमर केडिइं जिगयउ विहु दीक्षा लिइ पादपोगम अणसण लीधउं
पालाति सघलउ परिवार आविउ अनेक घा डु आ वचन बोली बोली ताणउ पांवउ गय
यउ अनेक पाहुआ राजा हूइं प्रवाविइं सांनहु आ श्रद्धि हूई राजा तिहां आविउ देषइ त
उ वाघसीह ते हूं विहुं नइं प्रवावीइं सां तहूआ सेवा करइं छइं अनेक प्रकारि मनाचइ पुण पेलासा
हूं इ नडोलइं मास दीस अणसण पाली केवलज्ञान ऊपाडी मोक्ष पहुता राजा शोक विकलापक
उ मनि तक्कार्य करी पाछउ पहुतउ जिम सिंहश्रेष्ठि प्राणांतिइं व्रत न लोपिउं तिम अनेरइं न लोपिवां
॥ हवइ बीजउं गुणव्रत उपरिभोगपरिभोग परिमाण करइ छइ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि य पुप्फे अ फले अ
गंधमल्ले अ उवभोगपरिभोगे बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ मूल श्रावकइं सर्वथा निरवद्य आहारले

वर्ज । नदीतउसच्छिन्नपरिहारो थावउं ॥ तिमइ नहीं तउत्तो गाढा सावद्य अभक्ष्य अनंतकाय रात्रिभोजन
मांखण मांस मधु मद्यादिक ते वर्जउं अनेप्रत्येक मिश्रफलादिक नउं परिमाण करउं । तेह माहि मद्य
मिश्र मंस मिश्र मास राखिइं चावीस अभक्ष्य बत्रीस अनंतकाय जाणिवां ते नाम लेईइ कहीइ छइ वडपी
पल कंचर उंबर कचूंबर । एह पांचह नां फल अभक्ष्य । मासमनइ आकारि सूक्ष्म जीव तसथाउ छइ । तेह
भणी अभक्ष्य मधु मद्य मांस मांखण । एच्यारि विगइ अभक्ष्य । एह माहि निरंतर तद्वर्ण अनेक जीव
संमूर्छित ऊपजइं ते हभणी अभक्ष्य एवं हीमनि क्षेचल असंख्यात अप्काय भणी अभक्ष्य
१० विस ० । उदर माहि गंडोलादिक सर्व जीव नइ मारइं अनइ मरण समइ असमाधि
नपणउं कारण तेह भणी अभक्ष्य करहा । असंख्याता अप्काई भणी अभक्ष्य खडी मरुहड
प्रमुख सर्व प्रकार नी माटी अभक्ष्य डेडिकादिक पंचेंद्रियजीव नी उत्पत्ति भणी आमवातादि
क रोग ऊपजइं तेह भणी ॥१३ रात्रिभोजन मइ इहलोक परलोकि दोष घणा अभक्ष्य १४ बहुबी
ज पंपोटा रिंगणादिक फल अभक्ष्य जेमाहि तितला जीव जाणिवा ॥१५ अनंतकाय बत्रीस अभ
क्ष्य तेहनां नाम आगलि कहीसिइं अथाणां बोली पाडलली बूआं दिकनां जीवोत्पत्ति भणी अभ
क्ष्य घोलवडां जेकाचा गोरसमाहि सूक्ष्म वडां छइं ते अभक्ष्य काचा गोरसमाहि । मिलिइं केवल लइ ए

तां छइ जे विसमइ तांगिसा ऊंइं जेहमाहि तांतू छइ जेमूकां धूधिइं न छगार तिसघलउं इपत्ये
क जाणिवां सवएक अनंतकाई सह आगने कहिसिइं प्रणसिद्धांतमाहि बत्रीस नाम लेई कह्या
छइ पहिलउं तां सघली इ कंदजाति अनंतकाई केहा कंद सूरण कंद उदर सफेद वालणीलि
हउं नीलउ कचूरउ । आता वरि बिरालीवेलि ६ कुंआरि ७ थोहरि ८ गलो ११ लसुण १२ वांसनां
करणा १३ गाजर १४ लूणा १५ लोणइ बोलि इसाजीनी पजइ ॥१७ लोढउ पीइणीनउ कं
द १६ गिरिकर्णिका चोलि १७ नयां कूगतां किसलय पत्र १८ खरिसुआ १९ थेगकंद मोथा २०
२१ लूणरूखनी छालि अनंतकाई बीजा अवयव नहीं २२ खेलुहडा २२ अमृतवे
लि २३ मूलउ २४ भूमिफोडा जे वर्षाकालि ऊ पजइ २५ विल्हां जे कठउल धान्य अंकूर
छइं ॥२६ चनुलउ पालक छइ ते पहिलउं कूगिउं छइ तिहां जि अनंतकाई जे छेद्या ऊगिइं क गि
मतेन हीं ॥२७ सूरी अरी वाल्ह जेमोटउं छइ २८ पालिंकर्या कक छइ २९ कुंअर लीआ बिली जेमाहि
बीजछ सांचरिउं नहीं ३० आलू ३१ पिंडालू ३२ बिन्हइ कंद एबत्रीस अनंतकाई जाणिवां प्रत्येक अ
फूल कइर डाम हूअडादिकनां चंदाछिइं तेत्र ससंसक्तोलागचे लिपत्रादिक छइं तेह इजाणयां
फले सअ फलजांबू बीलउं पीलूं पीचूपाकां करमदा गूंदा मउर आमण बोर प्रमुख । एह माहि कुंधु

माहि जाणिवउं ॥ १९ ॥ वयंगणका मद्दीपावइ । अनइ निद्रा घणी आवइ । तेहतणी अनेकय । अनइ
आकार पाडूउ तेहतणी ॥ २० ॥ जेहि फूल फलनां नाम न जाणीइं । ते अनेकय किहारइ बिषफल खचराइ
तेहतणी ॥ तुच्छ फल ऊअली फली टींबरू प्रमुखनां घणांइं खाधइ । तिसी त्रिप्ति न पडइं तेहत
णी अनेकय २१ । चलितरस जे कोहिइं अन्नइं पञ्चीस पहर ऊपरि द्विदल दिक सोल पहर ऊपर रेहिं द
हीं इत्यादिक ते अनेकय तेह माहि जीव ऊपजइ । इं तेहणी २२ एबावीस अनेकय वर्जनीय वस्तु
जाणवां । हवइ बत्रीस अनंतकाय कहीइ ॥ १ ॥ पहिलउं तो अनंतकाइनउं लक्षण सिद्धांत मा
हि आम कहिउ छइ । गूढसिरिसंधिपव्वं समभंगमहीरगं च छिन्नरुहं साहारणं सरीरं त
व्विवरीअं च पत्तेअं ॥ १ ॥ एहनउ अर्थ गूढ सिरि जेहनी सिरा न सूझइ कहीइं । अणदीसती इं
संधि कहीइं पानडा नउं बिहुं अर्द्ध नउं विचाल जे । ते गूढ हुइ । अनइ पर्व जेहना गूढ हुइं पानड
उं जाछनी ली डांडी प्रमुख अनंतकाइ ॥ तथा ॥ समभंग जे डाला दिक सांजी तउ पानडा दिक त्रोडी तउ
सम हइ संगिसा न बहरइ त्रूटइ विसम जे मसाजइ अहीरगं जेमाहि हीर तांतूउ न हुइ । छिन्नरुहा छेद्या
मूं काइ पूठिइं छिवारइं पाणी माटी नउ योग मिलइ । तिवारइं वली पालव थाइ गलो प्रमुख । साहार
ए हलक्षण अनंतकाई जाणिवउं । तिहिव पए एहथी ऊपरांठउ पतलउ जेहनी नसा संधि पर्व ते दीस

आदिक जीवत्रसनी चकऊइं तथा कोठीबडां प्रमुख एह माहि घणां बीज ऊपजइं तेहतणी पाडय एतल
वस्तु सउ एह माहि लोगची इं ते कही हव बाहिर लउ भोग कहइ छइ । गंध मल्ले अ । गंध कहीइ सुगंध
द्रव्य कस्तूरी जबाधि कपूरादिक माल्य कहीइ । केतकी चंपकादिकनां फूल लोगु हे उच्चा चर इति
हा जिहइं जे एइ फूलि जेतली पांखुडी तीणइं ते तला जीव जाणिवा उच्च लोग परिलोग एहं च सुन
उउ ए लोग परिलोग करता बीअं मि गुणव्वए । बी जा गुणव्रतनइ बिषइं जे पाप लागउं ते निंद
उं ॥ २ ॥ ॥ हवं सातमा व्रतना अतीचार कहइ छइ । एहनां अतीचार लोगु जन आश्र
पांच अनइ कर्म आश्री पनर एवं वीस ती अतीचार ऊइं ते ह माहि लोजनां पांच आलो
इ छइ ॥ २ ॥ सचित्ते पडिबद्धे । अपोल दुप्पोल एअ आहारे तुच्छोसहि लक्षणया । पडिक्क
मे ॥ २१ सचित्ते काहिइ ऊइं सर्वसा चित्त न उनाम ऊइ अनइ किसउं सचित्त लिइ । अथवा सचि
त्तलिइ । अथवा सचित्तनउं परिमाण कीर्धं ऊइ । अनइ अधिक तउ सचित्त लेइ तउ सचित्ताहारप
हिलउ अतीचार । पडिबद्ध सचित्त ऊइं प्रतिबद्ध कहीइ लागतउ जिम कहइ ऊइं सचित्तनउं नेम
ऊइ । अनइ एइ वृक्ष थिकउ करवेडी गूंद आस्वादइ सचित्त जिव वस्तु लिइ छउं इ सिइं बुद्धिइं अ
थवा आंबा गोल्ली सहित पाकउं आंब उं अथवा कोलि आसहित राइणादिक मुखिया लइ अ

चित्त वचाइ जलेइ सुकुं आंबा गोली परही लां खिमुह मिश्रबुद्धि इंते सचित्त प्रतिबद्ध हारा
बीजउ अतीचार अपोलि अप्पक आहार अपक्क कही इ जे आगइ संस्कार्यु नही ते काचा लो
ट प्रमुख पीस्या पूं विइ केतला २ दिहाडा मिश्र इलि घकउ रहइ अचित्त मउ ३ उघाइ जेतला
श्री सिद्धांत माहि कहिउं अणचालिउ लोट श्रावणि भाद्रवउ एहे बिहुं मासे पांच दिहाडा मि
श्र रहइ पछइ अचित्त आसो मासि च्यारि दिहाडा कार्त्तिक मागसिर पोस एहे त्रिहुं मासे त्रि
णि दिहाडा त्रिणि माह फागुण ए बिहु मासे पांच पहर चैत्रि वैशाषि च्यारि पहर जेष्ठि
आसाढि त्रिणि पहर लगइ मिश्र पछइ अचित्त ते का वउ लोट पीस्या तणी अचि
त्तनी बुद्धिइं जउ लिइ ते अप्पक्क तणउ त्रीजउ अतीचार ५ दुप्पोलिओ आहार
दुपक्क आहार दुप्पक्क कही इ कांई पाकउ कांई काचउ उला कबी पुंक पापडी प्रमुख
ते हनउ भक्षण तेह पक्वौषधि भक्षण सउ चउ अतीचार ४ तुच्छौषधि भक्षण याउ चक्रहे
इ असार जेहनी घणी डली थी कांती न थिगा हीनेक प जहइ एका जेउ बथा कुं अली फली रूप ते
अचित्त इ करी जे खावइ तउ तुच्छौषधि भक्षण पांचमउ अतीचार ते कांइं सचित्त निरति इं कां इ ७८
ते कांइं एपांच अतीचार सेलवइ पडिकमिउ एह आस्रा जे पाप लागउ ते दिवस संबंधी आ पडिक

मत्रं बउं ॥ एह व्रत ऊपरि धर्मराजानी कथा ॥ श्री ॥ श्री कमलनगर राज शेखर राजा एक वार
जोसी एकाहनं स्वामी आवतइ समइ बार वरसी दुर्भिक्ष पडसिइ राजाइं सर्वस्व बेडावी कण अ
न्न इट्टणनउ संग्रह कीधउ लोक पाहिइं केवलज्ञानरूप न तंवन पालक मनइं सुखिइं तिहि वात जा
णी राजा चांदिवा गिउ पूछइ तगाव न जोसीनउ वचन काई विघटि के केवली कहइ ग्रहयोग ते
मकं तउ जाणइं जलि हि प डइ घुणसु भक्षा धान उकार एसांतल उ पुरिमताल नगरि एक उत्तम
हूं तउ लोगी माहारोगि उजे आहार लिइ ते विकार हे उ घाइ पउ इतीणइ विवेकि इंस
वे असद अनंत काइ खाटा खारा गुल्या चोपडा आहार सवी मनगुप्त समहव लीधउ व्रत लेख
थी पडि वज्जिउं कमिइं नीरोग थिउ महालइसीवंत जुण तेहूं तेनी मनमूंक इ एक वार महाड
र्लिढ्य अनेक पात्र दाननां पुण्य करी देव लोकि देवता थई तिहां थिक उ च्यवी इणइं जिनगरि
अद्भुत बुद्धि नाम आचक विमलाचार्य जेकइं एक दिन सोगापक ऊपदेश अन्न संग्रहचा नीम एकाइ उ
र्लिढ्य नीचा तइं जाणइं अन्नसंग्रह नकीधउ ते हनइं लिऊ पनउ का लेज ऋ्मिठ्र णाइ उ लेकि
नां जिन राजा हर्षिउ जइ ते वालकनम स्कविउ धर्म नाम दीधउ राजा घा पिउ धर्मराय नी आज्ञा वर्त्ता
वी तेहनं देशमु त्विढ्य हुआ जेह नव कर्णवी तेहनं देसे उ लिच्छ जि पद्या धर्मराजा महाराज्य पाली

दीक्ष्यां लेइ केवलज्ञानरूप पामीनइं मुक्तिइं गया ॥ हवइ जे पनरह आजीविका हेतुक कर्मरूप व्य
वसाय करइ ते हवइ श्रावकइं तजवा जिनइं छांडिवा ते हवइ पनर कर्मादानना अतीचार कहि
गाहे कहइ छइ ॥ गा ॥ इंगाली वणसाडी भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं वाणिज्जं चेव य दंत लक्ख
रस केस विस विसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपीलणकम्मं निल्लंछणं च दवदाणं सरदहतलाय सो
सं असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ पांचकुकर्म । पांच वाणिज्य पांच सामान्य एवं पनर कर्मा
दान कम्मरूप ॥ आजीवना हेतु ते हवइ सणी कर्मादान नाम इंगाली अंगार कर्म काष्ट
बाली अंगार करी वेचइ सोनार कुंभार लोहार भाडभुंजा नइं कर्म कोइटवा
हकरइ ईंटवा अग्निनइं आरंभइं निपजइ ते सर्वे अंगार कर्म वणाचन कर्म छेद्या
अछेद्या वन आख्यां वेचइ आंबा रायणादिकना पाटा लिइ पान फूल फल
नो लीलहण काष्ट कंद वेचइ वाडी कांबा करावइ कण दलावइ पीसावइ आजीविका हेतु
ए सर्व वन कर्म साडी शिकट कर्म शिकट वाहिण अथवा तेहना अवयव धुरी धुंसर समइ
ल प्रमुख घडइ घडावइ तेवेचइ ए शकट कर्म भाडी भाटक कर्म गाडलां बलीवर्द्द लय सांढ
ट खर वेसर घोडा एह रइं भाडइं परायभार वहावइ आजीविका हेतइ ते भाटक कर्म ४ फो ७९

डी सुवज्जए कम्मं स्फोटक कर्मं कूआ वावि तलाव खडो खली नां खणवा अनुकाम पाहण
फोडवा सिलाघटनुं काम हल दंताल करी भुइं खेडइ खाणि खोदइ जे तलाइं छी आरंभ ते सर्व स्फो
टक कर्म हवइ वाणिज्य कहइ छइ वाणिज्जं चेव दंत वाणिज्य हाथिआना दांत चमरी गाइना चमर
मगरमच्छादिकना नख डेथू पिआवइ शंख कपर्दा चीड पोहीं समुक्ताफल कस्तूरी व्याघ्रचात्रा
दिकनी त्वचा आलां चांबडां ते घडी वहइ हांग हांस रूपरोम अनेरा जे त्रसजीव अवयव
नंचा णिज्य तेदंत वाणिज्य माहि आवइ एड अआगरि जइ करइ तउ गाढं दोष लख
लाक्षादि कसुली घणा जीव नइं कष्ट जइ धा कुडीम छमाहि तिल इत्तेह हणी स
दोष एह्वां वस्तुना वाणिज्य सर्व लाक्षा वाणि ज्य माहि आवइ रसरस वाणिज्य माखण
घी तेल दूध दहीं गुल मधु मद्य वस आमलां च । तस प्रमुख वस्तु डीलो वस्तु तउं वाणिज्य रस
वाणिज्य कहीइं केस केस वाणिज्य द्विपद मनुष्य मोर सूडा प्रमुख चउष्पद गाइ नइं सिड बल
द घोडा गाली नृं केश वाणिज्य कहीइ ॥ गा ॥ विसविसयं विष वाणिज्य विष सींगी वच्छनागादि
क कटारो छुरी धनुष बाण कुहाडा दिक शस्त्र खडा सन्नाहां पाखर आंगा प्रमुख जे हनइ बलिइं ।
जूमाहि घणा जीव कूइं मारइ हल कश सिकनदां घरटी अरहटनायंत्र लोहड सां बू

अहरिआवेपन्नरीकरंडसोगि।अहिफीणायोस्तइत्यादिकऊवस्तुसघलाविषनाणिडपमाहि
आवइ।एपांचऊचागिज्जिकस्या।हवपांचसामान्यकहइछइ।एवंरखइंत्रुप्यालणंकम्मयंत्रपी
डनकर्मघाणीघरटकोल्हूकरावइनीसाघरटीऊषलमूसलकांकसीप्रमुखवीकइतेयं
त्रपीडनकर्म।१।निल्लंछणंचनिर्लाछनकर्मघोडाबलदऊइंनाकफोडावइआंकपडावइ
समरावइकरलादिकनीमूछिगालावइकर्सकं बलपूंछछेदावइ।आजीविकाहेतुदाण।।द
लावीगा।मात्विइ।तिलारगो।तिहरानाव्यापार अकराकरकरइ।ऊतलऊनिर्दयपणाऊं
तेकाम।तेसर्वनिलंछनकर्म।२।दवदाणं।दव दानकर्म।व्यसनतणीअथवाधर्मनीबु
द्धिइं।अथवा।चालरवाल्या।अथवा।तृणवाल्या भूमिइंनवांकूपनोमाहइहइअंकूरागाइ
चरइ।इत्यादिकारणेवडिइंऊईदववदिइ।स रदहतलाइसोसं।सरोनरइजेरवल्याविणु
कइदहद्रहतलाइकहीइ।तलावषणीनइकीधइ।यतलइंचाविरूआजाणीचाएसघलो
कवइपाणीऊलीचावइ।बाकखंदककोसचला।वइतिहांअनेकजलचलेचर।पांचेंद्रिय
जीवमरइं।४।असइपोसंचविज्जा।असतीपोष।असतीकहीइ।छेऊसी।लिहिंसकजीव
मांजारमोरकूकडाश्वानसूअडासालहीछष्टनार्यापोसइ।अथवाचेववदेहउदासदासी

८७

पोसीइतेसर्वअसतीपोषकहीइ।एपांचसामान्यपाडुआकर्मएवंएरपवानोवर्जिवांमिवेकिइव
र्जिवां।।७।।हवइत्रीजउंगुणव्रतकहइछइ।अनर्थदंडविरमणकहइछइ।जेनिरर्थकपापलागइ
आत्मादंडाइ।तेअनर्थकहीइ।तेचिऊंप्रकारे।एपाहिलुंअपध्यानचारित्तवद्धगउचिंतवइ।वइरी
नयआमवांधइमारउंराजापाउंतउवइरीनोगाममारउंबालउं।उउविद्याधरथाउं।तउस्वेछाइउ
इताचइतेस्त्रीविलसउंइत्यादिकऊध्यानकर इ।१।बीजउप्रकारपापकर्मोपदेशआवइगउंता
तेहकऊइंउपदेशदिइ।कल्होडियासमउसमा रउखेत्रिमिनउदिउखडउघोडाआषांफेड
उं।वइरीमारउइत्यादिकमारउ।।२।त्रीउ उंडेऊहिंसकवस्तुतउंपरकइ।आपिवउ
तेगाथाकहइछइ।।७।।आ।।सहिगममूसलउं तगततणाकहेमंतमूलतेसंक।दिन्नेदचावि
एवा।पडिक्कमेदेसिअंसव्वं।।१४।।सज्झशस्त्रआगालि मूसलऊषलउंतगथंत्रगाडलादिकटाण
हांणु।बुहारणीप्रमुखकहि।काष्टअरहट।नीसालादिप्रमुखमंत्रसापरवीलवानइतेनामूलम्
ली।गर्तश्रात्तनपातननीसेसकी।तिषउघणानउषधनउनयोगचशीकरणउच्चाटनादहेउ।दिन्नेप
एतलाहिंसकवस्तुदाक्षिण्यस्थानकटालीअनेथिकीधउंऊइ।अथवादिवराथितउंकइ।पडि०
तेदिवससंबंधिउपापपडिक्कमउंछउं।।७।।हवचउथउप्रकारऊप्रमादइंअनर्थदंडलागइ

तेकहइ छइ ॥ ७ ॥ इव चउथउ प्रकार जे प्रमाद इं अनर्थदंड ॥ न्हाण वट्टण वन्नग विलेवणे सद्द
रूव रस गंध वत्थ आसण आभरणे पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २५ न्हाणं ते जे अभ्यंग करीनइ ना
हीइ ते जयणाइं जीवाकुल भूमिकाइं अथवा बहु पाणीइं न्हाइ अथवा अणगल पाणीइं की
धउं अथवा घणइं पाणी घणा खलि पाणी ओछां उवट्टणउं कहइ पीठी जे अभ्यंग पूठिइं कीधा
सइ तन उमल कन्तारी इत्ते मलनी वाटि राख माहि नकइं काई जीवनइ राषनधालीइं तउ काढीइ
नराइं कोडी एलर ए घिके स्थानादिके षाजइ अ घच पगेसं पाइ तेहलणी तथा वन्नग विलेव
णीव सी कस्तूरादिक नउं विलेपन कंकुम चंदनादिक नउ तेह माहि जउ अजयणा
इं कुंती कीट कादिक जीव पड्या सद्द रूव व ग श छइं वंशवीणादिक ना कौतुक तिकिइं सां
भला अथवा आधरातिइं कं घइं सादिइं बोलिउं । हाइ जे हत्तणी रातिइं मोटइं सादिइं बो
लतां आकजी वणाव ईणाइं गाथाइं अने कदोष श्री उद्य निर्युक्ति सिद्धांत माहि कहिया छइ रूप
नाटकादि जोयां छइ रस गंध वर्ण वीकरा कदी एक कइं कहइ रूपडा वाछइ ॥ वच्छ ॥ वस्त्र तथा
आसन मांची पाटलादिक तथा आभरण आश्री पाप लागां अनेरा को का इ पास्त्र का मशास्त्र तउ ८१
रासी आसन भ्रांक सत्तरी प्रमुख कशास्त्र जो यां छइ चोर मारी तउ जोयइ सती नां काइ तलदरण जोयां

व इरीना संतानीया मिलउं चयर मां डिउं छइ देशकथा राजकथा भक्तकथा स्त्रीकथा का धी छइ ।
जिन भवन माहि हास अंरामति थूंक चूउं निद्रा कलह पाडइ वा मत्तउ विध आहार नउं लेच इ कीधूं छइ
मार्ग नउ श्रम अथवा रोग टाली आरकी रातिसूतां इ छइ अथवा आलसिइं घी तेल तवा मक घाडां मूक्यां
छइं तेमाहि कुंदिर घिरोली मारवी कोठी प्रमुख जीव पड्या विणा छइं इसीपरिइं जे प्रमादिइं करी नि
रर्थक पाप लागउं पडिक्कणत्ते दिवस संबंधि छइ ॥ ७ ॥ एतलइ अनर्थदंड ना च्यारि प्रकार कह्या द
वए हव्रतना पांच अतीचार आलोइ छइ ॥ ७ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए मोहर अहिगरण भोग अइर
ते दंडं मि अणट्ठाए तइअं मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ कंदप्पे हसे हेवचनेरूपज इ कंदर्प
रूप जइ ति हिं वचने हसतउं हंतउ क्रीडा विनोद करइ कुक्कुए कोकुच्च मुख आंखि भ्र
इ करी भंड चेष्टा तिसी करइ जिसिइं अनेरा नइ हा । मउं आव इ मोहरि मोखर्य असंबद्ध अन
इ घणउं बोलइ ३ अहिगरण संयुक्ताधिकरणता अहिगरण कहीइ पापप्रकरण ते संयुक्त को
कहीइं सज्ज करी मेली मेल्यां छइ षल अनइ मूसल नी साअनइ लोढउ घरटी मांचेपउ अनइ वि
चिमां कडाइ सज करी मेला मूक्यां छइं तउ माणस लेत उचारी न सकीइं हू हू आं कीधां छइ तउ अणा
बोलिउं निषेध्या णाउं जिते नणी वि वेचकीइं मेल्ही नमेल्हवां भोगो अइरित्ते भोगा तिरिक्त ता भोगोप

Dr. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊ दाजी

तोगयो गंधस्तु माफि रीमेलइं जिम नाहवा चां जनइं छुं तइं ती लकं कोडी गाकेरडां भी ल्यां ते देषी न
इबी जाइ प्रसंगिइं नाहइं ॥ ५ दंडं मिण ॥ एअनर्थदंडइ सिइं मा मिइं नइंअं मित्रा जइ गुण व्रतिहि
अतीचार लागा ते निंदउं ॥ ७ ॥ ३ ॥ अत्र सुरसेन कथा ॥ वंधुरी नगरी वीरसेन राजा सुरसेन महा
सेन बिबेटा महाप्रीति एकवार महासेन नी जीभइं रोगऊपनउ जीभ सूएणी किम्हइ गुणनहीं
कहीमहा दुर्गंधि गंधाइं कुटंबिइं पेलउं बाहिउं ते देषीस्नेहलगइ सुरसेनकुमारिइं प्रतिज्ञा
कीधी जां एह कइं एरोग छइ तां मूं हइ इं अन्नपाणी निषेधम रइ तउ साधिइं आणसणालि
उं इ सिउं कदी आग लि वइरउ माखवी कां जइ। तउ कारिइं अति मंत्रिइं उपाय सूपा
णी पाइ जीभ सींचइं वधा रामी मुहूर्त्तिएक इं। जीभसाजा थई राजा हर्षिउ तिसिइं
श्रीभद्रबाहु अवधिज्ञानी गुरु आव्या छइं बिहुं ना इंडइं वांद्या सुरसेन ताई नइं जिह्वाना
रोगनउं कारण बइ गुरु कहइं माणि पुरि नगरि मदनद्विजीय महाश्रावक ते हनइं बिपुत्र धी
र अनइ वीर एक वार उद्यानग्या आपणउ माउलउ वसंत ऋषि पुरुषे वा टिउं तुं इं पडिउं दीठ
उ पूछिउं एसिउं एपुरुषि कहइ इ वडां जिएह ऋषि नइं साप एक डसा नइ आणइ बि लिपइ छउ ८२
ति सिइ धीर वारइ बांधव मुहि आंजी तइं पाप कां इं ऊपाजेइं पेल उ कहइ इ ऋषि नउ मार एहा रते साप

मारीइ तउ धर्मऊइ मारवानी वातइं किस्यां पाप इम उन्न पाप लागइ तउ मारइ रीजीभइं पाप आ
विउ पछी धीर कुमारिइं मणि मंत्र ऊषधी नइं बलिइं ऋषि साजउ कीधउ घणइं कालिइं ते धीर मरी
नइ अ हो सुरसेन तूं ऊपनउ महासेन ते वीर नउ जीव ऊ चूवन बोल्या तणी जिह्वाइं रोग थिउ ऋषि
जीवाडिवानइ पुण्यइं तूं हुइ रोग फेडवानी लब्धि ऊ इ ते सांभली नइ बिहुं नइं जातिस्मरण ऊपन
उ दीक्षा लीधी ऊ मिइं मोक्ष पहुता इसि उंहा। णी अनर्थदंड टालिवउ इम त्रिणि गुणव्रत
कह्यां हव चारि शिक्षाव्रत कहीइं छइं पहिल उं सामायकव्रत जे लगइ बि घडीनी वेला
आर्त्त रौद्र ध्यान सावद्य व्यापार मूंकी नइं। आत्मा समिति परिणामि राखीइ तिह
ना अतीचार कहइ इ छइ ॥ ८ ॥ श्री ॥ तिविहे दुप्प। णिहाणे अणवट्ठाणे तहा सइ विहूणे सा
माइ वितह कहे पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ तिवि हेय त्रिविध त्रिहुं प्रकारे प्रणिधान कह्या
पार किम पहिलउं मनो दुःप्रधान जेह मन माहि क्रोध लोभ अभिमान ईर्ष्या द्रोह घर हाट नी चिंत
प्रमुख मनन ऊ व्यापार करइ बीजउं वचन प्रणिधान जे वचन सावद्य बोलइ त्रीजउं काय दुः
प्रणिधान जे शरीरना अवयव यथा अणपूंजिइं हलावइं खडूं आलइ अणपूंजिइं हीडइ घांतल
इं ती तिइं ऊंघइ निद्रा करइ अणवट्ठाणि अनवस्थान निरादर पणउं सामायिक लेई नइ त

कालि अण्णसूगउं पारवउं वीसारइ नीयमी वेलाइं सामायिक न लिइ । अस्त्रछउं सचारउं तावृतिवा
रइं लिइ तेहा सइ चित्त स्थीतथा स्मृति विहीन सामायक लीधउं कि नथी लीधउं । सामाइए ए पडिमेप
डिलइ सामायिक त्रिद्धयाव्रत ते कांइ वितथ कुउं कीधउं । एतलइं ए अतीचार लागा ते निंदउं
छउं ॥ ग ॥ अत्रा शिष्य पूछइ जगवन सामायिक इ लीधइं मन नउं सर्वथा निग्रह करीन सकइ
अनइ मन नइं अकुव्यापारिइं तउ सामायिक ताल इ एकते पाप अनइ ताग नउं प्रायश्चित्त
वृत्ती करिवउं जोईइ ते अधिकउं के तेह तणी सा मायिक कीधा पाषइ अण कीधउं भल
उं । हार कहइ इम नहीं जेह तणी सामायि क दुविहं तिविहेणं ईणइं लागइं
लिइ । एम जिम निइंचवनिइं काइं सावद्य करउन हो । अनइ करावउं नही इस्यां ज नीम
आचइं तउ जमाहि किवारइं एक नीमता जइ तउ कांपा च आखारहइं । अनइ मननउं अकुव्यापार
नउं पाप अल्प जइ । तउ मिच्छामिदुक्कडं ऊसूजइ अनइ एक कारणि जउ सामायिक नि टालनिहं
य पाणउं देषोइ । तउ ईणइं क्यालिचारित्रा उदइ जणइं नथी तेह तणी सामाइ कि जिलि वउं जि । अ
नइ लेईन इस्सु द्यापालिवउं तेणी वातइं खप करवी । अनइ हावडां नी दीक्षा सामायिक एसवे ८३
अल्पास मात्र ना णिवउं अल्यास करतां कहाइं स्वधउं लाल इलाग उं सामायिकदंडक अनइ पार

वानी गाह आगइ बषाणी छइ । एह सामायिक व्रत ऊपरि डोकरनी कथा ॥ गा ॥ एक इं नगरि इंसु
धन सेठि व्यवहारि मिथ्यात्वी लछ्य सोना दान देइ । तउ षाटघक अनुइं पगमूंकइ तेह नाधवल इह
दूकडइं रूपइ इए कश्राविका फोकरा तसइ । दिहाडउ सघल उदालिद्दू करीओ वइ । उत्तय काल सा
मायिक सूधउं पालइ । एकवार न करा णउं । बइ वी आहा माहा करइ । से ठिइं दीठी कहि उमाहरी परि
इं लइ सोना दिन प्रति इंद्देती जइ । तउ खोटि पडी इ त्याइं डुक्कथ रइं । आसित्र आउगवु बुहकि
चइ सिंघोडेरी कराणी कालघणेरी करडे पेल १ कहइ इम मकहउ एसामायिक मोकलउं
ट उंपुण्यपछइ आमिइं फो करी मरी ते णइ जिन गरिरायनी बेटा जइ । महाबल ततेहरइं
जातिस्मरण छइ से विमरी वनमाहि हस्ता थिउत लिसाही ते रायन इं ते टइं आणिउ पहहइं
स्ती कीधउ त्रि लि बार आसरक तरइ एकवारपाणी वालइ वूटइ तिआपणउं धलहर देषी मूर्छा
आवी । जातिस्मरण ऊपनउं विषाद धरतउ मूंछा नउं मिस करी नइ सुइ पडि उ जिरहिउं राजा रोगनी
इं कातणी अनेक लणी प्रतीकार करावइ । हा पुण्य हा । बीकि म्हइ नकरावइ रायनी बेटी इत कता ।
कि इं अनइ जातिस्मरण नइं व लिइं जाणी मइं कान माहि पइसी कहिउं । व्रहिं सि जिम नित्त तिकरि
करि उं अकस्मात सरणो णण । हुं सामायक राय हार । ब कुगुण समयते ण । २ सं केतजा गिउ हाथी ऊवि

उ अनइ आमलेई दोष लोकि गिउ राजकन्याइं धर्म पाली सुगतिइं पुहुतउ। ए हसणीसामायिक ऊप
लिखउं॥ ७॥ ॥ हवइ त्रीजउं शिक्षाव्रत देशावकाशिक कहीइ छइ। जे जीवजन दिशादिक यावज्जी
वनउं दिशिपरिमाण छइ पूर्वव्रति कीधउं छइ तेह माहि थिकउ संकोडीइ नइ खेत्रचा तउ हवइ एहउं घर
बार पत्तलाण कउ पहर खड़जा घा नाम इ मदिनाई आनीम लिइ देशाक दाइ छोड्उं सिउ तेहनउं अ
वकाश मोकलउ मूंकइ तेसणी इहिं श्रावका ग्रामनाम ॥ हवइ एह व्रतना पांच अतीचार कहइ छइ॥ ब
॥ आणवणे पेसवणे सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे। देसावगासिअंमि बीए सिक्खावए निंदे॥ २८
आणवणेण आनायन नीमी भूमिका बाहिरि थिकउ कांई आपणा कन्हइ आणावइ २
पेसवणे २ प्रेषण आपणा कन्हइ लिथिकउ नीम ल्यू इं बाहिरि कांई प्रेषइ मोकलइ सद्दे शब्द
कांई काजि ऊपनइ नामीलउं बाहिरि कांई पेषइ। मोकलइ रहीउ छइं शब्द करी खुंकारउ क
आपणपउं जणावइ ३ रूवे रूप अथवा कंचइ गमिचडी आपणउं रूप देखाडइ ४ पुग्गलखेवे
पुद्गलक्षेप नीमीनउं बाहिरि कांकरादिकनां खीनइ आपणउं काज संभारइ देसाव० बीए सिक्खा
० देशावकाशिक बीजइ शिक्षाव्रति जे पाप लागा ते निंदउं छउं॥ ७॥ अथ सुमित्र कथा॥ ॥ चंदि ८४
का नगरीइ तारापीड राजा अधर्म सुमित्र महंतउ महाश्रावक एकवार पारवनइ दिहाडइ घरबा
हिरि विहाणइ छइं जिनी कलउं इसिउं देशावकाशिकव्रत कीधउं छइ। तिसिइं राय नउं तेडउं
आविउं प्रतीहार छइं आपणा नीमनउं स्वरूप कहिउं पाछउ गिउ वली आविउ कहइ राजा कु
पिउ कहइ छइ जउ मुहतउं नावइ तउ मारी व्यापार मुद्रा मागी नइ आवउ सुमित्रइं तत्काल मुद्रा आ
पी प्रतीहार लेई गिउ महंतउ हरषिइं आपिउं निश्चिंत छउ। तिसिइं ते प्रतीहार हासइं ते मुद्रा प
हिरी कहइ हुं आवउ महंतउ थिउ आवउ मंत्री थ्या। रमउ छडूं इ पाधारउ इम हासउं करतउ कु
षेवी टिउ जाइ छइ आघेर इअमिउ। तिसिइं कि हां नेघाय केहटी घर उकोधउ प्राहारान
पायके तेघाय करवउ। दिके आहणपाधाय ।पड्या छइं। तिसिइं कलकल थिउ राजा
इं जाणिउं मुहतइं ए प्रतीहार मराविउ राजाइं विउ देषइ छउ घाइ कपड्या छइं ते मुकता।
नानाही पूछिउं अरे कुणइ तुम्हे काई प्रतीहार मा रिउ पेला करइं खामी धरानगरनइं सुरसे
न राजाइं अम्हे मुकता छउं घाइ कमी कल्पाहुंता एआवीनइ किहांइ पुत्रपासि पडिउ इसि
उं कहितां डिव्यारिइ घाइ कमुं आ राजा पश्चात्ताप करी मुहता छइं खमाविवा गिउ कहइ धन्य तउं
जउ एव्रत आज न करत तउ मार राराज्य फांइं आधार कुण कुंतपछइ ते राजा धर्मनउ प्रत्यक्ष महि
मा देषी धर्मवंत थिउ ते राजानइं मुहता मउजी व महाविदेहक्षेत्रि मनुष्य थईमोहि हुइ सइ

जाणी देशावकाशक शुद्ध पालिवउं ॥ [illegible] ॥ हवइ पोसह नउं व्रत पोषधोपवास कहीइ छ
इ । पोषध च्यारि प्रकारे । आहार पोसह १ शरीर सत्कार पोसह २ ब्रह्मचर्य पोसह ३ अव्या
पार पोसह ४ देशतः पर्व तलांइ तिविहार उपवास अथवा आंबिलनी वा एकासणादि पचखा
ण करइ । जउ आहार पोसह सर्वत नउं चउविहार उपवास करइ । इम शरीर सत्कार पोस
ह सर्वतः एतलइं देहनी शोभा स्नान विलेपन । मस्तक गूंथनादिक न करइ न कल्पइ जउ दे
सतः तत्र एकेके हउं करिवउं मोकलउं इम ब्रह्मचर्य पोसह जउ सर्वतः तत्र त्रिकर
ण शुद्ध अखंड ब्रह्मचर्य पालइ । जउ देश तः तत्र अब्रह्म सनउ परिमाण करइ
इम अव्यापार पोसह जउ सर्वतः तत्र घरहट नउ सर्व व्यापार करवा नी म जउ देश
तः तत्र एकेकउ व्यापार मोकलउं इम विकल्प । कारि पोसह हे विशेद कहइ छइ । हवइ आ
हार पोसह । विकल्प देशि वराइ बीजा त्रिणि पोसह सर्वतइ लेवराइ देशात नही इमि
व्यवहार पोसह लेवानउ विधि सिद्धांत माहि घिकउ जाणिवउ पोसह दंडक वखाणीइ छ
इ । करेमि भंते पोसहं आहार पोसहं सव्वउ देसउ सरीर सक्कार पोसहं सव्वउ बंभचेर पोसहं ८५
सव्वउ अव्वावार पोसहं सव्वउ चउव्विहे पोसहे ठामि जाव अहोरत्तं जाव दिवसं पज्जुवासा

मि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि । निंदामि गरि
हामि अप्पाणं वोसिरामि । एहनउ अर्थ । करेमि भंते पोसहं भंते भगवन हिं ते भगवन हूं पोसह लिउं छ
उं । आहार प । जउ चउविहार उपवास कहइ । तउ आहार पोसहं सव्वउ जउ पाणि इमात्र आहार मो
कलउं कहइ । तउ सव्वउ घानकि दिसउ कहिवउं सरीर सइ रनउं सक्कार कहीइ शोभा नख रोम के
स नउं समारवउं । अत्यंग उगटणी स्नान विलेपनम । स्तक गूंथन प्रमुख तेहनउ निषेध सर्वतः बंभचेर
प । ब्रह्मचर्य नउ नाम सव्वउ तः । अव्वावार गृहादि कनउ व्यापार । किसिउ करवा नउ नाम सव्वउ तः
चउव्विह । इम चिहु प्रकारे पोसह अंगीकरउं । ठउं । जाव अहोरत्तं अहोरात्र आविउ हर
लगइ । जउ दिहाडा ना च्यारि पहर पोसह लिइ । इ जाव दिवसन उं कहइ । जे रात्रि नउ चिहुं
पहर नउ पोसह लिइ ते दीसउ तइ जिसू रुइ । आ धम्मा पूर्विइं लेवउं नसूरुइ । तिहां जाव दिव
सं से संरत्तिं पज्जुवासामि । इम कहइ वउं जेतलउं थाकतउं छइ तेतलउं घडी बि घडी नउं दीसत उछ
इ । अनइ रत्तिं राति सघलीइ पज्जुवासामि । पोसह पालउं । दुविहं तिविहेणं पनी मछइ । असिउ
अर्थ । मणेणं वायाए काएणं । मन वचन निइं कायाइं न करेमि न कारवेमि सावद्य करउं नहीं कराविउं
नहीं । अनुमोदना मोकली । जे पाप लागउं तस्स भंते तेहं ते भगवन ते पाप पडिक्कमउं मन माहि मि

मिछामिदुक्कडं दिजे॥ आत्मसाक्षिकनिंदउं गरिहामि निंदउं गुरुसाक्षिक निंदउं अप्पाणं वोसिराइ पापनउ करणहार आपणउ आत्मा वोसिरावउं ॥७॥ पसंगिइं पोसह पारवानी गाह वखाणीइ छइ ॥७॥ ॥सागरचंदो कामो चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो जेसि पोसह पडिमा अखंडिआ जीवी अंते वि ॥७॥ सागरचंद सागरचंद्रकुमार जेहइं प्रतिमा प्रतिपन्न पणइ पोसह लीधइं नभसेन कुमारिइं घडा नउ कांठउ माथइ दीधउं चि हरनउं अंगारे तरी मस्तक बालिउं पेलउं लागिउं रइ कूपि पडिनइ ही मरी देवलोकि गिउ कामो कामदेव श्रावक अढार कोडि द्रव्य नउ धणी पोसहलीधइं इंद्र प्रसंसा कीधी तिणइ कइं देवि इंनइ सद्दही पछइ तेणइ हस्ती नाग पिशाचरूपकरी क्षोभिवउ तेहउं क्षुभि नाराज रूप... चंद्रवडिंसो चंद्रावतंसक राजा णइं दीवा बलबा लगइ काउसग्ग नपारिउ इसिउं नाममन माहि लीधउं हूंत उ दासीइं जाणिउं मादरखा भा कइं अंधारउ होइ लउं ऊभिउ तेहतणी पइरनइ बेहइ इदीवउ सींचउ प्रभाति जेल्हाणउ काउसग्ग पारिउं राजा सुकुमाल तणी लोहीलेराणउ मरी देवलोकि गिउ सुदंसणो सुदर्शन श्रेष्ठि जेरायनी राणीइं क्षोभवि कुमति कर्मवदी धन्नो धन्नो एए तलइं धन्य धन्य एवं जेसिं पोसह जेहनी पोसह अनइ प्रतिमा जीवितव्य संदेहइं अखंडा

नहीं ॥७॥ ॥धनासुलाहणिज्जा सुलसा आणंद कामदेवाय जेसि पसंसइ भयवं दृढव्वयंत महावीरो ॥२॥ धन्नाव सुलसा श्राविका जेहनइं अंबड श्रावकहाथिइं श्रीमहावीरइं धर्मलाभ कहाविउ आणंद कामदेव श्रावक प्रसिद्ध एसघलास्तवयाया मावजेसिपसंसइ भगवंत श्रीमहावीर जेहनउ व्रतनइ विषइ दृढपणउं आपणइ श्रीमुखिइं वर्णवइ सामाइयपोसह संठियस्स जीवस्स जाइजो कालो सो सफलो बोधव्वो सोसंसार फल हेउ ॥३॥ एगाह आगइ वखाणीइ सामायिकपारिवानइ अधिकार ॥७॥ ॥पोसह विधइं लीउ विधि पारिउं विधि करतां अविधि खंडीयं अविराहियं तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥७॥ हवइ पोसह व्रतना पांच अतीचार कहइ छइ ॥७॥ ॥२॥ ॥संथारुच्चार विहीपमाइ तहचेवतोअणाभोए पोसह विहि विवरीए तइए सिक्खावए निंदे ॥२७॥ संथारु च्चारु विहीपमाय संथार उपाटिका बलादिक जेह संथारइ अनइ उच्चारु कहीइ लकूडी वडी नीति मात्र डिलतेहनी विधिनइ विषइ प्रमाद करइ पतलइं पडिकिइं बोलिइं च्यारि अतीचार जाणिवा किम संथार उलोयनिइं करी निटोल नजोइ अपयानरतिइं निहालइ नहीं पहिलउं अतीचार खलादिक करी निटोलन प्रमाजेइ ॥ अपया निरंतर न प्रमाजेइ बीजउ अतीचार उच्चारु कहीइ लकूडी वडी नीति तेहना चोलनिक

MEMORIAL

८६

रीनिद्रालननाइ। अथवा निरंतिइं चिंता करइ। किवारइं पोसह करिसिइ। किवारइं पारणउं करि
सु। अथवा चिंताणइ अमकुं रतो जननीपडा विसुइ मचीत वइ पोसह विहि। तइ पसिप श्री जाइ
त्रीजूं व्रतिपोष विधिकरइं विपरीत करा ग ग्रं। एतलइं इसि उं अर्थ जे अतीचार लागा तेनिं दत्त
ब्रं॥८॥ ॥पोसह ऊपरि चुलनीपिता श्रावकनी कथा॥८॥ ॥वाणारसी नगरी चुलनीपि
ता गृहपति श्रावक श्यामा भार्या। आठ कोडि द्रव्य। भूमिगतः आठ कोडि घरनइ मंडाणि आ
ठ कोडि देसाउरि एवं २४ कोडि द्रव्यनउ धणी आ ठ गोकुल एकेकइ दस दस सहस्र गा
इ। एकवार पोसह लीधइं रात्रिइं एक मिथ्यात्वी देवता पहिलउं अनेक अट्टहस
स करइ। पछइ हाथीया सर्पादिकनां रूप करावा लागइ। तिम हनु क्षुब्ध तिवारइं वड
उ बेटउ रूडे साही आणिउ प्रत्यक्ष देखतां मारिउ। कडाहि माहि तली तेहनउं आमिषता छि
टइ। इम बीजउ त्रीजउ त्रिहुं बेटे जाति क्षुभिउ नहीं। तिवारइं माता रूडे साही आणी। तिवारइं ल
गारेक कलि कलिउ। माता घरि माहि थिकी ऊठी आवी। पछइ वडउ काइं कोलाहल करइ
माता पहिलउं त्रिणि बेटा विणास्या हवडां वली उम्हनइ चलीको देवता अनर्थ करतउ दीठउ
माता करइ हवडा भमकइं अनइ ताहरा त्रिणि बेटा कुसलि छइ। असमाधि नथी। तूं कुकरइ एहं मि ८७

थ्या देवताइं एवी हक देषाडिउं। अनइ वडा मास्यां मोहलमइ। तइं जिपोसह विराधिउ ते रूडउं न
कीधउं। तवि विमाताकुसिइ जणपोसह वली। किमसापडइ चुलनीपिता श्रावक कइ पला
ति श्री महावीर वांदीनइ प्रायश्चित्त लीधउं। इस्या इगइ पणि सातली अनेरे पोसह व्रतिहइ पा
लिवउं॥ श्री॥ ॥हव बारमउं अतिथिसंविभाग व्रत कहइ छइ। अतिथिसंविभाग कहइं जी
णइं तिथि पर्व उत्सवादिक लोकीक व्यवहार मूंक्या लोकोत्तर ते अतिथि कहीइ
ते अतिथि। एतलइं ऋषि चारित्रीआ। तेहनइ। तिथिकइं न्यायनउ ऋपार्जिउ निर्दोषपा
णी वासनाइं करी। बहुमान पूर्वक पश्चात कर्मादिकदोष परहरतउ आपणां मा
टाकइं अनुग्रहनी बुद्धिइं दान देइ। ते अतिथिसंविभाग। हवइ आवकि किइं पोसहनइ पार
णइ। बारमउं व्रत अवश्यमेव पालिवउं जिइम हुइ। एकांतेन हा हव पात्रदान रूप परिआगणा
ग माहि इम कहिउं छइ। उत्तम चारित्रीयाकइं पोसहनइ पारणइं। बारमउं व्रत अवश्यमेव पा
लिवउं जिइमहइं। एकांतनहीं। हव पात्रदान रूप परिआगणांग माहिं इम कहिउं छइ। उत्तम चारित्री
याकइं असूझती वस्तु विहरावइ तउ आवतउ ताव अल्पायु बांधइ। उत्तम सूझती विहरावइ थी

घेत्राध्रुधायइ जे चारित्रीयाछइं अमनोज्ञप्रीतिकरखं कदर्यपातपाणी। ते अछुतदी घे पणानं लहइ
इ जिमनोज्ञप्रीतिकारिउं रूडउं। सातपाणी दिइ। ते अछुतदी घेत्रायु पणानं लहइ। ए च्यारि इ विचार
चिंऊं आलोचे कच्याछइ॥३॥ इवए इ व्रतना अतीचार कहइ छइ॥७॥ ७॥ ॥सचित्ते निखवणो
पहणो चिवहे समुच्चरेचेव। कालाइक्कमदाणे चउ बेसिरवाचरानिंदे॥ २२ सचित्त निक्खिवणे
योग वस्तु अणदेवानी बुद्धिइं सचित्तऊपरि मूंकइ। इं पिहणो अथवा सचित्तइं फलादिकइं
करी ढांकइ। ववएसहोइ आपणी तेवस्तु अन इ परदेसानउ ध्य पदिसाकरइ पराइंकि
हइ। अथवा देवानी बुद्धिइं पराई वस्तु होइ अन इ पापलाकिरइ। समच्छरो चेव कऋणि हि
इ एकइं आगइ दानदीधउं जाणीनइं चींतवइ कंकि। सिउएहपाहिं इं लडंगाइ ममच्छर दानदिइं
॥४ कालाइक्कप कालाइक्क कालकही इ विहरवानी ते अतिक्रमानइ मांझ्या माछइं तेउइ जाण
माहात्मा विहरइ भाणामइं। अनइ माहरउं नाम इनलाजइ आसि बुद्धिइं चेडे घे सिए चउ घइशि
ष्यावतिए पांचअतीचार आश्री जेपाप लागउ तेनिंदउं छउं॥ ७॥ श्री॥ अत्थेवन श्रेष्टिकथा॥ः
॥७॥ ॥श्री॥ ॥एकइंगामि धनश्रेष्टि विवहारीउ। रूपवती भार्या॥ श्री रत्नागर ८८

चिन्ह इनइ कंपरिणाम अनइ दानबुद्धि घणी। एकवारसे विइं गुरुनइं मुखिइं नीमलीधा त्रिका
ल देवपूजा एकांतर उपवास सचित्तपरिहार इत्यादिक कालक्रमइं अंतराय कर्मना उदय थिका
निर्द्धन थिउ। भार्या कहइ माहरइ पीहरि जईं द्रव्यमागी आणउ व्यवसाय करउ घणी प्रेर
णा इं सासुरा लणी चालिउ। साहूयानउं त्रांबल बइ। पहिलइ दिनि उपवास कइ। बीजइ दिहा
उइ दाननउ मनोरथ करतां जि मास खमण रु षि आविउ। तेहकइं दानदीधउं। त्रीजइ दि
नि वली उपवास। चउथइ दिनि सासरइ पकु। तउ अपार बहुमानि भ्रणविन्तकाइं नत्र
पिउं। निर्द्धनपणा लगी या भा आबिवानी त्र। मनइं पठइ निरासपाछउ आविउं मागि
नदीतडिइं आवि उ चींतवइ। भार्याइं घणे मनो रथइं ते दामोकिलउं घासिइ इसिउं चीतवी
नदीना घाटला चारू कांकरा लई पोटलउ बांध्यउ। घरि गिउ। पोटलउं भार्याहाथि आपिउं पे
ली इसी कांकरा फीटी इत्यारत्न काढी पेलीइं रसवती कीधी सेठि विस्मय थयउ तोजन कीधा पू
विइं खाटइं सूतउं चींतवइ। एकिसिउं तिसिइं शासनदेवताइं कहिउं तार इ रापात्रदाननाफल
गइ मइं कांकरा फेडी रत्न कीधां। सेठि तेहे रत्नेप्रोढ व्यवहारीउ थिउ धर्म्मपाली सुगति इंगिउ॥ ७॥
इथवा गीइं हूे षिइं जे दानदी धंउं तेनिंदइ छइ॥ सुहिएसु असुहिएसु अ जामे असंजएसु अणुकंपा

रागेण व दोसेण व। तं निंदे तं च गरिहामि। ३१। सुहिएसु सुखिआ धिकां अ दुखयाउ खियां धिकां
जामेव० जिम रूडूं असंयत तरडा दिक कुलिंगी कुपरि अनुकंपा ऊपनी दान दीधउं रागेण
वू रागिइं० माहिरइं मित्र इंस्नेहिइं दोसेण च० अघवा द्वेषिइं एक्रिया चष्टपा दूअानी। जिनध
र्मनी निंदा करइ इ० सिइं मत्सरइं करी अघवा राजादिक तेरुइं तउ तेहानि लयदी धउं ते
नंदे व० ते निंदउं गर्हउं बत्रा॥ब॥ ॥ हवइं जे सु। साधुकुंइं दान दीधउं ते आलोअइ छइ॥ब॥सा
हूसु संविलागो। नकउ तवचरण करणजुत्ती सुसंतेफासुदाणे तं निंदे तं च गरिहामि॥३२
साहू सुसं विलागो० सुसाधु माहात्मा छइं। उसंविलाग नकउ नकीधउं सुसाधु कि
स्या छइं तव चरण तवपतपा बार भेदे चरण ७० बोल चरणसत्तरीनां करण ७० बोल कर
णसत्तरीनां एहा बिहुं बिउनां अतीचार आउ घति उक्किमा हिकधांछइं जुत्ते सुतेह गुण छ
सहित छइ संते फासेण० प्रासुक दानयोग्य वस्तु छतीइंउ संविलाग नकीधउं तां निंदउं गर्हउं
छ॥ब॥ अवसंलेखना पांच अतीचार कहइ छइ इहलोए परलोए जीवी अ मरणे आससपय
ओगे पंचविहो अइयारो मा मझ हुज्ज मरणंते॥३३॥ इहलोए० अनइ भानवी धउ इंकं तइ इसी
परि आससा इच्छा करइ एहधर्मनइ प्रसादिइं आवतइं तविकं तइ मनुष्यपणउं जिरुडउं ल

हिइ उत्तं। एइहलोकाससप्रयोग मनुष्य छइं मनुष्य सवतणी वांछा एइहलोकि कहीइ परलोए
मनुष्य धर्मनइ प्रसादिइं देवपणा इंद्रपणानी इच्छा करइ एपरलोकाससाप्रयोग मनुष्य धिक
देवतानि परअनेरउ तेहलणी परलोक कहीइ जीवीय आसंघनाकीजतां अनेक महोत्सव
देखीनी तवछइ मूलणी एघउं मांडणकुइं छइं तउ अणसण इलीधइं धार्मि उंजीवीइ तउरूड
उं एजीवतासाप्रयोगइ किहांइ क कन्यासू मिका इं अणसण लीधउं कइ अघयाकणाहिइं
जा अर्चा करतउ नथी अघघाकुधा दिकिइं पी उंचीतवइ बहिलेरडा मरीइ तउरूडउं
एमरणाशंसा प्रयोग धव शिष्टिइं आव तइ सवि नाष्टरूपरसादिक कामभोगनी स
ज्यादिक पदवीनी वांछा करइ एकामभोगआसं प्रयोग ५ पंचवि० एपांचसंलेखनांना अ
तीचार मा मझ हुज्ज मरणंतिइं मझ्ज्जो॥ब॥ इ वप्राहिइं सर्वे अतीचार मन वचन निकाइ ल्लइं
कु व्यापारिइं लागइ तेहलणी ते आश्री कहइ छइ॥ब॥ काएण काइअस्स पडिक्कमे वाइअस्स वा
याए मणसा माणसीअस्स सव्वस्स वयाइयारस्स॥३४ काएण काइकपापडिमकायिइं सइरि
इं करी लागइ जीवबधादिक ते कायिइं जि करी तप नअनुष्ठान काउस्सग करी पडिक्कमउं
फेडउं वाइअस्स वायाए वाचिक जे वचनइं करी पाप लागा कर्कश आवचन वचनादिक ते वच

निंइमिछामिदुक्कडादिकनइंदेवइंकरी मणसामाणप अनइमनिइंकरीहेयाय लांगासमपक्कन
इविषइशंकादिकतेमानिइंजिकरी आहामइंयाडूयंकोधुं इत्यादिकचीतवतउहुंतउसझ
स्वयारस्रुसघलाइव्रतनाअतीचारकहइनंबउं ॥७॥ घलीपडिचारविशेषिइंकहइंछइंबंद
णचयसिरकागारवेसुसन्नायकसायदंडेसु गुत्तीसुअसमइसुजोइयारोतंनंदे ॥ इपबंदणव
यण वांदणउंबिहुंभेदे देववंदणउं गुरुवंदण। उवयण व्रतपाणातिपातविरमणादि
कचारव्रत शिरका शिष्पाबिहुंभेदेयहणाशि। ह्या अनइआसेवनाशिक्षा ग्रहणाशि
क्षा तेकहीइजेश्रावकनउंकारथकउआरं भउत्रकूपइबजीवणीलगइ सूत्र
अर्थलणवालगइरुइ अनइपिंडिषणाध्ययन श्रीदशावैकालिकनउंपाचमउंअध्य
यनतेइनउंसूत्रलणवालइहइ भुण्पुअर्थेवटबउटब उसीलणवालइहइ भुणइरवअर्थजोवा
नेइहइ एतलइंलणवानीनरतिए ग्रहणशिक्षाकहीइ अनइआसेवनाशिक्षातेकहीइजेनिरती
श्रावकनीदिहाडानीसामाचारीसघलीपहिलउंनउकारकहि तउजिसूत्तउकूपइ आपणउंस्वरू
पजोअइं हुंश्रावकबउं एतलाव्रतमूलकरइंछइं इत्यादिकदिनकृत्यप्रकरणमाहिकहीइछइ ९०
तेजाणवीगारवेसु गारवत्रिणिरुद्धिगारवरससगारवसातागारवरुद्धिगारवतेकहीइजेजीवश्रा

पणइंधनअथवाकुटंबपरिवारघणुंउदेषीमनिगर्वआणइ एहनइकरतइंजोवमोटउइ
विकउ इहलोकिजिहलूंईआलिलहइ श्रीदशार्णभद्रराजानीपरिइं ॥७॥ अत्र कथा॥ दशाण
पुरनगरदशार्णभद्रराजामहारुद्धिमदनउधणी एकवार श्रीमहावीरपाउधार्यासांभलीबांद
वइस्वामीतिसिइंश्रीडंबरिजइईयांदउं तिसिइंबीजइकोवांदानसकइ मइंजेइसुडातुरंगमपा
खरीसातसइंराणीसुखासनिबइसारीमाहा। मंडाणिश्रावितितिसिइंसोधर्मेंद्रइंतेहनउंमा
दउतारिवालणीचुउसविसहस्रस्वेतहस्ती विकुर्व्याएकेकानइंपांचसइंबारोत्तरमुख
मुखिइआठआठदंतदंतिआठआठवा वि वाविइंआठआठकमलकमलिइला
खलाखपांषडीपांखुडीइंइबत्रीसबद्धनाटक कदेवताकरइं करिंकाइइ तिहांसिंहासनि
आठअग्रमहिषीसहितइंद्रबइठउतेनाटक। जोअइछइ इसिइंमंडाणिइंद्रश्रावितदेषी।
दशार्णभद्रराजाकूइंआपणीरुद्धिउआतणीविराग्यरूपनउ तत्कालदीक्षालीधी इंद्रआवी।
पगिलागउ कहइस्वामीहववंदितिइंजीतउं जउचारित्रलीधउं प्रशंसाकरीवांदीपाछउगिउइवइं
बीणाइंलागपवंतइंरुद्धिगारवकरीनइ पछइसमारिखे अनेरइंतेवखुनकइंतेसणीरुद्धिगारव।
नकरवउं॥७॥ ३॥ ॥ हवइरसगारवजेमधुरअन्नपानादिकनइविषइइहइपणाउं एहलगइमधु

नराजाइंमंगुआचार्यनीपरिइंजीवदुर्गतिइंजाइं॥७॥श्री॥अत्रकथा॥मथुरानगरीमंगुआचार्य
तीणइंनगरिवारूआहाररसवतीजिह्वालालसइतीणइलोलवाहिअतेआचार्यतिहां नित्यवासि
इंरहिअ किंतलोदिहाडिमरीतेहनगरनाखालहूकडअयक्षनइलवनि।अधिष्ठायिकाव्यंतर
अथिउ।जितंगज्ञानिइयाजिलउसवजाणीपश्चात्तापकरइंमाहात्मायक्षनासवनआगलिइं
घई।बाहिर्हूमिइंजाइंतेहकुइंपाषाणमयमुं त्रिंघकत्रेमुंदइजीलकाढीदेषाडइमास
त्माघूलइतेयक्षकहइ हुंमंगुमहारउगुरुछ ।लनइंदोषिइंव्यंतरउथयउरषेअम्हेजी
तचाहियाएकउजअनघेषामउ इमकह ।अहहरपाचिउतेहलणीरसगारवनक
रवउ॥७॥श्रीऊतेसातागारव।जेसुकुमाल वस्त्रशीष्माजपाश्रिदिकनइमोहिबांध
इंतिमकीनसकइतेहलगइजीवदुखीउजा इशशिराजानीपरिइं।अत्रकथा॥८॥कु
समपुरनगरीशशिअनइसूरप्रलबेभाईराजायुवराजहूंता।एकवारश्रीविजयघोषसूरि
नीधर्मदेशनासांभलीसूरप्रलबूझइ।वडांभाईशशीकइकहइ।बांधवआपणपेधर्मकी
जइसमीहसीनइकहइऊणएइंधतारिउ।लाधांसुखछांडीनइंपरलोकनांअदृष्टसु
खनइविषइऊणखपकरइ।सूरप्रलकहइ।बांधवसंदेहमआणि।जगमाहिधर्मअधर्म छइजेधा
Dr. BHAU DAJI
९१

र्मपापनांफलदेषीइंछइं एकजीवसुखीया।एकदुःखीआ।एषसंरोग।एकनीरोग।एकसुरूप।एक
कुरूप।एकलक्ष्मीवंत।एकदारिद्री।इत्यादिकभावसघलाभणेपलालपापविफलजिऊइससीपरि
अनेकप्रकारिबूझविउ।तऊससीबूझइमहां।सूरप्रलिइंदीक्षालीधी।तपकरीपांचमइब्रह्मलोकि
देवहूउ।ससीचिरतकंतन।मरीनरकपृथ्वीइंनारकीथिउ।ताईदेवतासिंहलगाइतिहांजइपाछ
लासववस्त्रदेशांततेकइंइंणाचइअ।पढइससीपा। श्चात्तापकरइमइंसयरनइसुखिइंचाहिइं
तपअनइअनीराइचिरतनकीधी।बांधवतउते सइरमाहरुंकदर्थिं।कष्टसाहिवराबि
उंसिइंअहांहूंनरकनांदुःखबूटउंताईदे वताचलतउंकहइ।तीणइंतारइंजी
वराहितसइरकदर्थिंइंसिउलानउइ।कांईडउ पहिलांजोयतांहूंतांतिसइरतपचारित्रा
नांकष्टसाहिवराचततमइंनरममाहिनपडत।इसि। उंकही।सूरप्रलदेवताताईनिडेरकःफेड
वाअसमर्थहूतउ।वलीपाछउदेवलोकिगिउ।एहलणीसातागारवनकरवउ।पत्रिलिइगारवक
ह्यां।सन्ना।संज्ञाच्यारिएकेंद्रियादिकसर्वजीवकइंछइं।आहारसंज्ञाभयसंज्ञा।मिथुनसंज्ञाअ
परिग्रहसंज्ञा।४कसाय।कषायच्यारिक्रोधमानमायालोभ।एकेकउअपिक्रंविक्रतेदेअनंतानुबंधी

उ अप्रत्याख्यान संज्वलनउ। ए चंकषाय सोल भाइ दंडेसु। दंडीइ आत्मा धर्मरूपी उं धन चूकवी
इ। एहे करी नउ दंडना मेत्र त्रि॥३॥ मिथ्यात्वदंड मायादंड। मित्राणा करया नउ गुत्ती सु अ गुप्ति
त्रि॥३॥ मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति मन वचन काय त्रि॥३॥ सावद्य व्यापार निवर्त्तावइ। ति त्रि
॥३॥ गुप्ति कहीइ समइ सु अ। समिति पांच ईर्यास। मितिभाषासमिति एषणासमिति उ आदा
न निक्षेपसमिति पारिष्ठापनिकासमिति ए पांच समिति त्रिहं गुप्तिनउ स्वरूप पाछिलि॥
आवगारे बषाणी तिहां विस्तरि कहिउं छइ। वंशाष्टइ श्रावकनी इग्यार प्रतिमा
दिक संघ लाभ धर्मकर्त्तव्य लागइ जे अईया। रोष एहनइ विषइ जे अतीचार लागा
ते निंदउ॥३॥ ॥३॥ हवे सम्यक्त्वनउं माहात्म्य कहइ इच्छइ सम्मदिट्ठी जइवि हु पावं समाहि
रइ किंचि अप्पो सि होइ बंधो जेण न निद्धंधसं कुणइ॥३६॥ सम्मदिट्ठि सम्यग्दृष्टी धर्मनी आस्था
नउ धणी जीव जइवि हु यद्यपि अनिर्वहतउ करण सांणादिक आरंभनउं पापकांइ थोड
उं निसृ समाचरइ अप्पो सि तउ हि ते श्रावककइ कर्मबंध थोडउ हुइ स्या तणी जे ननिद्धइ। ८२
तणी निद्धंधसपणइं निटोल निर्दयपणइ न करइ धीठापणउ। एहरइ हसु वा सकइ इं आरं

केवडां पापकां जइ छइ। इम लगार श्रांका तउ जिकरइ तेह तणी पाप थोडउं लागइ तगव
न थोडउं जि विषइ जिम मारइ तिम थोडइं उइया पगा ढउं दोहिलउं तेहनी। किम गति ते कह
इ छइ तं पिक्कुसह पडिक्कमणउं सपरिआवं सउत्तरगुणं च खिप्पं उवसामेइ वाहिव्व सुसिक्खिओ
विज्जो॥३७॥ तं पिक्कुण अनिर्विहता तणी आरंभ करतां जे अल्प पाप लागइ छइ ते पाप सहित पडिक्कम
णानइ करवइ करी सपरिआवं परितापनइं ध रिवइ सउत्तरगुणं च गुरु दत्त तपइ प्रायश्चित।
नउं समाचरवउं ते उत्तर गुण कहीइ इं तीणइं करी। तेहइ पाप खिप्पं उवसामेइ श्रावक
उपशमावइ पाप नउ दर्प्पि सांजइं कहिनोप। रि वाहिव्व जिम सुसिक्खिओ तमाढइ उडज
प्रविद्यो माथे रोग उपशमावइ वली बीजउं कहइ। दृष्टांत कहइ छइ॥गा॥ ॥जहा विसं कुट्ठगयं
यं मंतमूलविसारया विज्जा हणंति मंतेहिं तो तं हवइ निव्विसं॥३८॥ जहा विसंण॥ जिम कोठा मा
हि सहइ रमाहि गिउं विष मंतमूल मंत्रमूली नइ विषइ डाहा विद्य मंत्रे करी हणइ तो तेह वइ पछइ
ते पात्र निर्विष जइ इं यद्यपि तेह धणी विषार्त्त तेह मंत्राक्षरनउं अर्थ तिसउ सुव्यक्त नजाणइ वुण अ
क्षरनइं प्रसाविइं सांनल तां इस्युं णउ उपजइ अत्र डोकरानी कथा॥ ॥ एकि इं गामि एकदा रिद्धडो
करी तेहनइ हंस बेटउं छइ थोबरू चारइ। एक चार वेडि घिकउ घरि आवइ सा पिइइ सिद्धं मूर्छि

नुइं पछि । मातांइं सांभलिउं । मंत्रवादी घणा मेल्या नइ । तिहां मंत्रवादी घणा मेल्या नइ । तिहां गई
मूर्छा देषी सघला इ मंत्रवादी पाछा आव्या । पछी ओ कवि कालए कलीइं तिहां रह्या कान्हकन्हलि
रह्या । हाथ स्मरइ सा हंस इम कहुं सुणी सादि इं विलाप करता रात्रि विहाणी । ति सिइं हंस साजउ थिउं
अति मातां हर्षी । बेहु घरि आव्या । मंत्रवादि । विस्मये हुं ते ज्ञो करी शुणी । तइं सिउ प्रतीकार कीध
उ पेली कहइ कांई न कीधउं । हुं हंस हंस इम विला प करती जिघा को पेले चोता थिउं । गारुड मंत्र
माहि एह जि बीजाक्षर छइं । इणइं ज्ञो करीइ । अजाणतां कानि लागा । एह दृष्टांत कहि
उ ॥ ब ॥ ह व दृष्टांत मेली आ पइ छइ । एवं अ ट्ठविहं कम्मं रागदोससमज्जिअं । आलो
अंतो अ निंदंतो । खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ४० एवं अष्ट प्र जिम अक्षर नइं जि प्रत्ला थिइ वि
ष गिउं । तिम श्रावक प्रकारे कर्म राग दोस ॥ राग द्वेषि करी ऊपाजिउं । आलो अंतो अ । जिम गु
रु आगलि आलोअइ । जिम निंदइ । खिप्पं हणइ तिम श्रावक ते कर्म वहिलुं जि हणइ कहीइ
छिपइ ॥ ब ॥ वली एह उपात कहइ छइ कयपावो वि मणुस्सो । आलोइय निंदिअ गुरुसगासे
होइ अइरेग लहुओ । उहरिय भरुव्व भारवहो ॥ ४१ कयपावो । जीणइं पाप कीधां छइ तेहइ मनु
ष्य आलोइ अ गुरु आलोअइ । निंदवई करी होइ अइरेग अतिरेक कहीइ घणउं हलउं थाइ निमाय ९३

पणइ आलोयतां इंजि नीव कहुं ए घणउं पापनउ भार क तरइ । दृष्टांत कहइ छइ । उहरियभ । जि
म भार नउ ऊपाडणहार भार ऊतारिइं हलउ थाइ ॥ ब ॥ श्रावक यद्यपि इं घणा आरंभ
करइ छइ पणि ते दुःख पडिक्कमणइं इ दुःख विलइ जाइं इसिउं कहइ छइ । आवस्सएण एए
ण सावओ जइ वि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरियं काही अचिरेण कालेण ॥ ४२ आवस्सए
ण । मन सहित षड्विध आवश्यक नइ करव इं करी सावज्ज्य यद्यपिइं श्रावक कर्म आरंभ प
रिग्रहे करी घणा पापला गां छइ दुःखक्षण । । दुक्ख एहइ दुःखनइ अंत कहीइ विना
श काही अचिरेण । थोडइं जि काल इं करि सिद्ध सुदर्शन श्रेष्ठिनी परिइं श्रा
वक पक करया जिघि कथ । अनुक्रमिइं का लिइं मोक्षपद विसिइ इसिउ ता व ॥ ब ॥ ॥
ह व पडिक्कमणां करतां जे आतीचार आलोअ वा विसर्या ते आलोइ छइ । आलोयणा बहु
विहा न य संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुणउत्तरगुणे तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४३ आलोयणा घ
णी आलोअणा कहीइ आलोइवा योग्य पापनय संभरिया । पडिक्कमणा करया न इ विषइ अव
सरि न सांभर्यां मूलगुण । श्रावकनइ मूलगुण कहीइ पांच अणुव्रत उत्तरगुण कहतां त्रिणि गुण

व्रत अनइ च्यारि शिक्षाव्रत तेह विषइ आं। तं मंदे ते पाप सघालां निंदउं गर्हउं छउं॥ ४ ॥ एव इता
लीस गाथा वइमाकहीइ। अंत उघातउ॥ ४ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स इसिउं कही बे हाथ जोडी
आघउं कहइ। अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए। विरओ मि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो वंदामि जि
णे चउव्वीसं॥ ४३ तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स। के वलिज्ञानी नउ भाषिउ धर्म अब्भुट्ठिओ मि आ
राधवा नइ काजिइ ऊजमाल थयउ छउं। विरओ मिय विराधना थकउ विरउ थक
ही इ ऊहटिउ छइ। तिविहेण त्रिविध मन वचन काय इं सघलाइं पापनउं प्रतिक्रमण
करी वंदामि चउवीस इ जिन तीर्थंकर वांदउं छउं॥ ४ ॥ हव अम्हा श्रती। अम्हा श्रताती र्थनी
वंदना करइ छइ जावंति चेइयाइं। उड्ढे अ अहे अ ति रिअ लोए अ सव्वाइं ताइं वंदे॥ ४४ हव साधु सा
धुं वांदइं छइ॥ ४ ॥ जावंत के वि साहू। भरहेरवय महाविदेहे अ॥ ४५ ए बिन्हइ गाथा चैत्यवंदना अधि
कारि माहि आगइ व्याख्याणी छइ छइ हव मोक्ष थाता उ अंत नउ प्रार्थना करइ छइ। चिरसंचिय पाव प्पणा
सणीइ। भवसय सहस्स महणीए। चउवीस जिण विणिग्गय कहाइ वोलंतु मे दिअहा॥ ४६ चिर
संचिय। चिरसंची कालनां संचियां पापनी फेडणहार छइ। भवसय सहस्स। भव तणां शत सह ९४
हस्र तेहनउ मथणहार छइ। एहवी चउवीस जिणाणं श्री॥ ॥ ४ ॥ ॥ श्री॥ ॥

चउवीस इ तीर्थंकर देव तणी कथा॥ ४ ॥ श्री ॥ वात नामोच्चारण स्तव मतेहना चरित्र नउ वर्णन इ
त्यादिक बोलिउ सेय तेह तीर्थंकर नी कथा करतां इ जि माहारा दिहाडा बोलउ अतिक्रमउ॥ ४ ॥ हव
आचतइ उ मांत रिबोधिबीज लाहवा नी आशंशा करइ छइ मम मंगल मरिहंता। सिद्धा साहू सुअं च
धम्मो अ सम्मदिट्ठी देवा। दिंतु समाहिं च बोहिं च॥ ४७ मम मंगल। एतला म झइ मंगलीक दाइ आ
हू आ हू रण हू रण अरिहंत। सिद्ध साधु साधु सुअं च। श्रुत सिद्धांत इग्यार अंग चउद पूर्व स्वरूप ध
म्मो अ धर्म चारित्र रूप एतला मझइं मंगलीक दाई आ हउ सम्मदिट्ठी सम्यग् दृष्टी जिमत
क्ति देवता दिंतु समाहिं च समाधि मन नउं स्वा स्थि दिउ बोहिं च बोधि धर्म नी प्राप्ति दि
उ॥ ४ ॥ अत्र शिष्य पूछइ भगवन देवता समाधि। अनइ बोधि दिवा नइं समर्थ छइ कि असम
र्थ। जउ असमर्थ छइ तउ प्रार्थना फोक इ जि अन। इ उ उ समर्थ छइ तउ अलिच्छ हरलव्यरहइं
बोधबीज कां इ न दिइं हव गुरु कहि सिउ योग पउं इं दे इं सकइ अयोग पउं इं दे इं न सकइ तउ ए
तलइं योग पणि प्रताइ जि प्रमाण तेहे देवता इं सिउं छइ गुरु उत्तर दिइं वच्च सावउं सघलाइ योग
ता प्रमाण छइ भणजिण शासण नि एकांत वात किसी इ न लेवी उद्धरणी सघले सामग्री इं जि म माटी
ना योग्यतां इ छती इ इ जि घड उत्तनी पजइ। जउ कुंभार दंड चक्र चीवर माहि ली व्यापार करइ तिम

जीवनी योग्यताइं वर्त्तीइं जे अंतरायं पडतउं हुइ तेहनइं साजिवइं करी कवडयक्ष अंबिकादि
कसांनिध्य करइं । आगइ जिम मेतार्य रुषिइं हुइं देवताइं सांनिध्यइं बोधिबीजनी प्राप्ति हुई ते
हतणी प्रार्थना फोकइं नहीं का जगराइ जी ॥ ७ ॥ हवइ जेतला च्यारनां नइं पडिक्कमणउं हुइ तेख्या
नक कहइ छइ ॥ ७ ॥ पडिसिद्धाणां करणे । किच्चाणां मकरणे पडिक्कमणउं असद्दहणे तहा वि
वरीअ परूवणाए य ॥ ४८ ॥ पडिसिद्धाणं जिनप्र तिषिद्ध जीवहिंसा मृषावाद २ अदत्ताद
न ३ मिथुन ३ परिग्रह ४ क्रोध ५ मान ६ माया ७ लो भ ८ राग द्वेष ९ कलह १० अभ्याख्यान ११
रति १२ अरति १३ परपरिवाद १४ माया १६ मृषा वाद १७ मिथ्यात्वशल्य १८ ए अढा
र पापस्थानक नइं करिवइं । किच्चाणं मकरणे कृत्यक रवा योग्य देवपूजा विनय दानादिक
॥ ७ ॥ तेहनइं अणुकरवइं । असद्दहणे निगोदया ल्पोप मादिकना सूक्ष्म विचारनइ विषइं अ
सद्दहइ हवइं विवरीअ । विपरीत उत्सूत्र जे सिद्धांत सिउं न मिलइ तेहवी वातनइं परूपवइ ए
चिहुं प्रकारे जे पाप लागइ तेहनां पश्चाताप वयानइं काजिइं पडिक्कमणउं कीजइ छइ इमजाणी
वउं ॥ ७ ॥ हवइ सर्व संसारनां जीव षमावइ छइ ॥ ७ ॥ खामेमि सव्वजीवे सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती ९५
मे सव्वभूएसु वेरं मज्झ न केणइ । खामिमि सर्व जीव रात्रिइं खमावुं छउं सव्वे जीवा० सघलाइ जी

वमझ कुं परिक्षमा आणउ । मित्ती मे जे हसणी सर्व भूत प्राणी आं मित्र माहरइ मैत्री छइ वेरं
मज्झ माहरइ वयर कहि सिउं नथी ॥ ७ ॥ हवइ समाप्तिइं मंगलीक गाथा कहइ छइ ॥ ७ ॥ एवमहं
आलोइअ निंदिअ गरिहिअ दुगंछिअं सम्मं तिविहेण पडिक्कंतो वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५०
एवमहं इसी परिइं सघलाइं पाप सम्यग् निरंतर आलोइअ निंदी गही दुगंछी तिविहेण त्रिविध
मन वचन काय शुद्धपणइं पडिक्कमी नइ जिनचउ वीस इती थंकर वांदउं छउं ॥ ७ ॥ इति श्रीप्रति
क्रमणसूत्र बालावबोध समाप्त ॥ ७ ॥ श्री ॥ ६७ ॥ ह व श्री गुरुवंदना अधिकार माहि पच्चक्खा
ण घणा विस्तार तणी मही नउ वषाणउं तेहत णी हव डां वषाणी इ छइ मूल पच्च
क्खाण चित्तांता मतिलहइ छमासी तपना काउसग्ग माहि चीतवीइ पडिक्कमणउं करतां जि
अजे अमुक कउं पच्चक्खाण करिसु ॥ ७ ॥ सचित्त दव्व २ विगई ३ वाणह ४ तंबोल ५ वत्थ ६ कु
सुम ७ वाहण ८ सयण ९ विलेवण १० बंभ ११ दिसि १२ न्हाण १३ भत्तेसु १४ एवं कदनीम यथा
क्रीइं लेई गुरुमुखि पच्चक्खाण करइ गुरु प्रत्यक्ष न हुइं तउ वचणाचरिय समक्ष अथवा देव
पूजा करइ तिवारइं देवसमक्ष पच्चक्खाण करइ जउ कि वारइं प्रतिलेखन पडिक्कमणउं न करा
णउं तउ पोसालइं जई गुरुनइ पगि वांदणां देई गुरुमुखिइं अथवा गुरु नइं आदेसिइं महात्मा

नइं मुखिइं ऊचरइ इसइ गुरु अनइ श्रावक आश्री च्यारि लांगा ऊपजइ। किम गुरु पच्चखाण न जाणइ अनइं श्रावक जाणइ ए लांगउ शुद्ध अनइ गुरु जाणइ। श्रावक अजाणइ। तउ ते श्राद्ध पच्चखाण संक्षेपिइं प्रीछवी नइं करीवाइ। तउ ए बीजउ लांगउ शुद्ध अनइ गुरु अजाणइ। श्रावक अजाणइ ए त्रीजउ लांगउ सालूलउ। अनइ गुरुइ अजाणइ अनइ श्रावक अजाणइ ए निटोल लांगउ अशुद्ध। ते पच्चखाण संक्षेपिइं जोईइ तु। अत्रिक्के तेहे एक अद्धा प्रत्याख्यान अद्धा केहइ काल तेह नउ पच्चखाण पोरिसी पुरिमड्ढ साढपोरसि अवड्ढ पच्चक्खाण मुसल्लयण पोरिसि दिक एह्वा पच्चखाण बीजुं संकेत प्रत्याख्यान बिहां संकेत करइ। गंठिसहिअं मुठिसहिअं वीटिसहिअं अंगुष्ठसहिअं ते तल अंगोच्छडीमूंवडा बीडी मूवी दीवा बोफिर थम्भ तेतलइं मोकलउ इसी रीति संकेत जिहां ते तणा अनइ त्रीजुं अतिग्रह प्रत्याख्यान तेहे विगइ नीवी आंबिल प्रमुख अनइ जउ विस्तरि जोईइ तउ पच्चखाणना दससेद नवकारसहिअं पोरिसि पुरिमड्ढ एकासणउं एकलठाणउं विगइ आंबिल पचास अतिग्रह ए दसह ना विचार अनइ आगारनी व्यक्ति कहीइ छइ। ब। नवकारसहिय बि आगार किम ऊचरीइ। अगाएसूरे नमुक्कारसहिअं पच्चखामि चउविहं पि आहारं असणं पाणं खा

इमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं वोसिरामि। उगाए सूरे सूर्य ऊगिया पछइ आरंभीकरी नवकारसहिअं पच्चखामि। पच्चखाण करउं छउं। ए शिष्य नउं वचन गुरु पच्चखाण करावइ अनइ शिष्य वोसिरामि कहइ। गुरु वोसिरइ कहइ छइ। किम पच्चखाण चउव्विहं चउविध चिहुं प्रकार नउं आहार। किउ। असणं पाणं। अशन पान खादिम स्वादिम अशन कहता शालि डांगर बरटी प्रमुख सर्व मुग्द मुग्ग आदिक सर्व चणा साथूआ दिक सर्व लोट पेया दिक सर्व तिमण भाजीभाजा दिक सर्व पक्वान सूरणादि सर्व कंद मंडकादिक सर्व केलवी वस्तु ए सर्व अशन कहीइ। बीजी चेसणा खिरहाली आमली सींधव कच्चि पत्रलंबू अंबूआ लूण हींग ए सहू अशन माहि आवइ। पान पाणी कांजिक यव गोधूम छाशि धोवण काकडी आदिकनउं धोअण। अनइ सर्व इक्षुरस ए पान कहीइ सो करवाणी द्राक्षा वणी आंबिलवाणी इक्षुरस प्रमुख सर्व रस पाणी पाण कहता आचइं ठ्ठाण व्यवहार। अशन जिनउ खाइमं खादिम कहीइ सूखडी मेवा अथवा अन्य सवि खारिक टोपरां द्राक्षा बदाम अखोड खडछर प्रमुख सर्व मेवउ काकडी आम्र फल आदिक खादिम कहीइ। स्वादिम सूंठि हरडइ पीपली मूल मिरी अजमउ जायफल काथउ खयरवडी जेठीमधु तज तमालप

DR. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारकम्

९६

त्र। एलवी। लिचंग। विडंग। काग। चिड लवण। आसंध। अजमोद। कुलिंजण। पीपलीमूल। चीणीकबाब
कचूर। कंटासीलीउ। कपूर। संखल। दरडउ। बहेडां। कुलंजण। पानफूल। हिंगुलाष्टक। हींगुत्रेवीस।
पुष्करमूल। जवासामूल। चावकां। चांउलछालि। धवछालि। खयरछालि। खेडदाछालि। ए स्वादिमक
ह्या। ३ गुड स्वादिम कह्यो छइ। पण पथ्य व्यवहार अशन जिमइ। फूंकउं। नीरसी करीयास्थि। पाडलवासि
उं। सूंठिमउं पाणी। एउडइ नीतारी नइ गाल्यो ऊपइत उ स्वादिम नही। तिविहार पचखाणसूं अइ। ईम
इ स्वादिमि इंजि डाखुं। प्रवचसारोद्धार माहि। स्वादिम कहि छइ। अनइ श्री कल्पवृत्तिमां
हि स्वादिम कहिउं छइ। एह्या रइ आहार न उ विचार। नीबनी छालि। मूल। पान। डांखि।
लीगामूल। गलो। कडू। किरियात उं। अतिविस। कूड उ। बूंड। सूकडि। राख। हलद्र। रोहिणी। क्रपलो।
टा। वज। त्रिफला। पंचमूल। नूमियथमासउ। नाहि। आ। संधिरी। गणी। पलीउ। गूगल। हरडां। दालि। वउणि।
मूल। बोरिमूल। कंथेरिमूल। कयरडानउं मूल। पूंआड। आठी। मेंदी। बोल। बीउ। कुंआरि। बोटि। घेर। इ
त्यादिक बीज उं छडे। अनिष्ट पणइं ह्या पाखइ लीजइ। तेचिकुं आहार माहि एक इलाग इनही। अण
हारना णि। वजरइ। चेइ। ऊहि। नीम त्यागा। तिवारनइं ते एआगार मांकला मूंकइ छइ। अन्न त्थणा भोगेणं।
अनाभोग टाली। अनाभोग कहीइ। आतंत चासरिखउं पचखाण कीधउं। अनइ तिहां टोलवा सरागि उ

१७

तिसइ जउ कांई मुखि घालइ। थूणा। लेतलइ सांभारिउं तेतलइ। तत्काल धूंकइ। तउ कांइं न लागइ। ८
सहसाच। सहसागारेणं। गाइ दूहवंतां। सिद्धदोहतां। घृतादिक मथतां। छांट उछलीनइ मुखि पडइ। उ। ते सहसाका
र कहीइ। ते टाली। एतलइं। सिउं साच ति हां जाणि। पापूरइं। उ। जउ तत्काल धूंकइ। तउ पचखाण न लागइं।
एपचखाण बि घडी प्रमाण। उ। वविहार। ति ऊइ। सितउ आम्नाय। रात्रि ना च्यारि भूक्ष। ते रात्रिः
तो जननउ। तामठइ। तेह नोखरामणी। सिणी। ए पच खाण की जइ छइ। नवकार सहित नाम न उ सि
उ अर्ध बिहुं घडी। पूंचि इं नउ कार न लिउ। ए त। लइ भूक्ष नइ। नउकार न कहीइ। तउ सांज
उन पहूचइ। अनइ बिहुं घडी माहि नउकार। कहीइ। तउ न पहुचइ। इवपोर सिस्य
नइ साढपोरिसि। उच्चार आगार। सरखा छि। जाणवा। इहइ उ आगार। पोरिसि साढपोरिसि प उ
च्चामि। उगाएसूरे। चउव्विहंपि। आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अन्नत्थणा भोगेणं। सहसा
गारेणं। पच्छन्नकालेणं। दिसामोहेणं। साहुवयणेणं। सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। वोसिरामि॥ ना उ कथ
प्रमाणे इं छाया। तिवार इं उ। पोरिसि। पोरसदास कहीइ। श्री उत्तराध्ययन सिद्धांत माहि। ते हनी
निरिति। आम कहीइ छइ। बोरे। आंगुलतां। पहिलउं। पग कहीइ। उरुषक्षसवराहिउ। जिमणइ कानि स
धी मंडल का निदेइ। जानु तणी छाया जोइ। आसाढनी पूरि सिमा इं। कर्क संक्रांति नइ पहिलिइ दि

वसि जाउते छाया विपगपमाणजाइ तउ पोरिसि कहीइ तिहां घिकउ मासमासप्रतिइं बिउं बिउं
अंगुल वाधती बउइमासि जोईइ तउ पोसमासमां पूर्णिमाइं मकरसंक्रांति नइ पहलइ दिनि चि
उंपगपोरिसि कहीइ तिहां घिकउ मासप्रतिइं बिउं अंगुल खूटइ ती बउइमासि जोईइ तउ आसाढ
१ पूर्णिमाइ बली चिन्हइ डिपगपोरिसि चित्री अनइ आसोई पूर्णिमाइ बली बिन्हइ डिपग पोरिसि चे
त्री अनइ आसोई पूर्णिमाइं त्रिउं पोरिसिइं बमास चाधइ इसिउ लाव इवखोटइ थिनी निरति
आमजाणवी माते दिहाडे इ आंगुल उ खूटइ घा धइ पखवाडइ बि आंगुल मासिइं च्यारि
आंगुला इम रवोटइ वृद्धि जाणवी इम पोरिसि। नी निरति करवी पोरिसि पूर्विइं वउध
डाइं जाइ तउ दउढ पोरिसि साढपोरिसि कहइ हवे आगार बषाणीइं छइं पहिला बि आगार
आगइ बषाण्या पछन्नकालेणं कालि प्रछन्न कइ सूर्य आलि अथवा पर्वतइं अथवा रजिइं आ
ति रखउ कहइ तेणइं निरति न जाणीइं अणपूगी पोरिसिइं पूगी ना बुद्धिइं जिमवा बइसउ तिसिइं जा
वहउ घिउ जोउ अइ तउ अजी सवार पछइ मुहमाहिलउ कउल उराष माहि घालइ हाथ नउं जा
णइ मूकी तिम जि बइसी रहइ पूगी पूगिइ आघउ जिमइ तउ नत्ता जइ इम अनेथि इजाणवू उ दिसामो ५८
हेणं दिग्मोह पूर्वे दिसि पश्चिम सणी जाणइ तिवारइं अणपूगी पोरिसि जिमवा बइसउ दिग्मोह फी

टा पूठिइं पोरिसि उकचइ तांलगइ पाछिली परि आघि जिमइं जि हइ तउ नत्ताजइ साहुवयणेणं
साधु माहात्मा तणइं वचनिइं करी संतति पडइ माहात्मा पणि छहरिव घडी दासचडइ ति सिइ गुरु आ
गलि आवी बकउ पडिपन्नी पोरिसि कहइं पेलउ सोलइ ते सांभली नइ जाणइ पोरिसि पूगिइं जिमवा बइ
सइ जाण्या पूठिइं तिहांइ पाछिली परिइं जिरहिवउं सव्वसमाहिवत्ती आगारेणं पोरिसि कउ वरा
इ बइ अनइ ती व्रशूलादिक कउ पनउं अथवा साप वछिउं ताणइं तीव्र वेदना इ जी व आवात्तिइं
पडइ किवारइं अकस्मात मरण कइ तउ सर्व इंद्रीय नी समाधि इनइं काजि इं पथ्य कउष
धादिक लिइ तउ न साजइं समाधि हुया पूगि। इ वलीपाबली जिवि धिइ॥ आ ॥ हव पुरि
मह अंनइ अवढ सरिषां जि जाणिवां इहं इं सात आगार सूरे उगाए उ रिमहं अवढं पच्चा
रका मि तिविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणंय
छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तीआगारेणं वोसिरामि॥
व॥ पु रिमढ कहीइ दिहाडा नउ पहिलउ अर्द्ध विपहर जाणवा से हतिइं पूर्वार्द्ध कहीइ अ
वड्ढ कहीइ पाछिली पहिलि दणनां वेला त्रिलिपहर दोसना पूरा हुया इ पूगिइं अवढ उकचइ ए
हमाहिला बआगार आगइ बषाण्या बइ महत्तरागारेणं महत्तर कहीइ अति मोटउं काज जाण

इंस्कीधइं पञ्चखाणपाल्यांमांलातपाहिइं घणांउं भणइलातघणातंकर्मक्षयऊइ तिसिउं अने
गाल्हइं ॥ असाध्यग्लाननइं संघनइ देवनइ काजकांइ पडिउं हुइ तेहनइ आलंबनइं संघमु
ख्यादिकनइ वचनिइं अणहूगइ ऽऽ अधिक पारंतां भंगनही। पालिलइ नवकारसहि
अपोरिसि साढपोरिसिने पच्चखाण महत्तरागारनही। तेस्यानणी। तेहनी वेला थोडी। तेहभ
णी थोडी वेलामाहि महत्तरानइं वचनिइं पारवा। नही विशेषनही॥७॥१॥ ॥हवएगासणं
एकवार अन्नभोजनकीजइ तउ एकाशनक हाइ अथवा एकवीर आशन निश्चलप
णइं जिमवा बइसाइ तउ एकाशनइ मकहा इइमबिआसणं जाणवउं इहां इ आ
ठ आगार एकासणं बिआसणं पच्चखामि ऽबि हंपि आहारं असणं खाइमं ति विहंपि
आहारं असणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नथणा भोगेणं
सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअभुट्ठाणेणं पारिठावणियागारेणं
महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ती आगारेणं वोसिरामि ए पच्चखाणउ बिहार तिविहार चउ
व्विहार त्रिऊपरहोइ तेभणी त्रिणि पार अज्ञारनो देषाडो हव आगारबषाणीइ छइ तेहमांहि
पिहलाबे आगार आगइ वषाण्या सागारियागारेणं सागारितकहीइ ऽऽहनी दृष्टिइं जिमतां ५५

दोषऊइ महात्मानइ सागाकयहस्थ तेजिमवा बइठा छोइ याआविउ किमइ छो तउरहइ नइ
तउ अनेथि उठइ जिमतां दोषनही। तेह देषतां जिमइ तउ रहइ महादोष श्री सिद्धांतमांहि कहि
उछइ अनइ गृहस्थनइ ते सागारिक जेहनी दृष्टिइं जिमवउ जिरहइ नहीं तेहनी दृष्टिटालीजि
मइ अथवा सांपडसिवा धायइ बंदा धरवा आव्या पलेवणउ लागउं अकस्मात्याणीना रेलिआ
वी घर खडहडवा पडवा लागउं इत्यादिकिइं बोलण्ह आगारमांहि जाणवा। आउंटणपसार
णेणं हाथपगजंघादिकनउं संकोचिवउं ते आउंटण कहीइ अनइ जंघादिक लिंघां
वउं घातीइ ते पसारण कहीइ तेहइ कार तांकाइ आसण हालइ भणतिपच्चखा
णनभाजइ गुरुअभुट्ठाणेणं जिमयां बइठां ॥ अकस्मात् गुरु अथवा प्राघूर्णिक कोम्हुत्य
माहात्मा नवा आव्या तउ तेहनइ अवश्यकर्तव्य नणीइ अभ्युत्थान करतां नभाजइ पा
रिठावणी आगारेणं पारिठापनिकागार जेबिधिइं विहरवउं विधिइंमांडलिमांहि धावरिउं
इ करतां ति आहार विगइ प्रमुख ऊगरिउं परिठवि वा योग्य हुइ ते सुस्निग्ध आहार परिठवतां
जीवविराधनादिकघणां दोषऊइ तेहभणी गुरुनी अनुज्ञाइं आंबिलादिकना धणी कुइं कल्पइ
एवलइं इंमनही भणाते परिष्ठापनिकपहरउं बिंदुमात्र अन्न लिइ तउ एकलवाणं एकासणानी प

रिइं जिहां लगि वर्त्तं लेगउ इ । ए आगार माहिलां माहिं छ्इ संस्रव इं छ्इ णं श्रावक अखंडपाव तणी कराइं छ्इ
हली बे आगार आगइ बषांणी इ छइ । बोसिरामि एकवार स्तोजन टाली बीजुं तं सर्व बोसिरावउं छ्उं
॥ छ ॥ श्री ॥ हवइ एकलठाणुं एकासणानी परिइं जिहां लगि वर्त्तइ तिहां सात आगार अनइ पच्च
क्खाणि वज्रि आहार कउइ वच्चार एकासणां एकलठाणां पच्चक्खाण मिं वलं चिहं पि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं आंघा आगार तिम जिहां लगि ॥ वा एक आउंटण पसारेणं न कहीइ जे
हनुं णीइ एणइ पच्चक्खाणि एक मुख अनइ जिमणु ॥ इहाथि ए बिहुं हाल्या पाखइ सरइ नहीं
तेहनुं णी एबिटाली । बीजा आगार पाम एकइ । हली चालवा लाइं हवइ विगइ पच्चक्खा
ण । विकृति कहीइ कामादिक विकार मननइं । ऊपजावइ तेहनुं णी विकृति सर्वं नाम
विगइ दस कहीइं दूध दही मांखण घृत तेल मधु । मांस एक वान तेह माहि पांच दूध विगइ तां
कहीइं केहां केहां गाइ नउं महिषी नउं ऊंटणी नउं छाली नउं दूध एडकी नउं एपांच दूध विगइ
तां कहीइं ते विगय मांहि तेल च्यार विगइ तां तिल नउं तेलु अलसे लला टेल सारिसवेल बीजां सर्व
नां वा तां तेलु कारियां पुण विगइ जे पाछलां विगइ तां कस्यां तिहइ नी वीतां ऊइं गुल बिहुं तेदे एक ढी
लउ एक गाढउ मद्य बिहुं तेदे काष्ट नउं पाणां नउं मधु त्रिहुं तेदे मारकी नउं कूती नउं भमरी

नउं जलचर नउं स्थलचर नउं खचर पंखीयां नउं अथवा चर्म रुधिर मांस एत्रिसि दसमी विगइ
पकवान एकवार मीसरीइं तावडीइं अनेरउं घाणुं परिश्रण घाति इं जे त्रिणि घाणुं यां रखाडइ लाहि
कउं उतारीइ ते विगइ तां पछइ ते त्रिहुं पुहविहिं जि तलायाणू यान वइं घी अणघाति इं ऊतारीइ ते
पकवान सर्वेनो सीतउं गृहस्थ कइ कल्पइ माहामाहि कइंनी चीकी थइं ले पछइ न आवइ जेह कइं
कडा हि विगइ नउं नाम ऊपइ ते महामा विगइ मइ पा । च्चखाणि लिइ अनइ डइ उप कइ खाउ जल
इं तां नी पूराणी तउ बीजउ इ घाणू उं मांची तउ पा हावइ छुण प्रसंग दोष टालवा तणी
त्रिणि घाणु या पहिलां टालीइं जि एह दस हमा मधु मांस मद्य मांखण एच्यारि अल
क्ष्य विगइ बांजी छ सत्र छ तेह माहिलो एक बिइ मोक ली मूंकी बीजी पच्चक्खइ निषेधइ ते
विगइ पच्चक्खाण जउ छ इं विगइ नउं पच्चक्खाण करइ ते निवी पच्चक्खाण कहीइ विगइ पच्चक्खा
णमाहि पहइ आचिउं जाण वउं पण इ आगार आव अथवा नव कइं उत्क्षिप्त किम विगइं अप च्च
क्खामि निविगइं अपच्चक्खामि अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खि
त्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसि
रामि ॥ छ ॥ पहिला बि आगार आगइ बषांण्या छइं लेवालेवेणं जे विगइ पच्चक्खी इ छइ तोणइं करीसा

जनादिक खरडिउं हुतउं। तेहनणी लगार लेपतेह जेह स्ताद्दिक इंगाढउं लूहिउं तेह विगइनउ अवयव दीसता लगार हुई नथी। तेह भणी अलेपता गाई तांजवइं करी परीसइ। तउ कोई कई अलेपते हनणी लेपालेप कहीइ। तिम पच्चख्खाणम न लाजइ। गिहच्छ संसहेणं गृहस्थइं आपणा काजइ। उदन दूधिइं अथवा दही करी आल्युं हुइ। तिहां जे धानऊपरि च्यारि आंगुलां वाधि दूध दही हुइ तेनी वातां कल्पइ। पुण पांचमउं आंगुलं आरंभाणउं तउ नइ जिमा।इ अगुड अने इ घृत तिल तेल ऊपरि एक आंगुलउं चड्यां हुइ तेतलइं नीवी तां पुण जउ बीजउं न कल्पइ। ढीलउ गुड अनइ घृत तेल ऊपरि एक आंगुलइं चड्यां। तेतलइं नीवी तां पुणि जउ बीजउं आंगुलउं आरंभाणउं। तउ विगइ गाढउ गुड। अनइ मांखण जउ वीलू मात्र डेवडा कटका कीधा हुइ। तउ ते का घणा। नीवी तां सूझइं पुण एकइं खंड मोटउ मसूरइ मंडो। गृहस्थिइं संसृष्ट कीधउं हुइ। तेनी वातां पच्चख्खाण सूझइ। अनइ कणाक वलम वानेतएहा घ मां तलां चोपडी कीधा मंडकादिक हुइ। ते गृहस्थ संसृष्ट आंबिलतां इं कल्पइ। एउ आगार प्रासिइं माहा त्माइं ज हुइं। उखिक्त विवेगेणं गाढी विगइ गुडपकान्नादिक पोली ऊपरि मूकी हुंती वली ऊपाडी परही कीधी। तेपोलीना वीतां आंबिलतांइं कल्पइ। अनइ जे ढीली विगइ हुइ ते पोलीं वकउ निटोल हुई नकरा इं तेम लाअवयव विलगा रहइं जितिहा एक आगार नहा उखिक्त विवेगेणं न कहाइं। तहइ भणी आंबिल आगार अथवा नवआगार हुम कहिवउं पडुच्चमक्खिएणं सर्वथा लूद्ध मंडकादिक सूंआलिक ऊपजावा निइं काजिइं लगारेक चोपडिउं ईहइं हुइ सीरी तिहां आंगुली इसिउं चोपडिउं हुइ। तिलइं तुई पोली। प्रमुख आंबिलां तां न कल्पइ। पुण जे धार इं घी नामी चोपडिउं हुइ तेनीवीतांइं न कल्पइं। पारिट्ठावणी आगारेणं जे विगइ पच्चखाण हुइ जे तेह ऊपरि शिष्य हुइ गुरुनी अनुज्ञाइं लेवी कल्पइं हवइ।। सनीचातां नउ विचार कहीइ छइ। दूध दही घी तेल गुड पकान्न इ छ इं विगइनां पांच। नीचातां हुइं। एव इस पहिलउं दूधनां। पयः शाटी जे द्राक्षा सहित रांधिउं दूध घणां तांदुल सहित रांधिउं दूध तेरवा रि अल्प दूध सहित रांधिउं पेयाउ त दूलन इ चूर्ण सहित दूध। रांधिउं ते अवलेहीइ आटा सहित घि तेरडिउं दूध ते दुग्धाटीय केतला इं एहनइं पान कि चलही कहइं। ए पांच दूधनां निवीतां ॥५॥ हवइ पांच दहीनां करंबउ दही अनइ कूर दनमेली कीधउ। शिखरिणी हाथि इं मथिउं खांड सहित जे दही। एघ लूण कणसहित दहीम थिउं। राइखा टइ हुइ। सिउ अधि घोल लूगड इं गलिउ दही। घोडवडां कांजी तेह दही जेमा हिवडां घालियां हुंता। ए पांच दहीनां नीवीतां ॥६॥ हवइ घी

DR. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी स्मारक
DR. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी स्मारक

नां पांच ॥ निव्विगइएणं पच्चक्खानं जेहमाहि ते लीजइ ते बोलीजइ घी विस्पंदन दही नी तरी अनइ कढाण
का मली नइ कांई वस्तु करइ छइ तेवी संदरण कहीइ एम चाषदेसि प्रसिद्ध छि सिजइ तेषधइ तिइ
पविजइ छइ तेहनी कपली तरी नइ घारइय तेनी कांटी घाण आपूवि इ वासी धइ तउन्हा वाती क्रमध
ध करी अपनी ओघी आमलानउं सर सबनउं इत्यादिक ५ एपांच घीमां नीवातां ॥ उहिव पांच तेलमां
निव्विगइएणं जेहमाहि पच्चक्खान तलिजइ ते दाधउं तेलति लक्कहिमाहि जउव गुडादिक द्रव्य द्रव्य
नाखउं छइ तउ त्रवासी घापूवि इं नी वातुं ॥ २ तला क्कादिक द्रव्ये करी पविजइ तेल लोषल
प्रमुखनइ ते लिइं पच्चांक्रम धनो कपिली तरी ४ अनइ तेलनी साए पांचमा नीवीतां तेल
नां ॥ ५ एपांच नावीतां तेलमां ५ हव पांच गुडनां साक रगुवाणी कौकालिउं गुडनी या ॥ तेठी
णइं षांडला दिकली धीइ खांड काकव अधकाढ । जेइक्षुरस एपांच गुडनी हव पांच पक्का
ननां नीवातां कहिइ छइ घालरी तावीए कडइ जिपूडइ सघली इ पूराणी तिहां जिजिपछइ पूडला
कीजइ ते सबेनां नीवातां नवइं घीइं अणघात्तिइ जितावाइ त्रिणंघाणु आकपहर तउं जे पक
यानका थउं तेस वेनी वीतउं गुडधाणीउ कडाही इमुंहा ली पहिलउं करी पछइ तीणइ नि
घी खीरडी कडाहीइ जेपाणी सिजइ सीधी लापसी लहिमट उ इत्यर्थः तेनी वीतउं घावरड १०२

इं तावीइं पचिवइ जेपोतइं कीधउं पूडलउ एपांच पकवाननां एवं ३० नीवीतां कहीइ एवं ॥
श्री ॥ नीवीतां अनइ पाबिला गुडनइ प्रमाणेइं कस्याच्छ इति संसृष्ट द्रव्य अनइ साकरनां ख
रडिया वरसोला कोरला पाक दमीदउ अदरक प्रमुखनउं नाम द्रव्य जिचारइं मोटउं चो
तपच्छइ अनइ हेछिबलादिक उष्णं घातिउं जाणइ तिचारइं मोटइं कारणे जि गुरुनी
अनुज्ञाइ लेव उसहा डिहिं नहीं नीवीतइं पा खकाणि मूलउ विहार न करउं ॥ ५ हव आं
बिल आयाम कहीइ अनसामणा अम्लक हीइं खाटउं कां जिक ते हा जि जिहां घी
नइ स्वानकि छइ तेहतणी आचाम्लना मइणइं पचखाणइ मूलि आहारउ
दन कोमासस साइ आदिक नउं करवउं इह इआव आगार न वहमांहि पुडुवम खि
एणं एटालीइ छइ आयंबिलं पचक्खामि ॥ ७ ॥ । अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवा
लेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमा
हिवत्तीयागारेणं वोसिरामि ॥ ७ ॥ एहमाहि सातहंनउ अर्थ पाबिलासारिषउ जि गिहत्थसंस
णं एहनउ अर्थ विशेष छइ तेवषाणीइ छइ गिहस्थउ वहाथ घाली आदिक बिगइं खरडिउ

इतेणाइं करी दिइ। तउ ते जिमतो। आंबिलनतां जइ। वोसिरामि। आंबिलानो टालीवा जइ सहुवोसि
वतं बउतं। आंबिलानाइं इ बिहारनउ कइ॥६॥ हव उपवास अलक्षार्थे इणाइं कहइ। तत्किलाबिइं
अर्थे कहीइ। काजकांइ नहीं। तेहलणी लक्षार्थे नाम पर्कृतिइं अनत्थ इणाइं पाठ आगार सूर
उगए अभत्तट्ठं पच्चक्खामि। तिविहं आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं।
असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागा रेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागा
रेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरामि॥७॥ ।पारिट्ठावणिआगारेणा जउ तिविह
रउपवास कइ तउ परिष्ठाप्य आहार गुरुनी अनुज्ञाइं लेवा आवइं। अणाहार
विहार उपवास कइ तउ लेवा न आवइ। जेह लगी मुखि शुद्धि करवा लेवाइं न मूंच
इं पाणी मोकलउं नथी। इम करतां उपाणीइं परि ष्ठाप्य कइ तउ वली तेह कहइं सूजइ वो
सिरामि॥८॥ पाणसघलउं इ छांडतं बतं एसविहं तिविहार पच्चक्खाणे पाणीना आगार कहइं।
पाणस्स लेवेणवा अलेवेणवा अछेणवा बहुलेणवा बहलडहलउं तंदुलधोअण ससिछेण
वा असछेणवा वोसिरामि लेवेणवा जीणइं करी साजनादिक खरडाइं तेखजूरादिक नउं पा २०२
णी पहूतं कहीइ अलेवेणवा श्री॥ ॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥

अलेप पाणी कांजिकी प्रमुख अछेणवा। अछ निर्मल ककाल्यां पाणी प्रमुख बकुलेणवा बहल
डहलउं तंदुलधोअण प्रमुख ससिछेण सीघ सहित तउसामणादिक असिछेणवा सीघरहित
पाणी। एएतलां पाणी टाली अनेरउ त्रिविध आहार असनखादिम स्वादिम पच्चक्खाउं छउं ७
हव चरम पच्चक्खाण चरम बिहुं भेदे। एक दिवसचरिमं तेहनो जां लगइ न वउ सूर्य नगइ नहीं
तां लगइ अविध बीजउं। तव चरिमं ते जां जीवइ तां सीम। एणइं च्यारि आगार दिवसचरिमं प
च्चक्खाइ। चउव्विहं तिविहं पि चउव्विहं पि आहारं अ सणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोग
णं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरामि। आगार च्या
रि आगइ बषाण्या। ए दिवसचरिमं म्हालि थोडइ सि इ दिवस बतइ कीजइ तउ घणां फल
जे निरागार तव चरिमं करइ तीणइं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं ए बि आगार कहइं।
जि इम्हइं अनाभोगइं। अथवा सहसात्कारिइं आंगुली इमात्र इ मुखि घालइ। तउ तव चरिमं ताउ
३ा० हव अभिग्रह मउं प्रत्याख्यान। ए संकेत प्रत्याख्यान कहीइ। ईणइं च्यारि आगार देसावगा
सिअं उवभोगपरिभोगं पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि
वत्तिआगारेणं वोसिरामि॥८॥ ए उच्चार अंगीविस हिअं मूंमिस हिअं प्रमुख सविकं संकेत पच्चक्का

णो आणिवउं। पच्चक्खाण करतउ जे चऊद नीम। प्रतातिलीधा छइं ते प्रत्येकिइं यथाशक्ति
इं संक्षेपी तउ पछइ करइ। देसावगासी अं जे चार व्रत नामो कलानी म छइ। ते संक्षेपी घोडा स्य
। माहि आणउ॥ अनइ अपसोम कहीइ जे एवार त्तोगवइ। द्रव्य सचित्त विगइ पुष्फ चंदना
ऊ दिक परित्तोगवली तोगवाइ। आत्तरण वस्त्र स्त्री प्रमुख तेहइं पच्चक्खउं छउं निटोल निषेधउं
छउं॥ अथवा एहनउ परिमाण करउं छउं। अप्राय … रण प्रत्याख्यानि बोल पहिला गारिणं एवल
पाच मउ आगार कहइ ॥१०॥ हव एह सप्रकार पच्च। … क्खाण छ प्रकारि पालिउं कहइ तउ सुं
धउं फासिअं पालिअं चेव सोहिअं तीरिअं तहा … ध किट्टिअं पमाराहिअं दीवकछ जइ
कियारिसं मिउ। एहनउ अर्थ फासिअं पहितां ला … भंतां पच्चक्खाण फासिअं विधिपूर्व
क निरती वेलाइं कीधउं पालिअं वलीश उपयोगनी। … इं देववइं करी पडिजागउं सोहिअं सो
धिउं गुरु कहइं पहिलउं देई पछइ शेष आरानइ जिमवइं करी तीरिअं वेला पूर्ण हुइ इंथोडी
सी वेला पडखवइं करी तीरिलीधउं किट्टिअं तोजननइ कालि अमुक उं मारइ पच्चक्खाण
छइ इसि परिकीर्त्तइं उं५ आराहीअं एस विरुं प्रकारे आराधिउं छ जइ जउ ७ एको पच्चक्खाण
नइ विषइ विवेक कीइं यतनउ धर्म स्वपकरवी ऊहलणी सूधा धर्मनउ अद्यम जीवइं कइं मो १०५

द्ध फल दाई उथाइ ॥ छ ॥ प्रत्याख्यान बालावबोध ॥ छ ॥ चउथउ अधिकार संपूर्ण हूउ ॥ छ ॥
श्री आवश्यक षडावश्यक बालावबोधः ॥ छ ॥ एह माहि च्यारि अधिकार ॥ छ ॥ पहिल
उ अधिकार देववंदन १ बीजउ गुरुवंदन २ त्रीजउ पडिकमणउ ३ चउथउ पच्चक्खाण
४ ॥ ॥ समाप्तं ॥ संवत् १५५५ वर्षे भाद्रवमासे शुक्लपक्षे १२ गुरुवासरे । लिषितं गा० कायस्थ

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

202

first folio lost

DR. BHAU DAJI